

सत्यमेव जयते



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संधान

राजभाषा हिन्दी को समर्पित पत्रिका
द्वितीय अंक (जुलाई-दिसम्बर 2019)



“ऑडिट भवन” लखनऊ स्थित भारतीय लेखापरीक्षा एवं
लेखा विभाग के कार्यालयों का संयुक्त प्रयास

“ऑडिट भवन” परिसर लखनऊ
स्थित कार्यालयों से सम्बद्ध शाखा कार्यालय



ऑडिट भवन,
लखनऊ



कार्यालय प्रधान महालेखाकार
झारखण्ड, राँची



सत्यनिष्ठा भवन
कार्यालय प्रधान महालेखाकार, प्रयागराज



कार्यालय महालेखाकार
बिहार, पटना

संधान परिवार

प्रकाशन

विभागीय राजभाषा हिन्दी पत्रिका
'संधान' (अर्धवार्षिक)

प्रकाशक

कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ

अंक

द्वितीय अंक
(जुलाई-दिसम्बर, 2019)

मूल्य

राजभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठा
एवं सम्मान

मुख्य संरक्षक (पदेन - वरिष्ठता के आधार पर)

श्री जयंत सिन्हा, प्रधान महालेखाकार,
(आर्थिक एवं राजस्व लेखापरीक्षा) उत्तर प्रदेश, लखनऊ

संरक्षक

श्री राजकुमार, प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
लखनऊ

प्रधान संपादक (पदेन - निदेशक, प्रशासन, लखनऊ)

श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव,
निदेशक, प्रशासन/अप्रत्यक्ष कर,
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
लखनऊ

कार्यकारी संपादक

श्री शैलेंद्र कुमार शर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

श्री अतुलेश रंजन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती लीना दरियाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री कैलाश नाथ मिश्रा, वरिष्ठ लेखाकार

संधान का अर्थ - “लक्ष्य भेदन हेतु धनुष पर बाण चढ़ाना” अथवा “लक्ष्य भेदन हेतु निशाना लगाना” है विभागीय पत्रिका का ये नाम हमारे विभाग के मुख्य कर्तव्य/लक्ष्य/उद्देश्य अर्थात् किसी तंत्र (System) की कमियों का अनुसंधान करना/उनको इंगित करना, के अनुरूप भी है। इसी विचार के साथ सम्पादक मण्डल ने पत्रिका हेतु इस नाम पर अपनी सहमति प्रदान की।

आवरण चित्र - विभूतिखंड, गोमतीनगर स्थित “ऑडिट भवन” लखनऊ

मुद्रक: ए.पी.पी. प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ, फोन: 0522-2481164, 8604565333, ईमेल: armyprintingpress@gmail.com

“ऑडिट भवन” लखनऊ स्थित कार्यालयों का विवरण

कार्यालय	अधीनस्थ शाखा कार्यालय	कार्य-क्षेत्र
प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ	अप्रत्यक्ष कर शाखा कार्यालय, लखनऊ	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय सरकार) की लेखापरीक्षा
	प्रत्यक्ष कर शाखा कार्यालय, प्रयागराज	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) की लेखापरीक्षा
	केंद्रीय व्यय शाखा कार्यालय, प्रयागराज	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा
	शाखा कार्यालय, पटना (बिहार)	बिहार राज्य में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय कार्यालय), प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) एवं केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा
	शाखा कार्यालय, राँची (झारखंड)	झारखंड राज्य में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय कार्यालय), प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) एवं केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा
प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व लेखापरीक्षा) उत्तर प्रदेश, लखनऊ	लखनऊ मुख्यालय	उत्तर प्रदेश सरकार के कंपनी एवं निगमों, शहरी व औद्योगिक विकास प्राधिकरणों की लेखापरीक्षा
	राजस्व लेखापरीक्षा शाखा- प्रयागराज	उत्तर प्रदेश सरकार की राजस्व प्राप्तियों की लेखापरीक्षा
निदेशक, डाक एवं दूरसंचार लेखापरीक्षा, लखनऊ (शाखा कार्यालय)	इसका मुख्य कार्यालय महानिदेशक, डाक एवं दूरसंचार लेखापरीक्षा, नई दिल्ली है	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में स्थित डाक एवं दूरसंचार विभाग के राजस्व एवं प्राप्तियों की लेखापरीक्षा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) II, लखनऊ (शाखा कार्यालय)	इसका मुख्य कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) II, प्रयागराज है	लेखा निर्माण के लेखों का संकलन और विशेष मुद्रा प्राधिकार-पत्र को निर्गत करने का एवं सम्बन्धित कार्य

अस्वीकरण (Disclaimer)

इस अंक में लेखकों/रचनाकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं। संपादक मण्डल का उनसे सहमत होना या असहमत होना आवश्यक नहीं है। विचारों एवं लेखन की मौलिकता संबंधी जिम्मेदारी स्वयं रचनाकार की है। रचना/आलेखों के सम्पादन एवं प्रकाशन संबंधी सर्वाधिकार सम्पादक मण्डल में निहित होंगे।

अनुक्रमणिका

शीर्षक

रचनाकार/लेखक (श्री/सुश्री)

पृष्ठ संख्या

- गुरु वन्दना
- शुभकामना संदेश

मंदिर में मस्जिद बनती है, मस्जिद में ब्रह्मा रहता है

सुशील कुमार श्रीवास्तव

1

कार्मिक अभिप्रेरण- एक चुनौतीपूर्ण दायित्व

बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी

2

पुराना वृक्ष/अपनी जड़ें

संजय सक्सेना

3

अच्छा हुआ हम आजाद हुए

रवि श्रीवास्तव

4

एक दिन दीवाले का

गोपाल चतुर्वेदी

5

एक कोशिश.....

लीना दरियाल

7

मत उलझ जाना

सुशील कुमार श्रीवास्तव

7

लेखापरीक्षा-चुनौतियाँ एवं संभावनाएं

चन्द्रजीत यादव

8

डरे हुए आदमी

शैलेन्द्र कुमार शर्मा

9

एक लड़की दही

यश मालवीय

9

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में नारी की सहभागिता

दीपक वर्मा

10

भारतीय नारी

सुमन केसरी

11

कौन है?

अखिलेश कुमार

12

श्याम-अनुराग

दीपिका पांडे

12

जस्टिस- एक अधूरी कथा

शैलेन्द्र कुमार शर्मा

13

हिन्दी दिवस का इतिहास एवं वर्तमान स्थिति

डी.पी. श्रीवास्तव

14

रविवार को ही क्यों होता है छुट्टी का दिन..?

डी.पी. श्रीवास्तव

14

हिन्दी का निर्मल गुणगान

बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी

15

आह्वान

शालिनी रानी सिंह

15

बेमिसाल शिक्षा सेनानी साइकिल गुरु: आदित्य

शैलेन्द्र कुमार शर्मा

16

मृदुलता

मानसी रंजन सुपुत्री अतुलेश रंजन

18

कर्मबोध

दीपक कुमार तिवारी

18

छठ महापर्व: त्याग एवं तपस्या का अद्भुत समागम

अभिषेक कुमार

19

पर्यावरण संरक्षण

रवि सिंह

20

मुड़ों प्रकृति की ओर	दिव्या सुपुत्री - श्री हरि ओम शिव	21
ममता को सलाम	राम औतार प्रसाद	22
संस्मरण - रेलगाड़ी का वो सफर	लीना दरियाल	23
मेरा जीवन	रमाकान्त	24
जीवन नहीं है आसान	राजेश कुमार-I	24
छोटी-छोटी खुशियाँ	विनय कुमार दीक्षित	24
खुशामद कहे या राजभक्ति?	विमल नयन धूसिया	25
यादें/एक बार फिर से जी लें	धीरेन्द्र किशोर	26
आखिर क्यों?	मनीषा किरण	27
एक पथिक	अर्शिका वर्मा सुपुत्री-श्रीमती रचना वर्मा	27
लखनऊ : शहर वही स्वरूप नया	अभिषेक कुमार	28
ये लखनऊ की सरजमीं	राम जनम राय	28
पूतरेकु- आन्ध्र की एक स्वादिष्ट मिठाई	ई.ए.पी.एस. शास्त्री	29
कुकुर महिमा	आभा पांडे	30
आज सब खुश हैं	सुनील कुमार पाण्डेय	31
साइबर सुरक्षा	नितनेम सिंह सोडी पुत्र श्री जे.एस. सोडी	32
• आपका आशीर्वाद/प्रतिक्रिया		33-35
• “ऑडिट भवन” लखनऊ स्थित कार्यालयों के (जुलाई-दिसम्बर 2019) कार्यकलाप		36-39

सुझाव/प्रतिक्रिया आमंत्रण

ये हमारे लिए हर्ष का विषय है कि “संधान” का द्वितीय अंक आपके हाथों में है। इसी क्रम में आप सभी सुधी पाठकों से अनुरोध है कि इस अंक के बारे में अपनी मूल्यवान प्रतिक्रिया एवं सुझाव अवश्य भेजें। आपकी प्रतिक्रिया एवं सुझाव हमारे लिए अति महत्वपूर्ण हैं जो इस पत्रिका को और अधिक रुचिकर एवं जानकारी पूर्ण बनाने में सहयोगी सिद्ध होंगे।

पता : वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन), कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ, तृतीय तल, ‘ऑडिट भवन’, टी.सी.-35-वी-1, विभूतिखण्ड, गौमतीनगर, लखनऊ-226010

ई-मेल: sao-admn.luk.cca@cag.gov.in

सूचना: संधान परिवार के सभी सुधी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आगामी अंक से हम भारत के महापुरुषों/संतों एवं उनकी शिक्षा पर आधारित एक शृंखला, जो समाज में समरसता, सौहार्द एवं प्रेम को बढ़ावा दें, प्रारंभ करने जा रहे हैं। आप सभी से अनुरोध है कि इस संदर्भ में आप अपने लेख/रचनाएं भेजें।

गुरु वन्दना

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

भावार्थ :

गुरु ब्रह्मा हैं, गुरु विष्णु हैं, गुरु ही शंकर हैं; गुरु ही साक्षात् परब्रह्म हैं; उन सद्गुरु को प्रणाम ।

धर्मज्ञो धर्मकर्ता च सदा धर्मपरायणः ।
तत्त्वेभ्यः सर्वशास्त्राथदिशको गुरुरुच्यते ॥

भावार्थ :

धर्म को जानने वाले, धर्मानुसार आचरण करने वाले, धर्मपरायण और सब शास्त्रों में से तत्त्वों का आदेश करने वाले गुरु कहे जाते हैं ।

निवर्तयत्यन्यजनं प्रमादतः स्वयं च निष्पापपथे प्रवर्तते ।
गुणाति तत्त्वं हितमिच्छुरंगिनाम् शिवार्थिनां यः स गुरु निर्गद्यते ॥

भावार्थ :

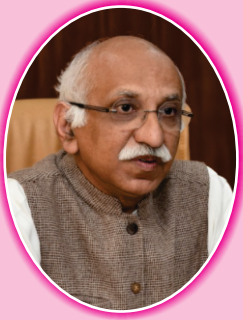
जो दूसरों को प्रमाद करने से रोकते हैं, स्वयं निष्पाप रास्ते से चलते हैं, हित और कल्याण की कामना रखने वाले को तत्त्वबोध करते हैं, उन्हें गुरु कहते हैं ।





सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(आर्थिक एवं राजस्व लेखापरीक्षा)
उत्तर प्रदेश, लखनऊ



जयंत सिन्हा

प्रधान महालेखाकार
(आर्थिक एवं
राजस्व लेखापरीक्षा)
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

मुख्य संरक्षक के आशीर्वचन

ऑडिट भवन लखनऊ स्थित कार्यालयों एवं शाखा कार्यालयों के संयुक्त प्रयास से राजभाषा हिंदी की विभागीय पत्रिका 'संधान' के द्वितीय अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कार्यालयीन हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग की निरन्तर प्रगति में सहायक एवं उत्प्रेरक होगी। यह पत्रिका कार्मिकों की सृजनशीलता और रचनात्मकता से जुड़े विभिन्न आयामों को एक सशक्त मंच प्रदान करती है। राजभाषा हिंदी में काम करना हमारा संवैधानिक दायित्व तो है ही साथ ही साथ यह हमारी अस्मिता और अभिव्यक्ति को संपोषित करने का भी सशक्त माध्यम है।

इन सतत् प्रयासों के समेकित परिणाम से ही राजभाषा का चतुर्विध प्रसार सम्भव हो सकता है। आशा करता हूँ कि हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिका 'संधान' महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

इस पत्रिका को मूर्त रूप देने में योगदान करने वाले सम्पादक मंडल, सुधी पाठकों एवं रचनाकारों को मेरी शुभकामनाएँ।

J. Singh

(जयंत सिन्हा)

प्रधान महालेखाकार
मुख्य संरक्षक संधान पत्रिका



सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
लखनऊ



राज कुमार

प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
लखनऊ

संरक्षक कै आशीर्वचन

विभागीय राजभाषा हिन्दी पत्रिका 'संधान' के द्वितीय अंक का प्रकाशन मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है। हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के साथ 'संधान' पत्रिका अधिकारियों/कर्मचारियों की रचनात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के साथ-साथ अपने अनुभव, मनोभाव एवं विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है।

मुझे विश्वास है कि 'संधान' पत्रिका के माध्यम से अधिकारियों/कर्मचारियों को न केवल अपनी प्रतिभा निखारने का अवसर प्राप्त होगा अपितु उन्हें हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने की प्रेरणा भी मिलेगी।

मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका इसी तरह अपने पथ पर अग्रसर होती रहेगी। पत्रिका के सफल एवं निरंतर प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल व रचनाकारों/लेखकों का हार्दिक अभिनंदन व शुभकामनाएँ।

राज कुमार

(राज कुमार)
प्रधान निदेशक
संरक्षक संधान पत्रिका



शैलेन्द्र कुमार शर्मा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ

संपादक की कलम से..



हर्ष का विषय है कि राजभाषा हिन्दी पत्रिका 'संधान' अपने दूसरे सोपान पर है। पत्रिका के प्रथम अंक को मिली सराहना ने सम्पादन सम्बन्धी आगामी चुनौतियों को और बढ़ा दिया है, लेकिन हिन्दी प्रेमी के रूप में, मैं इसे एक अवसर के रूप में लेता हूँ। वस्तुतः एक हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन के लिए लेखन में रुचि और हिन्दी प्रेमी होना ही पर्याप्त नहीं है। पत्रिका के सम्पादन का ये मेरा पहला अनुभव है जिसने सम्पादन एवं प्रकाशन के बीच की तकनीकी सीमाओं और सुविधाओं, दोनों से परिचय कराया। एक उत्तर भारतीय होने के नाते, जहाँ अधिकाँश लोगों की मातृभाषा हिन्दी ही है, मेरे लिए ये हिन्दी सेवा का एक अवसर है जिसे मैंने पूरी श्रद्धा के साथ पूरा करने का प्रयत्न किया है। जहाँ तक 'संधान' को मूर्तरूप देने की बात है तो यह हमारे आदरणीय प्रधान निदेशक श्री राजकुमार जी का जिक्र किये बिना पूर्ण नहीं हो सकती है, जो इस पत्रिका को प्रारम्भ करने के प्रेरणा-स्रोत रहे हैं।

संधान परिवार के सभी विद्वजनों से अनुरोध है कि 'संधान' रूपी हिन्दी यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप सब, लेख एवं रचनारूपी हवि देने में सहयोग करें और अपने कार्यालयीन और दैनिक जीवन में, न केवल हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करें, बल्कि उसका यथेष्ट सम्मान भी करें। अंत में, आप सभी को नववर्ष 2020 की शुभकामनाएं।

जय हिंद, जय हिंदी।

(शैलेन्द्र कुमार शर्मा)

कार्यकारी संपादक

मंदिर में मस्जिद बनती है, मस्जिद में ब्रह्मा रहता है



सुशील कुमार श्रीवास्तव

निदेशक अप्रत्यक्षकर/प्रशासन

कार्या-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

आँख खोलो, अपने को देखो, आँख खोलो, अपने को पहचानो। तुम्हारी पहचान ही तुम्हारे लिये द्वार बनेगी परमात्मा का। कोई और सहारा नहीं है, कोई और सम्बल नहीं है। कोई और अवलम्बन नहीं है।

कौन हमारा दर्द बताये, कौन हमारा थामे हाथ, उनके नगर में जगमग-जगमग, अपने देश में रात ही रात। नीले-नीले अंबर पर वो चाँद, वो किरणों की बरसात, हम दोनों खोये-खोये से, हाथ वो मस्त मनोहर रात।

तू गुलशन-गुलशन इठलाये, मैं सहारा-सहारा भटकूँ, दिल का यह सौदा है, वरना तेरा मेरा क्या है साथ। सब दुनियादारी की बातें दिल पर और, जुबां पर और, तुझसे प्यार बढ़ा कर आखिर जान गये तेरी औकात। चाहे अब इनको अपनाओ, चाहे नाज से ठुकराओ, आज से अपना दखल नहीं है, दिल की डोर तुम्हारे हाथ।

दुनिया की मंशा है प्यारे, हम घुट-घुट कर मर जाएँ, दिल की धड़कन ये कहती है, इक दिन बदलेगें हालात। एक अनोखी लय ने कैसे सबके दिल पिघलाये हैं, दुनिया को ये वहम कि मेरे होंठों पर है अपनी बात। चाहे अब इसको अपनाओ, चाहे नाज से ठुकराओ, आज से अपना दखल नहीं है, दिल की डोर तुम्हारे हाथ।

जिस दिन कह सकोगे परमात्मा को कि अब सब छोड़ता तुम्हारे हाथ में, यह दिल की डोर तुम्हारे हाथ में सौपता हूँ, अब जैसी तुम्हारी मर्जी, अब जो करना हो करो, बनाना हो बनाओ, मिटाना हो मिटाओ। न मेरी तरफ से इशारा है, न मेरी तरफ से कोई आकांक्षा है, जिस दिन तुम ऐसी सरलता में छोड़ सकोगे, उस दिन कीमत चुकाने को तैयार हुए। फिर जिंदगी बदलती है कुछ नया रंग लेती है, नया ढंग लेती है, नई गंध लेती है।

माथे पर टीका संदल का, अब दिल के कारण रहता है। मंदिर में मस्जिद बनती है, मस्जिद में ब्रह्मा रहता है जर्रे में सूरज और सूरज में जर्रा रोशन रहता है,

संधान, द्वितीय अंक, (जुलाई-दिसम्बर, 2019)

अब मन में साजन रहते हैं और साजन में मन रहता है। माथे पर टीका संदल का, अब दिल में कारण रहता है। एक टीका है बाहर से लगाया गया, उसका कोई मूल्य नहीं। और एक है भीतर की गंध, भीतर की संदल से लगा हुआ टीका, उसका मूल्य है। मंदिर में मस्जिद बनती है, मस्जिद में ब्रह्मा रहता है क्रांति हो जाती है।

मंदिर में मस्जिद बन जाती है, मस्जिद में मंदिर बन जाता है। फिर मंदिर-मस्जिद के भेद मिट जाते हैं। क्योंकि वही एक है वासी सब जगह वही निवास कर रहा है सब जगह।

दिल तोड़ के जाने वाले सुन, दो और भी रिश्ते बाकी हैं, इक साँस की डोरी अटकी है, इक प्रेम का बंधन रहता है। जब सब टूट जाता है तब भी, दिल तोड़ के जाने वाले सुन, दो और भी रिश्ते बाकी हैं। इक साँस की डोरी अटकी है, इक प्रेम का बंधन रहता है।

जिन्होंने अपने को समर्पित किया, उन्हें दो चीजों का पता चलता है, एक अस्तित्व की डोर, साँस की डोर। वह तो टूट नहीं सकती। हम शाश्वत हैं, हम शाश्वत के अंग हैं।

हम सदा से हैं और सदा रहेंगे। हम नहीं हैं अहंकार। पानी का बबूला है, अहंकार बनता है मिटता है, हम नहीं। न हम बनते, न हम मिटते। और दूसरी हमारे अस्तित्व में उठती हुई प्रेम की सुगंध है, वह सदा रहती है।

साभार-ओशो



बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्या-प्र.म.ले.(आ.एवं रा.ले.प.) उ.प्र., लखनऊ

कार्मिक अभिप्रेरण- एक चुनौतीपूर्ण दायित्व

अभिप्रेरण एक महत्वपूर्ण प्रबंधकीय तकनीक एवं कौशल है। इसके माध्यम से किसी संगठन के लक्ष्यों की प्राप्ति में कार्मिकों से रुचिपूर्वक, सर्वोत्तम योगदान प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए कार्मिकों के उत्साह को जागृत करना एवं उसे निरंतर प्राणवायु प्रदान करना अति आवश्यक है। इस सम्बन्ध में क्लेरेंस फ्रांसिस का कहना है कि आप किसी व्यक्ति का समय खरीद सकते हैं, किसी स्थान पर उसकी शारीरिक उपस्थिति खरीद सकते हैं, यहाँ तक कि, आप उस व्यक्ति की प्रति घंटे निर्धारित कुशल स्नायु गति भी खरीद सकते हैं। किन्तु आप किसी व्यक्ति का उत्साह, उसकी निष्ठा तथा दिल, मन एवं आत्मा से उत्पन्न लगाव नहीं खरीद सकते। यह उत्साह, निष्ठा और लगाव आपको उस व्यक्ति के अन्दर उत्पन्न करना होगा।

इससे स्पष्ट है कि कार्य के बदले किसी कार्मिक को मिलने वाले केवल मौद्रिक प्रतिफल यथा वेतन एवं अन्य सेवाकालीन लाभ उसको प्रेरित करने हेतु पर्याप्त नहीं होते हैं। इसका कारण यह है कि संगठन में लगे हुए कार्मिक विविध मूल्यों, विश्वासों, अभिरुचियों, दृष्टिकोणों एवं पृष्ठभूमियों से सम्बंधित होते हैं। अतः किसी संगठन का नेतृत्व करने वाले प्रबंधन का यह चुनौतीपूर्ण दायित्व होता है कि वह किस तरह से कार्य के प्रति, कार्मिकों की अरुचि एवं अनिच्छा को प्रबल रुचि, उत्साह एवं स्वेच्छा में, न केवल परिवर्तित कर सकता है अपितु उसे निरंतर बनाये रख सकता है। यह माना जाता है कि किसी अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति हेतु किये गए प्रयत्नों में अन्य कारकों के अलावा, 60 प्रतिशत योगदान केवल और केवल अभिप्रेरण का होता है। संगठन में लगे हुए कार्मिकों में से बहुत ही कम कार्मिक ऐसे होते हैं जो अपने नैतिक एवं चारित्रिक बल के कारण स्वतः प्रेरित (सेल्फ-मोटीवेटेड) होते हैं। जबकि संगठन के अधिकांश कार्मिकों को सर्वोत्तम निष्पादन प्राप्त करने हेतु निरंतर अभिप्रेरित करना आवश्यक होता है।

इस सम्बन्ध में एंड्रू कैर्निंग कहते हैं कि एक औसत व्यक्ति किसी कार्य के निष्पादन में अपनी ऊर्जा एवं योग्यता का 25 प्रतिशत लगाता है। संसार, उनके सम्मुख नतमस्तक हो जाता है जो अपनी क्षमताओं का 50 प्रतिशत से ज्यादा नियोजित करते हैं और उन विरले लोगों के लिए सिर पर खड़ा हो जाता है जो अपनी क्षमताओं का शत-प्रतिशत नियोजित करते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि किसी संगठन के लक्ष्यों की प्राप्ति में कार्मिकों की क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करने हेतु उन्हें कुशलतापूर्वक अभिप्रेरित करना कितना चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। अपनी क्षमताओं का 50 प्रतिशत से अधिक अथवा शत-प्रतिशत उपयोग करने वाले विरले लोग ही होते हैं जो अधिकांशतः स्वतः प्रेरित होने के साथ-साथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु दृढ़-प्रतिज्ञ होते हैं। ऐसे लोग किसी क्षेत्र विशेष में श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर एवं श्रेष्ठतम उपलब्धि प्राप्त करने में सफल हो पाते हैं।

वस्तुतः, अभिप्रेरण एक ऐसी जादुई युक्ति है जो किसी व्यक्ति के अन्दर सुषुप्त पड़े उत्साह एवं स्वेच्छा रूपी इंजन को जागृत एवं चलायमान करने हेतु ईंधन शक्ति की तरह कार्य करती है। इस उत्साह एवं स्वेच्छा को निरंतर जागृत अवस्था में रखने एवं अपेक्षित गति प्राप्त करने हेतु विभिन्न उत्प्रेरक तत्व, वेगवर्धक (एक्सीलेरेटर) का कार्य करते हैं। जैसा कि उल्लेख किया गया है कि संगठन में लगे हुए कार्मिक विविध मूल्यों, विश्वासों, अभिरुचियों, दृष्टिकोणों एवं पृष्ठभूमियों से सम्बंधित होते हैं। अतः संगठन का नेतृत्व करने वाले प्रबंधन को विविध उत्प्रेरकों की जानकारी होनी चाहिए एवं किसी कार्मिक अथवा कार्मिक समूह को अभिप्रेरित करने के लिए कौन-से उत्प्रेरक/उत्प्रेरकों को, किस स्थिति में प्रयोग करना है, इसकी विधिवत पहचान होनी चाहिए।

कार्मिक अभिप्रेरण का चुनौतीपूर्ण कार्य, दोनों प्रकार के संगठनों द्वारा सम्पादित करना आवश्यक होता है, चाहे ऐसा संगठन निजी हो या सरकारी। सामान्यतः दोनों प्रकार के संगठनों में विभिन्न प्रकार के भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों के माध्यम से कार्मिक अभिप्रेरण किया जाता है। भौतिक कारकों में मुख्यतः कार्यस्थल की अनुकूल संरचना, उपलब्ध भौतिक सुविधाएँ एवं कार्य-संपादन हेतु अनुकूल वातावरण आदि को शामिल किया जाता है। जबकि मनोवैज्ञानिक कारकों के अंतर्गत मुख्यतः योग्यता एवं क्षमता के अनुरूप कार्य आवंटन एवं कार्य विभाजन, कार्य कौशल विकास हेतु निरंतर प्रशिक्षण सुविधाएँ,

उत्साहवर्धक पुरस्कार प्रणाली, कार्मिक समूह में कुशल समन्वय एवं सामंजस्य तथा निरंतर अभिप्रेरण प्रदान करने वाला कुशल नेतृत्व आदि सुविधाएँ शामिल की जाती हैं। कोई भी कार्मिक स्वभावतः या किसी स्थिति-परिस्थिति में नकारात्मक हो सकता है अथवा किसी कार्य के प्रति, उसमें अरुचि एवं अनुत्साह उत्पन्न हो सकता है। जबकि संगठन के नेतृत्वकर्ता से अपेक्षा रहती है कि वह सदैव सकारात्मक, उत्साहपूर्ण, मूल्यपरक एवं ऊर्जस्वित रहे। अतः स्वतः प्रेरित कार्मिकों के अलावा, अन्य सभी कार्मिकों को निरंतर अभिप्रेरित करना संगठन के नेतृत्वकर्ता की अपरिहार्य जिम्मेदारी होती है। इसलिए किसी संगठन की सफलता उसके नेतृत्वकर्ता के कुशल एवं प्रभावी नेतृत्व पर निर्भर होती है।

निजी संगठनों में कार्मिकों की सेवा अवधि तथा उनको प्राप्त होने वाले वेतन एवं अन्य परिलब्धियाँ, उनको दिए गए लक्ष्यों की सफलतापूर्वक प्राप्ति पर निर्भर होती हैं। जबकि सरकारी संगठनों में कार्मिकों की सेवा अवधि, करिअर विकास तथा उनको प्राप्त होने वाला वेतन एवं अन्य सुविधाएँ, सरकारी नियमों/विनियमों/आदेशों से शासित होती हैं और उनमें प्रतिकूल परिवर्तन कठिन होता है। प्रायः यह भी कहा जाता है कि सरकारी संगठनों में कार्य निष्पादन में 80 प्रतिशत तक योगदान 60 प्रतिशत कार्मिकों का होता है और 20 प्रतिशत तक योगदान 40 प्रतिशत कार्मिकों का होता है। अतः सरकारी संगठनों में कुछ कार्मिक कार्य-अतिरेक का सामना करते हैं जबकि कुछ कार्मिक कार्य से बचने का प्रयास करते रहते हैं। ऐसी स्थितियों में सरकारी

संगठन के प्रत्येक कार्मिक को उसके पद के अनुरूप आवंटित कार्य से सर्वोत्तम निष्पादन प्राप्त करने हेतु उन्हें, संगठन के पदाधिकारी द्वारा निरंतर अभिप्रेरित करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। अभिप्रेरण हेतु सरकारी संगठन के पदाधिकारी में नौकरशाही संरचना की विशिष्टताओं से पृथक्, नेतृत्व एवं प्रबंधन कौशल का विकास एवं उसका अनुप्रयोग अपेक्षित होता है। उक्त दोनों प्रकार के संगठनों में अधिकांशतः एवं आवश्यकतानुसार, विभिन्न उदार एवं सकारात्मक अभिप्रेरण तकनीकों का प्रयोग किया जा सकता है। कभी-कभी अभिप्रेरण तकनीकि- “कैरट एवं स्टिक” का भी सहारा लिया जा सकता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि निजी एवं सरकारी संगठनों में कार्मिक अभिप्रेरण एक अपरिहार्य एवं चुनौतीपूर्ण दायित्व है, जिसका सफलतापूर्वक निर्वहन, उक्त संगठन के नेतृत्वकर्ता पर निर्भर करता है। अभिप्रेरण की आवश्यकतानुसार विभिन्न तकनीकें एवं शैलियाँ अपनायी जा सकती हैं। हालाँकि, प्रशंसा एवं प्रोत्साहन ऐसी युक्ति है, जिसकी चाहत हर कार्मिक को होती है। अतः कम से कम, कार्मिकों के कार्य-निष्पादन को समय-समय पर व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक तौर पर प्रशंसित एवं प्रोत्साहित करके एवं उनके द्वारा हुई गैर-इरादतन गलतियों के प्रति सकारात्मक रुख अपनाकर, उन्हें अभिप्रेरित रखा जा सकता है।

पुराना वृक्ष

वह पुराना वृक्ष जो सूख जाता है,
उसको सींचने कोई माली नहीं आता।

भूख मिटाने को रोटी तो मिलती है,
हाल पूछने अब कोई साथी नहीं आता।

वक्त के झंझावातों से अकेले ही निपटना है,
मन के उद्गारों को संभालने कोई साकी नहीं आता।

जड़ें कितनी भी मजबूत हो यारों,
सूखी धरा पर वृक्ष हरा नहीं होता।



संजय सक्सेना

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्र.म.ले.(आ.एवं रा.ले.प.)
उ.प्र., लखनऊ
शाखा- प्रयागराज

अपनी जड़ें

पनपता है फल पेड़ की डाल पर ही,
अलग होकर जमीन पर गिर जाता है।

अपनी जड़ों से जो हिला कोई,
एक झोंका हवा का उड़ा ले जाता है।

अंजुली भर जल न पिला पाया श्रवण कोई,
तीर से नहीं ग्लानि से ही मर जाता है।

इस दुनिया का फलसफा यही है संजय,
कोई फल अपनी जड़ों को न सींच पाता है।

संसारकटुवृक्षस्य द्वे फले अमृतोपमे। सुभाषितरसास्वादः सद्गतिः सुजने जने॥

भावार्थ: संसार रूपी कड़ुवे पेड़ से अमृत तुल्य दो ही फल उपलब्ध हो सकते हैं, एक है मीठे बोलों का रसास्वादन और दूसरा है सज्जनों की संगति।



अच्छा हुआ हम आजाद हुए



रवि श्रीवास्तव

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्र.म.ले.(आ.एवं रा.ले.प.)
उ.प्र., लखनऊ

अच्छा हुआ हम आजाद हुए,
वो गोरे रास्तों पर थूकने भी नहीं देते थे,
बेवकूफ रोज पानी से रास्ते धोया करते थे,
हम कितने भाग्यवान हैं,
जो गुटका, पान, तंबाकू खाकर रास्ते पर
या कहीं पर भी थूक सकते हैं,
'अच्छा हुआ हम आजाद हुए।'

वो अंग्रेज अनाज में
मिलावट नहीं करने देते थे,
मूर्ख राशन की दुकानों पर साफ सुथरा अनाज देते थे,
हम कितने पुण्यवान हैं जो दूध, अन्न, दवाइयों तक में
बेमालूम मिलावट कर सकते हैं,
'अच्छा हुआ हम आजाद हुए।'

वो ब्रिटिश शिक्षा को बाजारू नहीं होने देते थे,
गँवारों को अच्छी शिक्षा फोकट में दिया करते थे,
हम कितने विद्वान हैं जो
शिक्षा का बाजार बनाकर
अनेक पीढ़ियाँ बरबाद कर सकते हैं,
'अच्छा हुआ हम आजाद हुए।'

वो जुल्मी अनाथ बच्चों को भीख मांगने नहीं देते थे,
दरिद्रों समान उनके लिए
अनाथाश्रम चलाया करते थे,
हम कितने दयावान जो
अनाथ बच्चों को अपाहिज कर भीख मंगवा सकते हैं,
'अच्छा हुआ हम आजाद हुए।'
वो मिशनरी किसी गरीब बीमार को
किसी हालत में मरने नहीं देते थे,
ईश्वर सेवा समझ कर उनकी सेवा शुश्रूषा करते थे,
हम कितने करुणावान हैं जो
डॉक्टरों को धंधा बना कर
या डॉक्टरों की हड़ताल करवा कर
बीमारों का हाल बेहाल करवा सकते हैं,
'अच्छा हुआ हम आजाद हुए।'

वो फिरंगी हमें कभी
रिश्वत खाने नहीं देते थे,
गधें रिश्वत खोरों को जूतों से तुड़वाते थे,
हम कितने भाग्यवान हैं जो
रिश्वतखोरों की रिश्वत को भी
मिल-बांट कर खा सकते हैं,
'अच्छा हुआ हम आजाद हुए।'

वह तो अच्छा हुआ जो अंग्रेज गए,
लेकिन क्या करें जब जाते-जाते
वो हमारा देशप्रेम ही ले गए।

हमारे मौलिक कर्तव्य:

भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होगा कि वह-

- संविधान का पालन करें और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें।
- स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे व उनका पालन करे।
- भारत की प्रभुता एकता व अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाये रखे।
- देश की रक्षा करे और आवाह किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे।
- भारत के सभी लोग समरसता और सम्मान एवं भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग के भेदभाव पर आधारित न हों, उन सभी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों।

- हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करें।
- प्राकृतिक पर्यावरण जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी वन्यप्राणी आदि आते हैं की रक्षा व संवर्धन करे तथा प्राणी मात्र के प्रति दयाभाव रखे।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण मानवतावाद व ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे।
- सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे व हिंसा से दूर रहे।
- व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों सतत उत्कर्ष की ओर बढ़ने का प्रयास करे जिससे राष्ट्र प्रगति करते हुए प्रयात्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले।
- यदि आप माता-पिता या संरक्षक हैं तो छह वर्ष से चौदह वर्ष आयु वाले अपने या प्रतिपाल्य (यथास्थिति) बच्चे को शिक्षा के अवसर प्रदान करें।

शख्सियत- गोपाल चतुर्वेदी



गोपाल चतुर्वेदी
हिंदी के प्रसिद्ध लेखक
और व्यंग्यकार

- **जन्म-** 15 अगस्त 1942 (लखनऊ) ● **शिक्षा-** अंग्रेजी परास्नातक (इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
- **कार्य अनुभव-** “भारतीय रेलवे लेखापरीक्षा सेवा में चयनित”, रेल, गृह व नागरिक उड्डयन मंत्रालयों में कार्य, राज्य व्यापार निगम में निदेशक/वित्त जैसे प्रतिष्ठित पद पर कार्य।
- सारिका, इंडिया टुडे, साहित्य अमृत** जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं एवं **नवभारत टाइम्स, हिंदुस्तान, दैनिक भास्कर** जैसे समाचार पत्रों में इनके लेख/व्यंग्य कॉलम।
- **पुरस्कार व सम्मान:** यश भारती (उत्तर प्रदेश सरकार), शरद जोशी सम्मान (मध्य प्रदेश सरकार), साहित्य भूषण सम्मान (उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान), केन्द्रीय हिंदी संस्थान द्वारा **सुब्रमण्यम भारती पुरस्कार** आदि।
- **काव्य संग्रह:** कुछ तो हो, धूप की तलाश ● **व्यंग्य संग्रह:** धांधलेश्वर, अफसर की मौत, दुम की वापसी, आजाद भारत में कालू, गंगा में गटर, दांत में फंसी कुर्सी, कुरसीपुर के कबीर, नैतिकता की लंगड़ी दौड़, जुगाड़पुर के जुगाड़, सत्तापुर के नकटे, दूध का धुला लोकतन्त्र आदि।
- संधान पत्रिका में प्रकाशन हेतु व्यंग- ‘एक दिन दीवाले का’ देने के लिए श्री चतुर्वेदी जी का हृदय से आभार।**

एक दिन दीवाले का

जैसा सभी जानते हैं कि अपना प्यारा भारत त्यौहारों का देश है। रोज ही कोई न कोई उत्सव। यदि कुछ न हुआ तो उपचुनाव ही हो जाते हैं। हमारे उत्सव-उत्साही देश में होली-दीपावली का दर्जा आम चुनाव का है। वैसे नौकरी और शादी के बाद वास्तविकता का यथार्थ अपने आप सामने आ ही जाता है। महीने के पहले हफ्ते के बाद कोई भी तीज-त्यौहार हो, मौसम मर्सिए का हो जाता है। सरकार इतने आदेश-अध्यादेश निकालती है, एक से यह भी निर्धारित कर दे कि होली-दीपावली सिर्फ पहले सप्ताह में होंगे। उप या आमचुनाव कभी हो-तीसरे या चौथे हफ्ते में हो, तो बेहतर है। खाली जेब का सदमा भारी आश्वासनों और अपने हल्के अहम की तुष्टि से कुछ तो कम हो जाएगा।

पर इस बार की दीपावली का क्या करें! जालिम को वही अंतिम सप्ताह में आना था। जो कहीं विधायक होते, तो हम भी उसूल के नाम पर दल का लेबल बदलकर, नाम और नामा कमाते। पर अपनी-अपनी किस्मत है। सरकारी बाबू की सीट का परिवर्तन भी सजा के बराबर है। जिसने एक बार बाबू का चोला धरा, फिर वह जीवन-पर्यंत बस वहीं रहता है। न अफसर बन सकता है न नेता। अपनी जिंदगी के अभावों की पीड़ा से हम इंकार नहीं करते, किंतु जरूरतें भी अपनी स्थिति के अनुरूप हो गई हैं। मुफ्त की चाय का कप अपना रोजमर्रा का त्यौहार है, अगर साथ में नमकीन-मिठाई का जुगाड़ हो जाए तो होली-दीपावली का मजा आ जाता है। हमारे दफ्तर में ऐसे कद्रदान हर दिन फँस जाते हैं। दिक्कत तो परिवार की है। बच्चों के लिए नए कपड़े, फुलझड़ी-पटाखे, मिठाई-पकवान किस जादू की छड़ी से लाएं? वेतन के सहारे तो बमुश्किल रोजी-रोटी चलती है। ऊपर की आमदनी भी बस चाय-नाश्ते भर की है। बुरा हो पंचांग और पंडितों का, रोशनी के त्यौहार की तिथि ऐसी रखी कि अपना अंधेरा घना हो जाए।

रोशनी की बात पर ध्यान आया कि पत्नी ने इस बार दीयों की जगह मोमबत्तियाँ सजाने की सोची है। उनके हिसाब से मिट्टी का दीया महंगा पड़ता है। त्यौहार के उपलक्ष्य में पूरा का पूरा शहर बाजार बन गया है। तिस पर भी आलम यह है कि भीड़ के मारे तिल रखने की जगह नहीं। कानून-व्यवस्था के रक्षकों के रहते हुए यहाँ खुलेआम लूट मची है। हमने इस बार मोमबत्तियाँ खरीदने का निश्चय किया तो भाई

लोगों ने उसकी भी कीमत बढ़ा दी। एक निपट अकेला व्यक्ति भला किस विधि से इस सामूहिक षड्यंत्र का मुकाबला कर सकता है। अधिक से अधिक हम दफ्तर के कागजी शेर हैं। कार्यालय की चार-दीवारी के बाहर हमारे अस्तित्व की प्रतिभा में हीनभाव का घुन लग जाता है। हम अपने में सिमटे खड़े हैं और लोग दनादन दुकानें खरीदते जा रहे हैं। बड़ी हिम्मत कर हम मोमबत्ती का भाव पूछते हैं। नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुने! दुकानदार बड़ी अनिच्छा से हमारी ओर रुख करता है। गोया हम ग्राहक न होकर भिनभिनाते मच्छर हों। फिर से हम अपनी भाव की टेक दोहराते हैं और फिर वह दूसरों में व्यस्त हो जाता है। हम आत्मसम्मान के धनी हैं। क्या मजाल कि बड़े बाबू ऊँची आवाज से बोल भी लें। यूनियन से ऐसे नारे लगवाते हैं कि अच्छे-अच्छों के होश ठिकाने आ जाएँ। पर यह दफ्तर नहीं, बाजार है। हम अपना गुस्सा जप्त करते हैं और इज्जत की अदृश्य टोपी सँभाले घर आ जाते हैं। कल दीवाली है। पत्नी को बच्चों के कपड़ों की चिंता है।

“क्या हो गया है! खाली हाथ क्यों लौट आए?” वह जानना चाहती है।

आज का पूरा दिन भविष्यनिधि के खाते से पाँच सौ रुपया निकालने में लगाया था। बिल बाबू की कैटीन में डटकर खातिर की। तब कहीं जाकर अपनी गाढी कमाई की अनिवार्य बचत का एक हिस्सा मिल पाया। अब हम फिर से परिचित परिवेश में हैं। घर पहुँचते ही हमारा आत्म-विश्वास जाग उठता है और हम सदा के समान खालिस खूँखार पति बन जाते हैं। हम श्रेष्ठता दर्शाते जेब से चार सौ रुपये की गड्डी हथगोले की तरह पत्नी की ओर उछाल देते हैं, “बाजार में खरीदारी इस भीड़ के माहौल में अपने बस की नहीं है। तुम चाहो तो संदीप के साथ जाकर जो लेना हो, ले आओ।

हमारी पत्नी इस प्रकार की चुनौतियों की अभ्यस्त है। “पानी खौल रहा है, चाय पी लेना।” कहती हुई “मत चूको चौहान” की मुद्रा में तत्काल कूच कर जाती है।

मेरा जी चाहता है कि उसके साहस की दाद दूँ। पर इसका अर्थ अपनी कायरता स्वीकार करना होगा। चार सौ रुपए के भोथरे चाकू को लेकर मुद्रास्फीति के रणक्षेत्र में जाना, किसी झाँसी की रानी ही के लिए संभव है। अगर आज बाजार में आयकर विभाग के अधिकारी कुछ बड़ी

दुकानों पर नजर रखते तो काले धन के मोटे आसामी आसानी से पकड़े जाते। पर वह भी तो इसी समृद्ध और संपन्न भीड़ के अंग हैं। केतली और कढ़ाई में बैर कैसा। पत्नी जा चुकी है और मैं चाय पी चुका हूँ।

अब, आज तो त्यौहार की मांगलिक पूर्व संध्या है। पूरे वर्ष के भविष्य का, चंद ताश की बाजियों से अनुमान लगाया जा सकता है। 'साहब ने जरूरी काम से बुलाया है कि स्लिप रखकर मैं चौबे जी के घर चल देता हूँ। ऐसी ही आपातस्थितियों से निपटने के लिए हमारे घर के ताले की दो चाभियों में से एक पत्नी के पास रहती है। चौबे जी दफ्तर के शौकिया कर्मचारी हैं। लोग खेती अधबंटाई पर कराते हैं, चौबेजी अपनी सीट का काम। सबसे पहले दफ्तर आकर चौबेजी हाजिरी के रजिस्टर पर दस्तखत बनाते हैं। तत्पश्चात रिक्शे पर बैठकर अपनी परचून की दुकान पर सिधारते हैं। उनके दस-बारह रिक्शे भी चलते हैं। यों आदमी उदार हैं, जो उनका काम निपटाता है, चौबेजी अपना आधा वेतन उसे भेंटस्वरूप देते हैं। मेरे पास भविष्यनिधि से निकाले सौ रुपए बचे हैं। चौबेजी के यहाँ, यदि तीन-पत्नी में लक्ष्मीजी दर्शन दे गई तो अपनी दीवाली 'फ्री' हो जाएगी।

चौबेजी के यहाँ दफ्तर के जाने-पहचाने चेहरों के अलावा उनके धंधे के दोस्त भी हैं। रस-रंजन की बोलत खुली हुई है और पते बंट रहे हैं। मेज पर प्लेटों में नमकीन उपलब्ध है। लोग अपनी तकदीर ताश के पत्तों में तलाश रहे हैं। एक रुपया पाइंट पर खेल चल रहा है। वारे-न्यारे हो रहे हैं। मैं भी अपनी सीमित जमा-पूँजी से अपने भविष्य को ताश के पत्तों में आँकता हूँ। पहला गिलास पीकर मुझे विश्वास होने लगता है कि लक्ष्मी जी आने वाली हैं। एक दो बार जीतता भी हूँ। फिर किस्मत के प्रतीक पते धोखा दे जाते हैं। बैठने का स्थान बदला जाता है पर परिणाम वही ढाक के तीन पात। दूसरे ग्लास तक मेरे बीस रुपए दूसरों की जेब में पहुँच जाते हैं। जब मैं आधी रात के बाद चौबे जी द्वारा उपलब्ध कराए रिक्शे से घर पहुँचता हूँ तो मेरे मन में और जेब का अंधेरा, रात और सड़के के अंधेरे से कहीं अधिक है। पत्नी कई बार खट-खटाने पर दरवाजा खोलती है। मैं अपराध-भावना ग्रस्त, बिना चूँ-चपड़ किए बिस्तर पर ढेर हो जाता हूँ। इस दीवाले के दूत को महीने के अंतिम सप्ताह में ही आना था। अब तो पूरा वर्ष ही दीवालिया बीतेगा। लक्ष्मी जी यों ही अपना खिलाफत-आंदोलन चलाती रहेंगी। यही सोचते-सोचते मेरी आँख लग जाती है।

सुबह से मेरे घर में ही मेरे विरुद्ध असहयोग-आंदोलन छिड़ा हुआ है न पत्नी बात कर रही है, न बच्चे। मेरा सिर भारी है, कुछ रस-रंजन के आधिक्य से, कुछ हार के क्षोभ से।

“जरा बाजार से सब्जी ले आओ। और हाँ, जिमीकंद जरूर लाना। आज जिमीकंद खाने का बड़ा महत्व है।” मेरी पत्नी हम से कहती हैं।

आशय स्पष्ट है, मुझे सब्जी लानी है। ऐसे बाहर जाने की मेरी भी इच्छा है। शायद ताजी खुली हवा से रात की त्रासदी का संत्रांस कम हो जाए। मैं चुपचाप रसोईघर से झोला उठाता हूँ। संदीप के माध्यम से उनकी माँ से रुपये मँगवाता हूँ और प्रस्थान कर जाता हूँ। ऐसे भी सारा घर दिवाली की तैयारी में लगा है, मेरे लिए समय किसके पास है! रहूँ या जाऊँ। पूड़ी सिकने की सोंधी गंध से घर महक रहा है। सिर अब भी भारी है। पर जैसे दिवाली का आना अनिवार्य है, भूख लगना भी। खाना खाकर मैं थके-हारे योद्धा की तरह आत्म-समर्पण कर देता हूँ। ‘कल

साहब के यहाँ से लौट रहा था तो रास्ते में चौबेजी मिल गए। मुझे जबरदस्ती अपने घर ले गये। वहाँ कई दोस्त बैठे थे। उनके साथ मैंने रस-रंजन किया। अब माफ भी कर दो। त्यौहार के दिन भी रूठी रहोगी तो कैसे काम चलेगा।”

समझौते की पहल में कल्पना-मिश्रित सत्य है। बिना किसी मिलावट के विशुद्ध सच को आज के युग में कौन सह सकता है। वह फिर भले ही अपनी पत्नी हो। पत्नी की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं है। मुझे लगता है कि मुझसे मेरी पत्नी ही नहीं, सभी देवियाँ रूठी हैं। लक्ष्मी तो नाराज हैं ही। सरस्वती भी कभी खास खुश नहीं थीं।

पूजा समाप्त होती है। सब मिटाई पाते हैं। छोटे से क्वार्टर का हर कोना मोमबत्ती से जगमगा रहा है। तीन कमरों के घर की सारी बत्तियाँ जला दी गई हैं। हमें आशा है कि इस जगमगाहट से लक्ष्मी जी को हमारे घर पधारने में आसानी होगी। मैं सोचता हूँ कि पत्नी से कहूँ कि लक्ष्मी मैया का आगमन और सुलभ करने के लिए घर का दरवाजा भी खुला छोड़ देना चाहिए। यदि वह कहीं और व्यस्त हुई तो छुटभइये भक्तों को घर का सफाया करने में कठिनाई तो न होगी। बाहर आँधी आई हुई है। और मोमबत्तियाँ तम के विरुद्ध प्रतीकात्मक संघर्ष में असफल सिद्ध हो रही हैं। दिवाली आ चुकी है और अब उसके आने में चंद ही घंटे शेष हैं। बच्चे दिन-भर के श्रम से थके हैं, मैं अपनी निराशा से। सिर अब भी भारी है, शायद कल रात के उधार के भार से पत्नी भी सोने आ गई है। मेरी चिन्ता आने वाले बिजली के बिल की है। इतने में ही बत्ती भी चली जाती है। अब अंधेरा है। कैसे आ पायेंगी लक्ष्मी जी! हमारा घर अंधेरे में कैसे मिलेगा उन्हें! हो सकता है कि बिजली का जाना भी लक्ष्मी जी की कृपा का प्रभाव है। बिजली का बिल तो नहीं बढ़ेगा। डूबते को तिनके का यही सहारा काफी है।

सुबह मुझे ध्यान आता है कि जेब में दीवाली के अवसर पर आयोजित विशेष लाटरी का टिकट था। रात अच्छी ताश खेली। न अपना होश रहा न अपने संभावित स्वप्न का। कितनी उम्मीद से दफ्तर के बाहर कल यह टिकट खरीदा था। एक करोड़ पाने की मंजिल केवल एक दिन थी। पतलून की जेब में रूमाल, चाभी है, पर नहीं है तो केवल स्वर्णिम भविष्य के प्रवेश द्वार का अनुमति पत्र।

“क्या बात है! तबियत तो ठीक है,” पत्नी के स्वर में सहानुभूति है।

“कोई है! वर्मा जी!” हाँक लगती है।

उठकर देखा, चौबेजी खड़े हैं।

“अरे वर्मा जी हमसे तो आपने कल रात सिर्फ पाँच सौ रुपये लिए थे, लेकिन अपना एक करोड़ का टिकट थमा आए थे।

चौबे जी टिकट निकालकर मुझे देते हैं। मैं उन्हें उनके रिक्शे तक पहुँचा, टिकट पत्नी के हवाले करता हूँ।

सिर अब भी भारी है। दर्द की गोली की खोज में बाहर जाता हूँ। शायद छुट्टी के बावजूद पास की दवा की दुकान खुली हो। वह भी बंद है। क्यों आई यह दीवाली और वह भी महीने के अंतिम सप्ताह में। घर लौटता हूँ तो वहाँ उल्लास का वातावरण है।

‘देखा! यह है विश्वास का फल।’ पत्नी मुझे देखते ही कहती है।

पता लगता है कि लाटरी के जरिए लक्ष्मी मैया दस हजार का सांवना पुरस्कार दे गई। पर यह भी कोई बात हुई। लक्ष्मीजी के एक इशारे से हम करोड़पति बन सकते थे, पर वह हमें सिर्फ दस हजार पर टरका गई।

एक कोशिश.....



लीना दरियाल

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

चित्र पर कुछ लिखने की कोशिश में
कभी-कभी जज्बात कहीं से कहीं चले जाते हैं,
कितने ही विचारों के भंवर में भटक से जाते हैं।

कागज पर फूल मत बना लेखनी से,
खुशबू कहाँ भर पायेगा लेखनी से।

कुछ जज्बात लिख खयालात लिख,
कुछ कोरे पन्नों पर अहसास लिख।

अहसासों की कोपलों को खिलने दे,
कुछ फूलों को खुशबू से महकने दे।

तेरी लेखनी का लिखा सफल होगा,
गर इस टहनी से पेड़ निर्मित होगा।

हवाओं में भी कोई खुशबू महकेगी,
पत्तों की सरसराहट मधुर लगेगी।

गर कर सके तो एक पेड़ निर्मित कर,
इस धरा को हरियाली से सुगन्धित कर।

हर लेखनी से बस आवाज ये निकले,
किसी मासूम कंठ से आह न निकले।

मत बनाओं कागजों के ये नकली फूल,
कुचले हैं निर्मम हाथों ने मासूम फूल।

चलों आज एक आवाज उठा ही लेते हैं,
इस लेखनी को और सबल बना ही देते हैं।



मत उलझ जाना



सुशील कुमार श्रीवास्तव

निदेशक/अप्रत्यक्ष कर
कार्या-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

ज्ञान और अभिमान को मत लगा लेना गले,
रूप और लावण्य में मत उलझ जाना प्रिये।

शाप हैं इंसान का आदि-वंदन भूल जाना
कर्मणा और वचना सत्य तत्व ज्ञान का
भूल में फिर लौट जाओ संग ऐसा कर प्रिये।

ज्ञान और अभिमान को मत लगा लेना गले,
रूप और लावण्य में मत उलझ जाना प्रिये।

स्वयं को पहचान ले मूरख, यही वट वृक्ष है
ध्यान और भगवान ही मानवों का लक्ष्य है
लक्ष्य के विपरीत होकर लक्ष्य मत साधो प्रिये।

ज्ञान और अभिमान को मत लगा लेना गले,
रूप और लावण्य में मत उलझ जाना प्रिये।

सत्य का दीपक जला तेल डालो प्रेम का
इक झलक मिल जाये तो मृत्यु का बंधन टले
रोशनी मिल जाए तो न मोक्ष की दरकार है
अर्थ, रूप और व्यर्थ में मत लटक जाना प्रिये।

ज्ञान और अभिमान को मत लगा लेना गले,
रूप और लावण्य में मत उलझ जाना प्रिये।

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति। हविषा कृष्णवर्त्मैव भूय एव अभिवर्तते।।

भावार्थ: मनुष्य की इच्छा कामनाओं के अनुरूप सुखभोग से तृप्त नहीं होती है। यानी व्यक्ति की इच्छा फिर भी बनी रहती है। असल में वह तो और बढ़ने लगती है, ठीक वैसे ही जैसे आग में ईंधन डालने से वह अधिक प्रज्वलित हो उठती है।



लेखापरीक्षा- चुनौतियाँ एवं संभावनाएं



चन्द्रजीत यादव

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.),
लखनऊ

आश्वासन

तटस्थता

स्वतंत्रता



अंकेक्षण अथवा लेखापरीक्षा से आशय लेखाओं की सत्यता सुनिश्चित करना है। लेखापरीक्षा के द्वारा हम किसी संस्था, तंत्र, प्रक्रिया अथवा परियोजना का मूल्यांकन करते हैं। परंपरागत रूप से हम वित्तीय लेखापरीक्षा तक सीमित थे जिसमें यह सुनिश्चित किया जाता था कि किसी संस्था अथवा परियोजना पर किया जाने वाला व्यय प्राधिकार के सीमा के अंदर ही है तथा बिना स्वीकृति के कोई व्यय नहीं किया गया है। नियमितता लेखापरीक्षा के अंतर्गत यह सुनिश्चित किया जाता है कि व्यय करने वाला प्राधिकारी कहीं नियम एवं संहिताओं का उल्लंघन करके सार्वजनिक संपत्ति का अपव्यय न कर सके। निष्पादन लेखापरीक्षा में लेखापरीक्षक सुनिश्चित करता है कि कोई भी परियोजना न्यूनतम संसाधनों से अभिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करने में कितना सफल रही है।

लेखापरीक्षा कार्य इतना भी आसान नहीं है जितना कि हमारे नीति निर्धारक मान कर चलते हैं। बदलते परिदृश्य में लेखापरीक्षा के आयाम में वृद्धि के साथ-साथ लेखांकन के तौर-तरीकों में बदलाव ने लेखापरीक्षा की चुनौतियों को बढ़ा दिया है। वास्तव में लेखापरीक्षा का कार्य किसी समुद्र मंथन से कम नहीं है, जिसके लिए ज्ञानरूपी सुमेरु पर्वत के साथ-साथ, लेखापरीक्षक को देव और दानवों, दोनों की भूमिका भी निभानी पड़ती है। साथ ही ज्ञानरूपी सुमेरु को मथने के लिए शेषनाग रूपी लेखापरीक्षा टूल्स की भी आवश्यकता होती है। लेखापरीक्षकों से सदैव विनम्र व्यवहार की अपेक्षा रहती है परंतु कभी-कभी अभिलेख एवं सूचनाएं लेने के लिए लेखापरीक्षक को कठोर भी होना पड़ता है। अभिलेखों एवं सूचनाओं का मंथन करने पर प्रायः लेखापरीक्षा प्रस्तररूपी रत्न मिलने से पूर्व हलाहल की प्राप्ति होती है, और कई बार लेखापरीक्षक उसी को अमृत मान लेता है, जिसका मूल्यांकन करने पर उनके प्रतिवेदन में एक भी लेखापरीक्षा प्रस्तर नहीं रह पाता है। अतः लेखापरीक्षकों को अभिलेखों और सूचनाओं का सतत मंथन करते रहना चाहिए। शिव की भांति, लेखापरीक्षित इकाई के कर्मचारियों के विषरूपी तिरस्कार को, न केवल सहन करके, अपितु उसे अपने स्मृति में न उतरने की शर्त पर, जब लगातार अभिलेखों एवं सूचनाओं का मंथन किया जायेगा तो निश्चित ही लेखापरीक्षा प्रस्तर रूपी रत्न की प्राप्ति होगी। और लेखापरीक्षा आपत्ति के परिणामस्वरूप

हुई वसूली के रूप में लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, जिस पर श्रीहरि अर्थात् 'सरकार' का ही अधिकार है। यदि लेखापरीक्षक के मन में लक्ष्मी का विचार भी आ गया तो, उन्हें दैत्यों की भांति मदिरा की ही प्राप्ति होगी, जो लोक-कल्याण के बजाय लोक-विनाश का कारण बनेगी। वर्तमान समय में अभिलेखों और सूचनाओं के रख-रखाव के स्वरूप में तेजी से बदलाव हो रहा है और अब सूचनाएं अभिलेखों के बजाय डिजिटल रूप में रखे जा रहे हैं जिसने लेखापरीक्षकों की चुनौतियों को बढ़ाने के साथ ही संभावनाओं को भी बढ़ा दिया है। डिजिटल फॉर्मेट में सूचनाओं और आंकड़ों का, न केवल स्थानांतरण आसान होगा अपितु कम समय में हम अधिक आंकड़ों का विश्लेषण करने में सक्षम हो सकते हैं, बशर्ते हम स्वयं को ऐसे आंकड़ों का विश्लेषण करने के योग्य बना सके और हमारे नीति निर्धारक हमें ऑडिट टूल्स उपलब्ध करा सकें। साथ ही डिजिटल डाटा की उपलब्धता सुनिश्चित कराना भी एक चुनौती है।

ऐसा भी नहीं है कि हमारे नीति निर्धारक इस संबंध में सचेत नहीं है। हमारे अधिकारी ऑडिट से संबंधित, जो भी सॉफ्टवेयर सीमित संसाधनों में संभव होता है, प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। विगत वर्षों में अप्रत्यक्षकर अनुभाग ने कई विभागों यथा सीमा शुल्क (आयात-निर्यात) और डी.जी.एफ.टी. से डंप डाटा प्राप्त करने में सफलता हासिल की है, किंतु बिना उचित ऑडिट टूल्स के हम शायद उस डाटा के विश्लेषण से अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं कर पाये। हमारी स्थिति उस बंदर की तरह हो गई है जो एक नारियल के मीठे पानी के संवरण के मोह में नारियल की जटाओं को अपने दाँतों और नाखूनों से नोच रहा है किंतु आवश्यक औजार तथा औजार चलाने के लिए अपेक्षित कुशलता के अभाव में नारियल के खोल में छिद्र करने की स्थिति में नहीं है। फलस्वरूप नारियल के पानी को प्राप्त करने में असमर्थ ही रहता है। भारतीय रेलवे से लेकर प्रत्यक्ष कर और अप्रत्यक्ष कर में जिस तेजी से रीयल टाइम भुगतान की व्यवस्था की गई है, उसने हम लेखापरीक्षकों की चुनौतियों को बढ़ा दिया है और हमें लेखापरीक्षा के वर्तमान तरीकों से हटकर, अलग ढंग से लेखापरीक्षा की तकनीक विकसित करने को बाध्य भी किया है। हमें अब निश्चित अंतराल के बाद निश्चित अवधि की लेखापरीक्षा करने के बजाय पावर हाउस के स्टोन पिकर की भांति लेखापरीक्षा के बारे में सोचना चाहिए, जो चलती हुई बेल्ट से कोयले में से पत्थर को उठा लेता है। हमें भी, खासकर जी.एस.टी. ऑडिट से संबंधित लोगों को जी.एस.टी.एन. की एक्सेस लेकर रीयल टाइम ऑडिट करने की तकनीक विकसित करनी होगी ताकि जी.एस.टी. में हो रहे दुरुपयोग को समय से सरकार के संज्ञान में ला सकें। और जी.एस.टी.एन. तो द्रोणाचार्य द्वारा निर्मित किसी चक्रव्यूह से कम नहीं है। मेरे जैसे अनेक लेखापरीक्षा सैनिक भी शायद चक्रव्यूह के प्रथम द्वार पर

ही उलझ कर रह जाते हैं। किसी ने प्रथम द्वार से अंदर जाने का कौशल हासिल कर भी लिया तो उसकी स्थिति चक्रव्यूह में फंसे अभिमन्यु की भांति होनी तय है। तो फिर विकल्प क्या हो सकता है? मेरी राय में हमें अर्जुन की भांति गुरु द्रोणाचार्य से ही इस चक्रव्यूह को भेदने की कला सीखनी होगी। पर द्रोणाचार्य, यानि सॉफ्टवेयर निर्माता, उन्हें तो आंकड़ा प्रबंधन की महारत हासिल है, परन्तु हमें तो आंकड़ा विश्लेषण में भी दक्षता हासिल करनी होगी।

अंततः हम लेखापरीक्षकों का दायित्व है कि हम विभाग द्वारा प्रदत्त प्रशिक्षण के अतिरिक्त भी, यदि संभव हो सके तो सर्वर से आंकड़ों को प्राप्त करना, आंकड़ों का विश्लेषण तथा ऑनलाइन इन्वायरमेंट में आंकड़ों का विश्लेषण करने की दक्षता प्राप्त करने का प्रयास करते रहें। आंकड़ा विश्लेषण की दक्षता हासिल करने के उपरांत, कम ही सही पर अधिक मूल्य की ऑडिट आपत्तियां ढूँढी जा सकती हैं, ऐसा मेरा विश्वास है।

डरे हुए आदमी



शैलेन्द्र कुमार शर्मा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

डरे हुए आदमी,
मरे हुए आदमी।

मीठे हैं पर विष से,
भरे हुए आदमी।

छल-बल की नाव से,
तरे हुए आदमी।

खोट खा पीकर ये,
खरे हुए आदमी।

श्वेत वसन श्याम मन,
हरे हुए आदमी।

सत्यप्रण ले सत्य से,
परे हुए आदमी।

आज के ये आदमी,
गिरे हुए आदमी।

डरे हुए आदमी,
मरे हुए आदमी।

अतिथि की कलम से

एक लड़की दही



यश मालवीय

प्रसिद्ध लेखक एवं गीतकार
कार्या-महालेखाकार (ले. एवं हक.) I उ.प्र., प्रयागराज में कार्यरत
हाल ही में हुई बलात्कार की घटनायें दिल दहला रही हैं। इसी संदर्भ में एक गीत-

कोख से कब्र तक सिलसिला है यही,
एक लड़की दही, एक लड़की दही।

वो न समझी कभी चाल शतरंज की,
उस पे चलती रही है छुरी तंज की।
वो दबाई गई क्योंकि दब के रही,
एक लड़की दही.....

लोरियों ने छुआ, ना हवा ने छुआ,
देह धर के टहलती रही बददुआ।
होंठ कह ही न पाए व्यथा अनकही,
एक लड़की दही.....

बाप रोका किया, भाई टोका किया,
खुद जनम दे के माँ ने पढ़ा मर्सिया।
रेत में भुन गई, बाढ़ में है बही,
एक लड़की दही.....

जिस्म के दाम ऊँचे से ऊँचे लगे,
आँख मल-मल के सौ-सौ शिकारी जगे।
वो उसक के स्वयं चादरों सी तही,
एक लड़की दही.....

भीड़ में खो गई, भीड़ में मिल गई,
साँस खुल के जो ली, साँस ही छिल गई।
वो ही निकला कुटिल, बाँह जिसने गही,
एक लड़की दही.....



दीपक वर्मा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्र.म.ले.(आ.एवं रा.ले.प.) उ.प्र., लखनऊ



भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में नारी की सहभागिता

राष्ट्रीय आंदोलन का प्रारम्भिक चरण मूलतः पुरुष प्रधान रहा तथा इसका नेतृत्व पुरुषों द्वारा किया गया, परंतु भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के पश्चात इसमें गुणात्मक परिवर्तन आया। जहाँ 19वीं शताब्दी में समाज सुधार के लिए नारी समस्या मुख्यतया सामाजिक प्रथाओं एवं रीति-रिवाजों, बाल-विवाह, बाल-विधवा, सती-स्त्री शिक्षा का मिश्रण थी, वहीं बीसवीं शताब्दी में स्त्री-वर्ग ने अपने पारिवारिक कर्तव्यों एवं सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए राष्ट्रीय आंदोलन में हिस्सा लिया।

सन् 1905 में बंगाल के विभाजन ने राष्ट्रीय आंदोलन में स्त्री सहभागिता में एक नई स्फूर्ति पैदा की। स्त्रियों के लिए विशेष तथा नए राष्ट्रीय समूहों के गठन के माध्यम से स्त्रियों को राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया।

सन् 1910 तथा सन् 1920 के मध्य स्त्रियों की राजनीतिक गतिविधियों में काफी वृद्धि हुई। बागी क्रांतिकारियों को शरण देने तथा गुप्त संदेश वाहकों के रूप में स्त्रियों की काफी मांग थी। इस चरण में कुछ ब्रिटिश महिलाएं भी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की सक्रिय समर्थक बन गईं। इनमें प्रमुख थीं- एनी बेसेंट, डोरोथी जिनराजदास एवं सिस्टर निवेदिता। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने सन् 1917 के अधिवेशन में औपचारिक रूप से पहली बार नारी अधिकारों पर अपनी स्थिति स्पष्ट की और शिक्षा की मांग की तथा स्थानीय सरकार से संबंधित संस्थाओं के चुनाव में योग्यता के लिए स्त्रियों पर भी पुरुषों के समान मानदंड लागू करने की मांग की। भारत सरकार अधिनियम, 1919 में औरतों को सीमित स्तर पर वोट का अधिकार दिया गया।

सन् 1920 के बाद महात्मा गाँधी के राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व करने के पश्चात आंदोलन में नारी वर्ग की भागीदारी में तेजी आयी। अहिंसा एवं स्वराज प्राप्ति के कार्यक्रमों में गाँधी जी ने पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को अधिक महत्व दिया। गाँधी जी के अनुसार स्त्रियों में त्याग की भावना एवं दुख झेलने की क्षमता पुरुषों की अपेक्षा अधिक होती है।

स्वदेशी आंदोलन में स्त्रियों ने बड़-बड़कर हिस्सा लिया। गाँधी जी ने खादी को मूलतः स्त्रियों का आंदोलन कहा क्योंकि इससे स्त्रियों को आमदनी प्राप्त होनी शुरू हो गई। इसके साथ-साथ स्त्रियों में पर्दा तथा असमानता जैसे अन्य बंधन तोड़ने की इच्छा भी जाग्रत हुई।

स्त्रियों ने जन आंदोलनों में हिस्सा लिया, शराब की दुकानों पर धरना दिया, प्रदर्शन में हिस्सा लिया, गिरफ्तारियां दी, जेल गई, तथा पुलिस की लाठियां एवं गोलियां खाईं। असहयोग आंदोलन एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन में कस्तूरबा गाँधी, उमा नेहरू, कमल चौधरानी, ज्ञानवती देवी, कृष्ण देवी, प्रभावती नारायण, दुर्गाबाई देशमुख आदि ने भाग लिया।

जहाँ अधिकतर महिलाओं ने गाँधी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया वहीं स्त्रियों के एक अल्पसंख्यक समूह ने क्रांतिकारी राजनीति का विकल्प चुना। सन् 1930 में चटगाँव युवा विद्रोह में महिला विद्रोहियों को मुख्यधारा में ला खड़ा किया। शांति घोष तथा सुनीति चौधरी ने सन् 1931 में कौमिल्ला के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट स्टीवांस की हत्या कर दी। सन् 1932 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के वार्षिक कन्वोकेशन के अवसर पर बीना दास ने गोली चलाई। प्रतिलता वाडेकर, उजाला मजूमदार तथा पारुल मुखर्जी प्रसिद्ध क्रांतिकारी थीं।

राजनीतिक सहभागिता के साथ-साथ, नारी उत्थान से संबंधित आंदोलन, राष्ट्रीय आंदोलन से अलग परंतु इसका महत्वपूर्ण अंग था। सन् 1901 में देवी चौधरानी ने स्त्री महामंडल की स्थापना की। सन् 1917 में मद्रास में वीमेंस इंडिया एसोसिएशन की स्थापना हुई। उसी वर्ष सरोजिनी नायडू संवैधानिक सुधार समिति के पास एक महिला शिष्टमंडल ले कर गईं तथा वयस्क मताधिकार की मांग की। शिष्टमंडल द्वारा महिलाओं के लिए पुरुषों के समान वोट का अधिकार एवं शिक्षा तथा स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं की बात की गई थी। भारत सरकार अधिनियम, 1919 के लागू होने के पश्चात मद्रास प्रांतीय विधान मंडल ने सन् 1920 में महिलाओं का वोट का अधिकार दिया।

सन् 1925 में नेशनल काउंसिल ऑफ विमेन तथा सन् 1927 में ऑल इंडिया विमेन्स कान्फ्रेंस की स्थापना हुई। सन् 1930 तक लगभग 10 हजार महिलाएं इनकी सदस्य बन चुकी थीं। ये संस्थाएं चंदा इकट्ठा करने, सामाजिक सेवा तथा नारी शिक्षा के साथ-साथ कुछ क्षेत्रों में महिलाओं के समान अधिकारों के लिए सरकारी नीतियों को प्रभावित करने की कोशिश भी कर रही थी। प्रथम गोलमेज सम्मेलन में राधाबाई सुबारायन तथा बेगम शाहनवाज खान ने महिला प्रतिनिधियों के रूप में भाग लिया। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में 8

सदस्यों के प्रतिनिधि मंडल ने सार्वजनिक मताधिकार तथा मिश्रित सामान्य निर्वाचन क्षेत्रों की मांग की।

जब सन् 1937 में कांग्रेस ने प्रांतों में सरकारें बनाई तो, कई भारतीय महिलाओं ने प्रांतीय विधान मंडलों में मंत्री, सचिव अथवा उपसचिव जैसे पदों पर कार्य किया। भारत छोड़ो आंदोलन में अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी जैसी महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। सन् 1931 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने कराची प्रस्ताव में महिलाओं के लिए समान अधिकार का प्रस्ताव पास किया।

भारतीय महिलाओं ने राष्ट्रीय आंदोलनों के जुलूसों में हिस्सा लिया, सभाओं में उपस्थित रहीं, शराब की दुकानों पर धरना दिया। इनमें से कुछ ने अदम्य साहस एवं संगठन शक्ति का परिचय दिया। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन महिलाओं की भागीदारी के बिना सफल नहीं हो सकता था।

यह संसार तुमसे ही है निर्मित,
तुम दीप, तुम हमारी आदर्श हो,
तुम हमारी माता, संपूर्ण भारतवर्ष हो।

भारतीय नारी



मैं इक भारतीय नारी हूँ, मेरी अपनी पहचान है,
जीवन के हर क्षेत्र में, आज नारी विद्यमान है।

मैं इक भारतीय नारी हूँ..

कृषि हो या व्यवसाय, हर क्षेत्र में भागीदारी है,
अब कोई नहीं कह सकता, नारी आज बेचारी है।

मैं इक भारतीय नारी हूँ..

सूझ-बूझ बलबुद्धि में, मैं नहीं किसी से कम,
पुरुषों से कहीं अधिक, कर सकती हूँ उद्यम।

मैं इक भारतीय नारी हूँ..

सुमन केसरी

लेखापरीक्षक

कार्या-प्र.म.ले.(आ.एवं रा.ले.प.)

उ.प्र., लखनऊ

शाखा-प्रयागराज

ममता, करुणा, सेवा भावना, ये मेरे गहने हैं,
जीवन के हर क्षेत्र में अब्बल, मेरे क्या कहने हैं।

मैं इक भारतीय नारी हूँ..

वंचित हूँ मैं जिससे ऐसी कौन है कला,
अतुल शक्ति है मुझमें, कहना न मुझे अबला।

मैं इक भारतीय नारी हूँ..

आज बताओ कौन क्षेत्र है जिसमें मैं असफल हूँ,
प्रकृति का उपहार हूँ, सृष्टि का मुख्य संबल हूँ।

मैं इक भारतीय नारी हूँ..

रेल चलाती, जहाज उड़ाती, अन्तरिक्ष में जाती हूँ,
शिक्षा हो या खेल जगत, अपना परचम लहराती हूँ।

मैं इक भारतीय नारी हूँ..

जब आती है बात न्याय की, पँच परमेश्वर बन जाती हूँ,
व्यवस्था की हो बात तो, मैं आंदोलनकारी बन आती हूँ।

मैं इक भारतीय नारी हूँ, मेरी अपनी पहचान है,
जीवन के हर क्षेत्र में, आज नारी विद्यमान है।



कौन है?



अखिलेश कुमार

आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक

कार्या-निदेशक, डाक व दूर. ले.प., लखनऊ

कौन है जिसने तुम्हें इस योग्य बनाया है,
खुद सोकर गीले में, सूखे में तुम्हें सुलाया है।
धरती न देती दाना-पानी
सूखे का मौसम आया है,
हल्की बारिश में तुम्हें कंधे पर बिठाकर
जिसने अपना हल चलाया है।

कौन है जिसने तुम्हें....

सोचा था खूब होगा अन्न
तुम्हें पेटभर खिलायेंगे और खुद भी खायेंगे।
पर आई बाढ़ बह गया सब,
हाय! प्रकृति की कितनी निर्मम माया है।

कौन है जिसने तुम्हें....

शाम को एक रोटी की खातिर
जाकर जमींदार के यहाँ जिसने अपना आँसू बहाया है,
रोटी मिल गई तो अच्छा है नहीं तो
बदले में उसने गाली भी खाया है।

कौन है जिसने तुम्हें....

उसकी भी गणना कम नहीं
जिसने तुम्हें खुद में नौ माह रख,
तुम्हें दिया नवजीवन और खुद की काया है।
इतना कहने पर भी क्या तुम्हें अब भी समझ न आया है,
ऐसा कर सकने वाला एक मात्र मात-पिता का साया है।

श्याम-अनुराग



दीपिका पांडे

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कार्या-प्रधान निदेशक,
ले.प.(के.), लखनऊ

शाखा-प्रयागराज

सुरीली बाँसुरी के राग से अनुराग कर लो तुम,
अभी कुछ नहीं बिगड़ा मन शांत कर लो तुम।

जहाँ ग्वाले, जहाँ गोपी मधुर संगीत गाते हैं,
उन्ही प्रेम की गलियों में फिर विचर लो तुम।

लगा लो ब्रज-रज, बना लो प्रेममय तन को,
वहाँ कण-कण में रस बिखरा उसे श्वास में भर लो तुम।

करो कुछ याद द्वापर को, यही वह भूमि है पावन,
जहाँ कृष्ण रास रचाते थे, इसे नमन कर लो तुम।

यही सब ज्ञानी कहते हैं, यही सब संत कहते हैं,
यही कल्याण का पथ है, इसे निशदिन सुमिर लो तुम।

अपने मन मंदिर में, ज्ञान दीपिका प्रज्ज्वलित कर लो,
सुरीली बाँसुरी के राग से, अनुराग कर लो तुम।

- जिनके माँ-बाप जिंदा है वे दुनिया के सबसे सम्पन्न लोग हैं। माँ-बाप ईश्वर का दूसरा रूप होते हैं। अगर आपके माता-पिता आपसे खुश है तो समझो ईश्वर खुश है। जिस घर में माँ-बाप का सम्मान नहीं होता, उस घर में समृद्धि नहीं आती।
- माँ-बाप हमें बचपन में शहजादों की तरह पालते है, तो हमारा भी फर्ज बनता है कि बुढ़ापे में हम उन्हें बादशाहों की तरह रखें।



“वी वांट जस्टिस”, “वी वांट जस्टिस” के नारे देते हुए स्कूल के छोटे-छोटे बच्चे हाथों में झंडे बैनर उठाए इसी नारे के साथ आगे बढ़ रहे थे। उसके बाद सफेद कपड़े पहने कुछ अधेड़, कुछ युवा भी “वी वांट जस्टिस” चिल्लाते हुये गुजरे। थोड़ी देर बाद युवा महिलाओं का एक जत्था “वी वांट जस्टिस” की कर्णप्रिय ध्वनि के साथ गुजरा। उनके हाथों में “जस्टिस डिलेड, जस्टिस डिनाइड” के बैनर भी थे। ये सभी सामने गाँधी मैदान में जाकर बैठ गए, अपने-अपने नारों, अपने-अपने बैनर के साथ।

वह यह सब देख रहा था, उसे समझ में नहीं आ रहा था कि लोग उससे इतना प्यार करते हैं! उसे इतना चाहते हैं! क्या बच्चे, क्या युवा, क्या महिलाएं, सब उसके दीवाने हैं... चारों तरफ “वी वांट जस्टिस” “वी वांट जस्टिस”। वह खुश भी था, हैरान भी और परेशान भी।

क्यों लोग उससे मिलना चाहते हैं? ऐसा क्या हुआ कि लोग उसके दीवाने हो गए?

वह सोच रहा था कि उसे उन सभी लोगों से मिलना चाहिए जो उससे मिलने के लिए बेताब हैं, यह सोचकर उसने अपनी दोनों बैसाखियाँ दोनों बगलों में लगायी और मैदान की तरफ बढ़ने लगा।

‘अरे, अरे कहाँ जाते हो भाई?’- अचानक से मियाँ वकील अहमद ने उसे रोका।

‘सभी लोग मुझे बुला रहे हैं और मैं न जाऊँ, यह तो उनकी भावनाओं का अपमान होगा और कुछ लोग ‘जस्टिस डिलेड, जस्टिस डिनाइड’ भी कह रहे हैं मतलब कि अगर मैं देर से उनके पास पहुँचा तो ये भी गलत होगा’- जस्टिस ने कहा।

वकील अहमद ने समझाया- अरे भाई, तुम अगर एकदम यूँ ही, उनको मिल जाओगे तो उन्हें तुम्हारी अहमियत, तुम्हारी इंपॉर्टेंस का पता नहीं चलेगा। अगर तुम्हें अपनी इंपॉर्टेंस बनाए रखनी है तो तुम्हें उनके लिए सुलभ होने से बचना होगा।

तो फिर मैं क्या करूँ? - जस्टिस ने कहा।

चिन्ता मत करो, मैं अभी तुम्हारी मीटिंग का इंतजाम किए देता हूँ- वकील अहमद ने सुझाया।

लेकिन आप क्यों? मैं खुद ही जाकर उनसे मिल लूँगा- जस्टिस ने सवाल किया।

‘मैं उनसे कहूँगा कि तुम बहुत व्यस्त हो और अगर वे तुम से अभी मिलना चाहते हैं तो इसके लिए उन्हें अर्जेंट फीस देनी होगी। इससे तुम्हें भी कुछ मिलेगा और स्वाभाविक है उसमें से कुछ मेरा भी होगा’- ऐसा कहते-कहते वकील अहमद ने जस्टिस की एक बैसाखी उसके बगल से निकाल ली और वह गाँधी मैदान की तरफ ज्यों ही बढ़ने

जस्टिस- एक अधूरी कथा



शैलेन्द्र कुमार शर्मा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

वाला था कि अचानक से सूट-बूट और अपनी टाई की गाँठ को ठीक करते हुये जजराम जी आ पहुँचे।

‘मियाँ वकील अहमद हमारे जस्टिस को क्यों बहका रहे हो? मैंने सब सुन लिया है या कहिए सूँघ लिया है और जो कुछ मिलेगा उसका हमें पता भी ना दोगे! वाह यह कैसे हो सकता है! जस्टिस वहीं जाएगा जहाँ हम चाहेंगे’- और ये कहते-कहते जजराम ने भी जस्टिस की दूसरी बैसाखी उसकी बगल से निकाल ली।

वकील अहमद मौके की नजाकत को भाँपते हुये बोले- जजराम जी, जो भी मिलेगा, उसमें आपका हिस्सा आपको दे दिया जाएगा, आप निश्चित रहें।

तब दोनों ने सलाह की, कि अभी कुछ दिनों तक जस्टिस को उन लोगों से मिलने न दिया जाए ताकि माँग की पोटली और बड़ी हो सके। और ये दोनों गाँधी मैदान की ओर बढ़ चले।

जस्टिस लाचार था अपाहिज तो था ही और बैसाखियाँ भी इन दोनों ने निकाल लीं। अब वह इंतजार ही कर सकता था कि ये दोनों उसे उसके चाहने वालों से मिला दें, लेकिन यहाँ तो कुछ और ही खिचड़ी पक रही थी। तभी एक बुजुर्ग तजुर्बे सिंह उसे अपनी तरफ आते हुए दिखाई दिए। जस्टिस ने उन्हें पास आने पर रोका और अभी तक का पूरा घटनाक्रम बताया।

तजुर्बे सिंह ने कहा- बेटा जस्टिस, तुम्हारी जरूरत न इन दोनों को है और न ही उन लोगों को, जो ‘वी वांट जस्टिस’ के नारे लगा रहे थे, वाकई तुम्हारी जरूरत जिन लोगों को है वे तो तुम्हें नजर ही नहीं आएंगे, उन दबे कुचले गलों की आवाज होठों तक आते-आते ही दम तोड़ देती है। ये लोग तो अपनी-अपनी दुकान पर तुम्हारी फोटो वाले कागज में पुड़िया बनाकर अपना घटिया सामान बेचना चाहते हैं, सबके अपने निहित स्वार्थ हैं। और इस तरह-

जस्टिस की ये है कथा, अधर में इस प्रकार।

काश मिले इसको कभी, उत्तम उपसंहार।।

हिंदी

हिन्दी दिवस का इतिहास एवं वर्तमान स्थिति



डी.पी. श्रीवास्तव

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.),
लखनऊ

हिन्दी को 14 सितम्बर 1949 को राजभाषा का दर्जा दिया गया। संविधान के अनुच्छेद 343 के खंड-1 में कहा गया है कि भारत संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। पंडित राहुल सांकृत्यायन के शब्दों में 'हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है'।

संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होने वाले अंकों का रूप, भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा। खंड-2 में यह उपबन्ध किया गया था कि संविधान के प्रारम्भ से 15 वर्ष की अवधि तक अर्थात् 26 जनवरी, 1965 तक संघ के सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग होता रहेगा जैसा कि पूर्व में होता था। वर्ष 1965 तक राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी के प्रयोग का प्रावधान किए जाने का कारण यह था कि भारतवर्ष सन् 1947 से पहले, अंग्रेजों के अधीन रहा था और तत्समय अंग्रेजी भाषा का प्रयोग राजकीय प्रयोजनों के लिए होता था। किन्तु विडम्बना यह रही कि प्रारम्भ में ही 15 वर्ष बाद तो सरकारी प्रयोजनों में प्रयोग शुरू हुआ लेकिन आज 70 वर्ष बाद भी इसे राष्ट्रभाषा का सम्मान प्राप्त नहीं हो सका।

देश में बोली जाने वाली अन्य भाषाओं के बदले हिन्दी को राजभाषा बनाए जाने का मुख्य कारण यह भी था कि भारत देश में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा के साथ-साथ यह देश की एकमात्र संपर्क भाषा भी है।

हिन्दी देश की संपर्क भाषा तो है ही, इसे राजभाषा का वास्तविक सम्मान भी दिया जाना चाहिए, जिससे कि यह पूरे देश को एकता के सूत्र में बांधने वाली भाषा बन सके। भारत रत्न डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद द्वारा कही गई पंक्तियाँ आज भी प्रासंगिक हैं कि “जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता। अतः आज देश के सभी नागरिकों को यह संकल्प लेने की आवश्यकता है कि वह हिन्दी को स्नेह से अपनाकर और सभी कार्य क्षेत्रों में इसका अधिक से अधिक प्रयोग कर इसे व्यवहारिक रूप से राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा बनने का गौरव प्रदान करेंगे।”

भारत सरकार द्वारा प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में जोर-शोर से मनाया जाता है। इस दिन स्कूल, सरकारी प्रतिष्ठान और अन्य जगहों पर हिन्दी दिवस के रूप में कार्यक्रम होते हैं। इस दिन पूरा देश हिन्दी के रूप में रंगा होता है। सरकार इस दिन होने वाली प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित भी करती है। लेकिन दुर्भाग्य से अगले ही दिन हम हिन्दी को भूल जाते हैं।

भले की हिंगलिश के बहाने हिन्दी बोलने वालों की संख्या बढ़ रही है, किन्तु हिंगलिश का बढ़ता प्रचलन हिन्दी भाषा की गरिमा के दृष्टिकोण से गंभीर चिंता का विषय है।

अन्त में कहना चाहूंगा कि देश के लेखकों ने हिन्दी के ऊपर कई गीत और रचनाएँ लिखी हैं, जिसमें एक है “हिन्दी हैं हम वतन हैं हिन्दोस्ताँ हमारा” ये शब्द देश की शान में लिखे गए हैं और हमें गर्व महसूस कराते हैं। अपने अन्दर और दिलो दिमाग में यह सोच जागृत होनी चाहिए कि ‘पहले अपना देश आता है बाद में दूसरा देश आता है’।

(साभार: विभिन्न लेख एवं गूगल पर उपलब्ध सामग्री)

रविवार को ही क्यों होता है छुट्टी का दिन..?

- अंग्रेजों के शासन काल में भारत में मजदूर वर्ग को हफ्ते के सातों दिन काम करना पड़ता था। उन्हें भोजन के लिए भी समय नहीं दिया जाता था। इस कारण उनकी सेहत बिगड़ती जा रही थी। 1857 ई. में पुणे में मजदूरों के नेता नारायण मेघाजी लोखंडे ने मजदूरों के हक में आवाज उठाई थी। उनका तर्क था कि मजदूरों को हफ्ते में एक दिन आराम और व्यक्तिगत कार्यों के लिए दिया जाना चाहिए। छुट्टी के लिए आंदोलन को मेघाजी बम्बई तक ले गए। 10 जून, 1890 को मेघाजी लोखंडे का प्रयास सफल हुआ और पहली बार रविवार की छुट्टी मजदूरों को मिली।
- सन् 1843 में पूरे भारत में रविवार की छुट्टी घोषित की गई। उस समय के गवर्नर जनरल ने यह छुट्टी सिर्फ स्कूल, कॉलेज और

दफ्तरों के लिए घोषित की थी। उनका मत था कि ऐसा करने से छात्र पढ़ाई पर और लोग अपने काम पर ज्यादा ध्यान लगा सकते हैं।

- अंग्रेजी कलेंडर के अनुसार रविवार सप्ताह का आखिरी दिन माना जाता है। अंग्रेजी देशों में इसे वीकेंड का नाम दिया गया है। उनकी अनुसार यह दिन आराम करने के लिए होता है इसलिए यह अवकाश दिया जाता है।
- अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संस्था द्वारा रविवार को हफ्ते का आखिरी दिन माना गया था। इस दिन को छुट्टी के रूप में मनाए जाने की बात कही गई थी। हालांकि इस बात को सन् 1986 में मान्यता दी गई थी।

हिन्दी



हिन्दी का निर्मल गुणगान



बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्या-प्र.म.ले.(आ.एवं रा.ले.प.) उ.प्र., लखनऊ

करता हूँ निर्मल गुणगान है हिन्दी।
करिए प्रयोग बढ़कर, आसान है हिन्दी॥
संस्कृत है जिसकी जननी, दिव्यमान है हिन्दी।
सूर, कबीर, तुलसी, रसखान है हिन्दी॥
करिए प्रयोग....
पाणिनि से अनुप्राणित, महान है हिन्दी।
लिखते वही जो पढ़ते, विज्ञान है हिन्दी।
करिए प्रयोग....
कहाँ-कहाँ की ध्वनि से गुंजित जहान में।
शिशु-जन्मते ही मुख से निष्कान है हिन्दी।
करिए प्रयोग....
राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी, संविधान है हिन्दी।
राजकाज हित प्रयोजित, प्रतिष्ठान है हिन्दी॥
करिए प्रयोग....
भाषा-अपर का ज्ञान, नहीं नुकसान है हिन्दी।
मातृभाषा की प्रतिष्ठा-सम्मान है हिन्दी॥
करिए प्रयोग....
करोड़ों दिलों को रंजित, मुस्कान है हिन्दी।
देश-विदेश की शान-अरमान है हिन्दी॥
करिए प्रयोग....
भाषा-अपर में काम, अभिमान नहीं है।
सब उन्नति का मूल, भाषा उड़ान है हिन्दी।
करिए प्रयोग....
मृदुल,मधुर-मिष्ठान, रसवान है हिन्दी।
दुष्कर पराजित करना, बलवान है हिन्दी॥
करिए प्रयोग....
अन्जान है नहीं कोई, हिन्दुस्तान है हिन्दी।
राष्ट्र-राज में सुशोभित, विद्यमान है हिन्दी॥
करिए प्रयोग....



आह्वान



शालिनी रानी सिंह

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्या-प्र.म.ले.(आ.एवं रा.ले.प.) उ.प्र., लखनऊ

एक तो हम भारतवासी....
उस पर हिंदी भाषी,
कैसे होऊँ इससे ज्यादा अभिलाषी....
कि हिंदी ही हमारी आधारशिला, यही हमारे काबा काशी।
हिंदी दिलों की आवाज है..
हिंदी भाषा खास है,
हिंदी में अपनापन है..
हिंदी में एक अलग सी मिठास है।
हिंदी में अभिव्यक्ति आसान है..
हिंदी भारत माता की शान है।
हिंदी भाषाओं के बंधन को तोड़ती है,
हिंदी भारत को उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम,
एक सूत्र में जोड़ती है।
हिंदी है हम वतन हैं..
ये कहकर हम सब फूले नहीं समाते हैं,
अपने हर भाव को, सबसे बेहतर...
हिंदी में ही कह पाते हैं।
अपनी दैनिक कार्यशैली में....
हिंदी का आह्वान करें,
इसका अपने जीवन में..
ज्यादा से ज्यादा संज्ञान करें।
क्यों न हम सब मिलकर...
हिंदी के प्रति अपना कर्तव्य निभाएं,
अपने आधुनिकता से प्रभावित जीवन में...
जड़ों से जुड़ी हिंदी के भी कुछ फूल खिलाएं।



श्रीलंका स्टार विरेंद्र ओवेरेय जी के साथ साइकिल गुरु आदित्य कुमार।



माओ समाजसेवी अन्ना हजारे जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए



आदित्य कुमार

बेमिसाल शिक्षा सेनानी साइकिल गुरु: आदित्य

संसाधनों की कमी भले ही सफलता के रास्ते में आड़े आ जाए, लेकिन ये आपके इरादों को कमजोर नहीं कर सकती। साइकिल गुरु आदित्य के जीवन की कहानी इस सत्य का पूर्ण समर्थन करती है। 18 जुलाई 1970 को उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले के सलेमपुर गाँव में एक दैनिक मजदूर और एक गृहणी व पाँच भाई-बहनों के परिवार में जन्मे आदित्य कुमार ने गरीबी से जूझते हुये किसी तरह से बी.एस.सी. (जीवविज्ञान, डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर) तक की अपनी शिक्षा पूरी की, किन्तु आगे की शिक्षा बस एक सपना बनकर रह गयी।

इसी ने आदित्य को जीवन का उद्देश्य दे दिया कि गरीबी के कारण कोई अशिक्षित न रह जाए, और 1992 में आदित्य ने साइकिल पर ही चलता फिरता स्कूल बना लिया। फक्कड़ी स्वभाव के धनी आदित्य की जिंदगी साइकिल पर कट रही है।

आदित्य पिछले 27 साल से घर छोड़कर, अविवाहित रहकर देश में शिक्षा का अलख जगा रहे हैं। बिना पगार और मानदेय के जब कोई काम करता है तो बात अनूठी बन जाती है। आदित्य देश के 29 राज्यों में अब तक डेढ़ लाख से अधिक पाठशालाएं लगा चुके हैं और अब तक फुटपाथ पर 10 हजार रातें गुजार चुके हैं। आदित्य बताते हैं कि भ्रमण के दौरान लोग उन्हें कुछ पैसा उपहार स्वरूप देते हैं, उसी से वह भोजन करते हैं। फुटपाथ पर चादर बिछाई और सो गए, कई बार भूखे भी रहना पड़ता है। आदित्य बताते हैं कि एक बार एक ऑटोरिक्षा चालक ने उन्हें दस रुपये दिये और कहा कि उसके पास यही हैं और यह कहते हुए उसके आँखों में आँसू भर आये। कई बार हालात विषम भी हुए,

लेकिन अपने मिशन 'आओ भारत को साक्षर बनायें' से आदित्य के कदम डिगे नहीं। आदित्य देश के बेहद पिछड़े क्षेत्रों, आदिवासी इलाकों में जैसे छत्तीसगढ़, झारखण्ड, असम, मिजोरम, मणिपुर, नागालैंड, अरुणाचल आदि सहित जम्मू कश्मीर के संवेदनशील इलाकों में महीनों रहकर उन्हीं के बीच समझा-बुझाकर शिक्षा की लौ जलाने का कार्य कर चुके हैं। पूर्वोत्तर के आदिवासी क्षेत्रों में उनके साथ मार-पीट और उनके पैसे छीनने जैसे घटनाएँ भी हुईं लेकिन आदित्य अपने कार्य में पूरी श्रद्धा के साथ लगे हुये हैं।

यात्रा के दौरान आदित्य गाँवों में बच्चों की पाठशाला लगाकर उनको कुछ देर पढ़ाते ही नहीं हैं, बल्कि उनके अभिभावकों को इस बात के लिए प्रेरित करते हैं कि अपने-अपने बच्चों को स्कूल जरूर भेजें। आदित्य जहाँ भी जाते उस गाँव-शहर में एक युवक ऐसा तलाशते हैं जो इन पाठशालाओं को नियमित चला सके। उनका प्रयास है देश का कोई भी बच्चा अशिक्षित न रहने पाए। 1992 से लेकर आदित्य अब तक लाखों बच्चों को शिक्षित कर स्कूल भेज चुके हैं।

अब तक 5 लाख किलोमीटर साइकिल चला चुके आदित्य बताते हैं वह अपनी साइकिल के जरिये उन क्षेत्र में पहुँचने की कोशिश करते हैं जहाँ पर उनकी जरूरत होती है। वह सुदूर गाँवों में जाकर पाठशाला लगाकर बच्चों को शिक्षित कर रहे हैं। इसी लगन और मेहनत को देखते हुए आदित्य कुमार को अब तक सौ से अधिक पुरस्कार प्रांतीय सरकारों ने दिये हैं। आदित्य को अनेकों राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने भी सम्मानित किया है। उन्हें उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव व पूर्व राज्यपाल राम नाईक भी सम्मानित कर चुके हैं। चित्रों को देखकर आप उनकी जीवन यात्रा को समझ सकते हैं।

आदित्य अपने इस काम को एक अभियान भर नहीं, बल्कि फर्ज समझते हैं उनके पढ़ाये हुए बच्चे ऊँचे पदों पर पहुँच गये हैं। वह बताते

Limca

Book of Records

National Record

Aditya Kumar has been running a mobile cycle school in slums and streets for the last 18 years. Without charging any money, Aditya has been giving tuitions to children who have never seen a classroom. Pedalling 50 to 60 km a day, he teaches in various locations from 10 a.m. to 7 p.m. In a month, Aditya teaches over 2000 students.

Vijaya Ghose
Editor, Limca Book of Records

"LIMCA BOOK OF RECORDS" IS THE COPYRIGHT OF THE COCA-COLA COMPANY. "LIMCA" IS THE REGISTERED TRADEMARK OF THE COCA-COLA COMPANY. THIS CERTIFICATE DOES NOT NECESSARILY DENOTE AN ENTRY INTO LIMCA BOOK OF RECORDS.



- संसद भवन में आदित्य को हीरो आफ द नेशन अवार्ड मिल चुका
- गूगल से भारत का नंबर वन शिक्षक होने का तमगा मिल चुका
- डिस्कवरी चैनल से बन चुकी एक घंटे की डाक्यूमेंट्री फिल्म
- 27 साल में पांच लाख किमी का सफर साइकिल से कर चुके
- आदित्य ने यात्रा के दौरान 9490 रातों फुटपाथ में गुजारी

है आज मेरा पढ़ाया कोई बच्चा वकील बन गया, तो कोई जज, कुछ को सरकारी नौकरी मिल गई, तो कोई अपना कारोबार चला रहा है। शुरू में मुझको मुश्किलों का सामना करना पड़ा। घंटों भूखें रहना, फुटपाथ पर सोना आम बात है।

आदित्य कहते हैं कि मुझे गूगल ने देश का नं. 1 शिक्षक होने का सम्मान दिया, इसके बावजूद कोई स्वयंसेवी संस्था या सरकार, मेरे काम में मदद के लिए आगे नहीं आयी।

संदेश

- शिक्षा जागरूकता लाती है इसलिए किसी भी बच्चे को इससे वंचित नहीं रहना चाहिए।

- जिंदगी में त्याग जरूरी है कुछ समय का, त्याग पूरी जिंदगी को बदल देता।
- हर बच्चे में एक टैलेंट जरूर होता है बस उसे सही समय पर निखारने की जरूरत होती है।

आदित्य एक सच्चे शिक्षा सेनानी की तरह अपने उद्देश्य में रत हैं। उनके इस महाकाज में यदि आप किसी तरह से उनकी कोई सहायता करना चाहते हैं तो आप उनसे फोन नंबर 9305744452, 8858043334 पर बात कर सकते हैं। आर्थिक सहायता करने हेतु उनका बैंक अकाउंट नंबर है 3926000100038516, IFSC Code- PUNB0392600, MICR CODE- 226024027 है।

प्रस्तुति : शैलेन्द्र कुमार शर्मा



संधान, डिग्री डॉक्यूमेंट (गुवाहाटी-दिसम्बर, 2019)

17



मृदुलता



मानसी रंजन

सुपुत्री अतुलेश रंजन, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-निदेशक, डाक व दूर. ले.प., लखनऊ

निकला रवि हुई भोर मृदुल-सी
चहकती हैं चिड़िया बुलबुल-सी।
फिर नए प्रयत्न को नया दिन आया
बस मन में हो मृदुलता की छाया।

मिठास बिना इस जीवन का क्या होना
यदि मनुष्य में न हो मधुर भाव का कोना।
मृदुलता ही सहजता लाए
मीठी वाणी का एहसास कराए।

लड़ झगड़ कर तो सब कुछ है अधूरा
मधुर वाणी से हो मन का विकास पूरा।
एक बार बोलकर देखो मीठे बोल
फिर जानोगे मृदुलता के मोल।

यूँ तो वह कोयल है काली
पर करती मृदुल वैभव की रखवाली।
मृदुलता से कोई नुकसान नहीं
मनुष्यता की है पहचान यही।



कर्मबोध



दीपक कुमार तिवारी

वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्या-निदेशक, डाक व दूर. ले.प., लखनऊ

उठो पार्थ अब धर्म की खातिर, शर का तुम संधान करो।
करो वार बस कर्म की खातिर, निज कर्तव्य का भान करो।।

आज जो गर तू चूकेगा,
तो भाग्य भी तुझसे रूटेगा।
इतिहास में तू खो जाएगा,
विश्वास भी जग का टूटेगा।।
त्याग मोह निष्काम भाव से, कर्म का ही बस ध्यान करो।
उठो पार्थ अब धर्म की खातिर, शर का तुम संधान करो।।

माना कि घड़ी विकट है अब,
इस रण में स्वजन खड़े हैं सब।
इनके खातिर ना आर्त करो,
यह युद्ध पार्थ निःस्वार्थ करो।।
वीरो सा धीर धरो मन में,
कौरव वध जन कल्याणार्थ करो।
इन धर्म विरत गर्वित मन अरि का, चूर्ण-चूर्ण अभिमान करो।।
उठो पार्थ अब धर्म की खातिर, शर का तुम संधान करो।।

कार्यालयीन अंग्रेजी-हिंदी

it is estimated
यह अनुमानित है/यह अनुमान लगाया जाता है
it is highly objectionable
यह बहुत अधिक/अत्याधिक आपत्तिजनक है
it will be construed
इसका यह अर्थ/आशय/तात्पर्य समझा जाएगा
joining period will be availed later
कार्यग्रहण अवधि बाद में ली जायेगी
joining report
कार्यारंभ प्रतिवेदन
keep in abeyance
रोक/स्थगित रखा जाए
administrative approval may be obtained
प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए
administrative convenience
प्रशासनिक सुविधा

administrative exigencies
प्रशासनिक आवश्यकता
administrative sanction
प्रशासनिक मंजूरी
admissibility of allowance
भत्ते की स्वीकार्यता
admission with permission
अनुमति लेकर ही प्रवेश कीजिए/अनुमति से ही भीतर आइए
advance granted
अग्रिम राशि प्रदत्त/मंजूर की गयी
advance increment
अग्रिम वेतन वृद्धि
advance intimation given/sent
अग्रिम सूचना दी गयी/भेजी गयी

छठ महापर्व : त्याग एवं तपस्या का अद्भुत समागम



अभिषेक कुमार

लेखापरीक्षक

कार्या-निदेशक, डाक व दूर. ले.प., लखनऊ

विविधताओं से पूर्ण हमारे देश भारत में वैसे तो पूरे वर्ष पर्व एवं त्यौहार का माहौल बना रहता है परन्तु इन सभी पर्वों से परे छठ एक ऐसा पर्व है जिसे महापर्व की श्रेणी में रखा जाता है। छठ महज एक पर्व न होकर एक तपस्या है जो पूर्ण साधना एवं समर्पण को परिभाषित करता है। चार दिवसीय यह पर्व कार्तिक शुक्ल चतुर्थी से प्रारंभ होकर कार्तिक शुक्ल सप्तमी को सम्पन्न होता है, परन्तु इस पर्व के तीसरे दिन अर्थात् कार्तिक शुक्ल षष्ठी का विशेष महत्व होता है। इस पर्व का एक लघु रूप चैत्र मास में भी देखने को मिलता है जो चौती छठ के नाम से प्रसिद्ध है एवं चैत्र शुक्ल षष्ठी को मनाया जाता है। प्रारंभ में छठ को बिहार एवं पूर्वांचल के पर्व के रूप में जाना जाता था परन्तु आज यह पर्व न केवल सम्पूर्ण भारत में, बल्कि विश्व के कई देशों में पूर्ण आस्था के साथ मनाया जाता है।

भगवान भास्कर तथा उनकी दोनों पत्नियाँ उषा एवं प्रत्युषा को समर्पित यह पर्व भगवान भास्कर द्वारा पृथ्वी पर जीवनयापन हेतु आवश्यक सभी संसाधनों को सुलभ कराने हेतु धन्यवाद ज्ञापन का भी एक पर्व है। छठ अपने आप में एक ऐसा पर्व है जिसमें न केवल उदयमान सूर्य की पूजा होती है बल्कि अस्ताचलगामी सूर्य की भी पूजा उसी आस्था से की जाती है। क्योंकि कार्तिक शुक्ल षष्ठी को सायं काल जहाँ भगवान भास्कर के साथ उनकी पत्नी प्रत्युषा की पूजा की जाती है वही कार्तिक शुक्ल सप्तमी के प्रातः काल में भगवान भास्कर के साथ उनकी दूसरी पत्नी उषा की उपासना होती है। छठ पूजा का आयोजन वैसे तो उत्तर वैदिक काल से ही होता आ रहा है परन्तु इसकी प्रामाणिकता पौराणिक काल में मिल जाती है क्योंकि भागवत पुराण, विष्णु पुराण एवं ब्रह्मा वैवर्त पुराण में इसका वर्णन देखा जाता है।

छठ पूजा से सन्दर्भित कई कथाएं जनमानस में प्रसिद्ध हैं परन्तु मुख्य रूप से तीन कथाओं का वर्णन छठ पूजा के संबंध में किया जाता है जो कि निम्नवत हैं-

प्रथम कथा के अनुसार लंका विजय के बाद रामराज्य की स्थापना के दिन कार्तिक शुक्ल षष्ठी को भगवान राम और माता सीता ने उपवास किया और सूर्यदेव की आराधना की। सप्तमी को सूर्योदय के समय पुनः अनुष्ठान कर सूर्यदेव से आशीर्वाद प्राप्त किया था।

दूसरी कथा के अनुसार पांडवों की पत्नी द्रौपदी द्वारा भी सूर्य की पूजा करने का उल्लेख है। वे अपने परिजनों के उत्तम स्वास्थ्य की कामना और लम्बी उम्र के लिए नियमित सूर्य पूजा करती थीं।

तीसरी कथा सबसे प्रचलित है एवं वर्तमान समय में छठ व्रत करने का मूल कारण भी यही माना जाता है। इसके अनुसार राजा

प्रियवद के कोई संतान नहीं थी, तब महर्षि कश्यप ने पुत्रेष्टि यज्ञ कराकर उनकी पत्नी मालिनी को यज्ञाहुति के लिए बनायी गयी खीर दी। इसके प्रभाव से उन्हें पुत्र हुआ परन्तु वह मृत पैदा हुआ। प्रियवद पुत्र को लेकर श्मशान गये और पुत्र वियोग में प्राण त्यागने लगे। उसी वक्त ब्रह्माजी की मानस कन्या देवसेना प्रकट हुई और कहा कि सृष्टि की मूल प्रवृत्ति के छठे अंश से उत्पन्न होने के कारण मैं षष्ठी कहलाती हूँ। हे! राजन् आप मेरी पूजा करें तथा लोगों को भी पूजा के प्रति प्रेरित करें। राजा ने पुत्र इच्छा से देवी षष्ठी का व्रत किया और उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। यह पूजा कार्तिक शुक्ल षष्ठी को हुई थी। उसी दिन से आज तक छठ महापर्व पूर्ण आस्था एवं सद्भावना के साथ मनाया जाता है।

छठ पर्व के साथ कुछ खगोलीय तथ्य भी जुड़ा हुआ है। इस दिन पृथ्वी, चंद्रमा एवं सूर्य की स्थिति एक समरेखीय रूप में रहती है जिससे पृथ्वी के वायुमंडल में पराबैगनी किरणों का आपतन बढ़ जाता है एवं सूर्य की पृथ्वी के सापेक्ष विशेष स्थिति होने के कारण इन पराबैगनी किरणों का विघटन ओजोन के विशेष एलोट्रोप में हो जाता है तथा प्रातः एवं सायं काल पृथ्वी के सतह पर पहुँचने वाली सूर्य की किरणें अत्यंत लाभप्रद हो जाती हैं।

आस्था के प्रतीक इस महापर्व का महिमामंडन क्षेत्रीय गायकों द्वारा भी बहुत अच्छी तरीके से किया गया है, जिसमें मुख्य रूप से शारदा सिन्हा, मालिनी अवस्थी, अनुराधा पौडवाल, मनोज तिवारी एवं भरत शर्मा का नाम सबसे पहले आता है। आज भी इनके द्वारा गाये गए गीतों को सुनने पर ऐसा प्रतीत होता है जैसे छठी मईया का दीदार हो गया हो-

केलवा जे फरेला घवद से, ओह पर सुगा मेड़राय
काँच ही बाँस के बहंगिया, बहंगी लचकत जाए।
सेविले चरन तोहार हे छठी मइया। महिमा तोहार अपार।
उगु न सुरुज देव भाइलो अरग के बेर।
निंदिया के मातल सुरुज अँखियो न खोले हे।
चार कोना के पोखरवा हम करेली छठ बरतिया से उनखे लागी।



पर्यावरण संरक्षण

पुरस्कृत निबंध हिन्दी पखवाड़ा 2019



रवि सिंह

ऑकड़ा प्रविष्टि प्रचालक
कार्या-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

“पर्यावरण” शब्द “परि” उपसर्ग से बना है, जिसका अर्थ है हमारे चारों ओर उपस्थित परिवेश, जिसमें समस्त भौतिक एवं जैविक कारक अपना अलग ही महत्व प्रदर्शित करते हैं। इन्हीं भौतिक एवं जैविक कारकों के संतुलन से एक स्वस्थ पर्यावरण का निर्माण होता है, जो जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज मानव भौतिकता की लालसा में पर्यावरणीय संतुलन के लिए आवश्यक कारकों का निरंतर दोहन करते हुए पर्यावरणीय संतुलन को बिगाड़ रहा है। यहीं से पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता का जन्म होता है।

बढ़ते औद्योगीकरण, अनियोजित शहरीकरण, जनसंख्या विस्फोट एवं अनेक ऐसे मानवजनित कारक हैं जो पर्यावरण क्षरण का कारण बन रहे हैं। आज पूरे विश्व में हर वर्ग के मानव, जानवर और वनस्पतियों पर अनेक प्रकार के प्रदूषणों का कुप्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता है।

भारत के परिपेक्ष्य में, यदि चर्चा की जाए तो प्राचीन काल से ही भारतीय मनीषियों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेक मापदंड निर्धारित करते हुए जल को देवस्वरूप, नदियों को जीवनदायिनी मानते हुए उनकी पूजा का भी प्रावधान रखा। वृक्षों जैसे पीपल, तुलसी, जो अधिक ऑक्सीजन का उत्सर्जन करते हैं उन्हें भी देव स्वरूप माना, इन सब के बावजूद भी जब हमने आधुनिक युग में कदम रखा तो विकास के नाम पर इन सब को भूलकर प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन किया और अभी भी कर रहे हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात सन् 1950 में, जब भारतीय संविधान को पूर्ण रूप से अंगीकृत किया गया तो पर्यावरण से संबंधित कोई विशेष प्रावधान नहीं था, परंतु ‘5 जून’ को आयोजित संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण संबंधित सम्मेलन “स्टॉकहोम सम्मेलन 1972” से भारत पर अच्छा प्रभाव पड़ा और फलस्वरूप भारतीय संविधान में सन् 1976 में संशोधन द्वारा दो नए अनुच्छेद ‘48 ए’ (राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत के अंतर्गत) एवं 51 ए (जी) मौलिक कर्तव्य के अंतर्गत जोड़े गए, जिनमें

पर्यावरण संरक्षण सरकार व जनमानस द्वारा करने का प्रावधान किया गया। आजादी के बाद से अब तक भारत सरकार द्वारा अन्यान्य कानून पर्यावरण संरक्षण हेतु बनाए गए हैं जिनमें से कुछ के नाम निम्नलिखित हैं:

- रिवर्स बोर्ड एक्ट
- जैव विविधता संरक्षण नियम
- पर्यावरण संरक्षण अधिनियम

भारत के साथ-साथ समूचे विश्व में पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रयास किया जा रहा है जोकि, पृथ्वी शिखर सम्मेलन, ओजोन संरक्षण दिवस इत्यादि के रूप में दृष्टिगत होता है, परंतु क्या सरकारी नियम या 5 जून को मनाया जाने वाला **पर्यावरण दिवस** पर्याप्त है या फिर पर्यावरण संरक्षण के लिए जनसहभागिता भी आवश्यक है- यह चर्चा का विषय है। परंतु यह निंदनीय है कि हम कुछ विशेष अवसरों पर ही इन विषयों पर चर्चा या कार्य करते हैं।

“यदि पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार लाना है तो मात्र एक ही उपाय है सब को शामिल करना।”

अब यदि हम पर्यावरण क्षरण के विभिन्न कारकों की बात करें, तो उन्हें निम्न रूप में विभाजित कर सकते हैं:

- जल प्रदूषण
- वायु प्रदूषण
- रेडियोधर्मी प्रदूषण
- ध्वनि प्रदूषण
- भूमि प्रदूषण
- घटते हुए वन क्षेत्र
- प्लास्टिक प्रदूषण

उपर्युक्त में से कुछ विशेष कारक जो मानव जीवन की दयनीय स्थिति के कारण हैं जैसे - जल प्रदूषण। संसार का हर प्राणी यह सोचने की क्षमता रखता है, कि जल एक जीवनदायक तत्व है यह जानकारी होने के बाद भी हम विभिन्न माध्यमों से निरंतर जल प्रदूषण कर रहे हैं चाहे वह गंदा कचरा, अपशिष्ट पदार्थ हो। प्लास्टिकजनित प्रदूषण भी आज एक गंभीर समस्या बन कर उभरा है। घटते वन क्षेत्रों व वायु प्रदूषण के फलस्वरूप वैश्विक ताप में निरंतर वृद्धि हो रही है, इससे हमारे ग्लेशियर पिघलते जा रहे हैं एवं जलवायु परिवर्तन की समस्या आ रही है।

उपरोक्त समस्याओं हेतु सरकार व जनसहभागिता अत्यंत आवश्यक है। केवल सरकार द्वारा किए गए प्रयासों से यह संभव नहीं हो पाएगा।

पर्यावरण लेखापरीक्षा करने वाले लेखापरीक्षकों के लिए भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग ने अन्तर्राष्ट्रीय संस्था इंटोसाइ (INTOSAI) व वेगा (WEGA) के पर्यावरण संबंधी मानकों पर आधारित पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन से सम्बन्धित दिशा निर्देशों के लिए एक मैनुअल भी बनाया है।

त्रिपुरा राज्य की सी.ए.जी. की रिपोर्ट में पर्यावरण संबंधी मानकों का पालन न करने के लिए स्टेट इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड की निंदा भी की गई।

संपूर्ण रूप से यदि देखा जाए तो यह कथन गलत नहीं होगा कि,

“भविष्य या तो हरा होगा या होगा ही नहीं”

प्रकृति द्वारा हमें दिए गए संसाधन सीमित हैं इनका उपयोग सोच समझकर ही करना होगा, सतत विकास की ओर जाना होगा। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे- सौर ऊर्जा, भू-तापीय ऊर्जा, इत्यादि का उपयोग करना होगा और यह बात ध्यान में रखनी होगी कि :

“प्रकृति हमारी जरूरतों से संबंधित संसाधन हमें देती है,
न कि हमारे लालच से संबंधित।”

“हम पृथ्वी से हैं, पृथ्वी हमसे नहीं”।

मुड़ों प्रकृति की ओर

प्रकृति स्वभाव से प्राणियों की सहचरी रही है। प्रकृति का शुद्ध सात्विक और संतुलित संसर्ग पाकर मनुष्य दीर्घायु पाने की कामना करता रहा है। प्रकृति-सौंदर्य ईश्वरीय सृष्टि की अलौकिक, अद्भुत, अनंत, असीम तथा विलक्षण कला है। प्रकृति सौंदर्य वर्णनातीत है। पर्वतों की सुरम्य घाटियां, उनके हिमण्डित शिखर, कलकल बहती नदियां, झर-झर झरते झरने, फल-फूलों से लदे वृक्ष, भांति-भांति के सुमन, विस्तृत हरियाली, आसमान में उड़ते भांति-भांति के पक्षी, सूर्योदय के समय आकाश में बिखरे स्वर्णिम जावक, सूर्यास्त के समय रात्रि में चमकते नक्षत्रगण, चांदनी रात, भला किसका मन नहीं मोह लेते! प्रभात बेला में बाल अरुणोदय के समय उड़ते पक्षियों का कलरव, हरी दूब पर मुक्ता के समान ओस की बूंदें, शीतल मंद सुगंधित समीर तथा मानव मात्र का कार्य में लगने का उपक्रम कितना आनंददायी है।

“उषा सुनहरे तीर बरसाती, जय-लक्ष्मी सी उदित हुई।” जब से मनुष्य ने विज्ञान की शक्ति पाकर प्रकृति से छेड़छाड़ प्रारंभ की तथा उसका दोहन प्रारंभ किया, तभी से वह प्राकृतिक सुखों से वंचित होता गया। वह अपने अहंकार, दंभ तथा अभिमान के कारण स्वयं को सर्वशक्तिमान समझने लगा और प्राकृतिक तत्वों पर विजयश्री की कल्पना करने लगा। जब से उसने प्रकृति का आंचल छोड़ा और विज्ञान का दामन थामा, तभी से वह अपने विनाश की खाई खोदने लगा। प्रकृति पर विजय के स्वप्न को साकार करने के लिए उसने अनेक अविष्कार किये और समझा कि प्रकृति को उसने वश में कर लिया। परंतु वह भूल गया कि मूक दिखाई देने वाली प्रकृति की वक्रदृष्टि सर्वनाश का कारण बन सकती है। आज जिस प्रकार चारों ओर पर्यावरण प्रदूषण तथा प्राकृतिक असंतुलन का दौर चल रहा है, रोगों में वृद्धि होती जा रही है उसका एकमात्र कारण मानव की प्रकृति से छेड़छाड़ है। वनों की अंधाधुंध कटाई के कारण पर्वत-स्खलन, भूक्षरण,



दिव्या

सुपुत्री- श्री हरि ओम शिव, एम.टी.एस.
कार्यो-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

बाढ़, बेमौसमी बरसात तथा पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण शहरों में रहने वाले लोगों का दम घुटता जा रहा है। औद्योगिक प्रगति तथा प्रकृति से दूर होते जाने के कारण साँस लेने के लिए शुद्ध वायु का भी अभाव हो गया है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि मानव पुनः प्रकृति की ओर मुड़े। प्रकृति से पुनः सामंजस्य स्थापित करें उसे अपनी सहचरी समझकर उसका सम्मान करें। विश्व के सभी देशों ने इसके परिपेक्ष्य में अपनी-अपनी मुहिम छेड़ दी है। आज विश्व भर में प्रदूषण से बचने तथा पर्यावरण की रक्षा का प्रयास किया जा रहा है। 5 जून को समूचे विश्व में ‘पर्यावरण दिवस’ मनाया जाना इस बात का साक्ष्य है कि अब मानव ने प्रकृति के महत्व को स्वीकार कर लिया है तथा उसके संरक्षण के हर संभव प्रयास की ओर गंभीरता से विचार करने पर विवश हुआ है। विश्व के सभी देशों को समझ में आ गया है कि जिस प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का उन्होंने अभियान छेड़ा था वह उसकी भूल थी। परंतु उन्हें उस भूल को सुधार कर अब प्रकृति की ओर झुकना है।

तडागकृत् वृक्षरोपी इष्ट्यज्ञश्च यो द्विजः। एते स्वर्गे महीयन्ते ये चान्ये सत्यवादिनः॥

भावार्थ: तालाब बनवाने, वृक्षरोपण करने, और यज्ञ का अनुष्ठान करने वाले द्विज को स्वर्ग में महत्ता दी जाती है, इसके अतिरिक्त सत्य बोलने वालों को भी महत्व मिलता है।

नारिकेलसमाकारा -श्यन्तेऽपि हि सज्जनाः। अन्ये बदरिकाकारा बहिरेव मनोहराः॥

भावार्थ: सज्जन व्यक्ति नारियल के समान होते हैं, अन्य तो बदरी फल के समान केवल बाहर से ही अच्छे लगते हैं।



कोई मसी नहीं दुनिया में
माँ की ममता का वर्णन कर सके।
कोई धरा नहीं संसार में
जिस पर ममता की कहानी लिख सके।

माँ की ममता का क्या कहना
इसके आगे ना कोई गहना।
जितना कर देती माँ की ममता
जग में नहीं कोई उसकी समानता।

सुख-दुख और ऐशो आराम उसे कहाँ
संतान सुख से रहे, सोचती रहती सदा यहाँ।
भूखे रहकर बच्चे को खाना खिलाती
संतान के पूछने पर तुरंत झूठी डकार लगाती।

संतान चिंतित ना रहे, सदा सोचती
अपने ऊपर सदा कष्ट लेकर सहती।
अपने दुख-दर्द संतान को कभी नहीं बताती
संतान जरा कष्ट में हो, व्याकुल हो जाती।

एक माँ आज पड़ी है बीमार
हो गई है बिल्कुल आज लाचार।
बेटा रहता सदा चिंतित उसके लिए
माँ मुस्कुराती सदा बेटा के सुख के लिए।

लेटी है माता मरण-घाट
बेटा बैठा रहता उसके पैताने।
मौन विस्फुरित घूर रही थी
माँ प्रयास करती उसे हँसाने।

माँ का दुख देख देख
नयन उभय अश्रुपूरित बोझल।
बेबस बैठा माँ का बेटा
माँ माँ ही करने को केवल।

बेटे के अनमोल आँसू देख,
दो होंठ माँ हिलाए बड़े जतन।
मानो कहती बेटा! रो मत
तेरे आँसू अनमोल रतन।

ममता को सलाम



राम औतार प्रसाद

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ
शाखा-पटना



बेटे के आँसू झर-झर बह रहे हैं
माता तब होने लगी विकल।
माँ ने हाथ उठाना चाहा
पर सब कोशिश हुई विफल।

माता के उठते हाथ देख
बेटा ने पकड़ा हाथ सबल।
बेटे को लगा हाथ माता के
उठने को हो रहे विफल।

पाकर सबल सहारा बेटे का
माता ने हाथ उठा डाला।
थरथर करते हाथों से उसने
पोंछ तुरंत आँसू डाला।

तत्क्षण ही हाथ ढले माता के
दोनों ही आँखे बंद हुए।
मरते मरते भी माता ने
बेटे के आँसू पोंछ दिए।

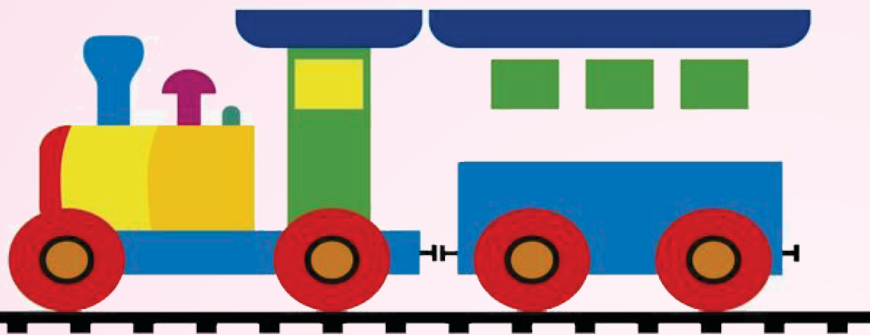
शत-शत नमन तुम्हें ममता
बेटे को जीवनदान दिया।
बेटे का दुख ना देख सकी
अपनी साँसे बंद किया।

कण-कण में शामिल माँ का अंश
पर खड़ा रहता हमारा जीवन।
हे दुनिया वालों ममता रोई यदि कभी
धिक्कार है तेरा जीवन।

हर पल ममता का सम्मान करो
करना पड़े प्राणोत्सर्ग, देर ना इसमें करो।
माँ तुझे मेरा प्रतिपल प्रणाम।



संस्मरण - रेलगाड़ी का वो सफर



लीना दरियाल

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

आजकल व्यस्तता और समय की कमी के कारण हर व्यक्ति रेलगाड़ी के सफर से बचना चाहता है। लेकिन रेलगाड़ी के सफर का भी अलग आनंद है। एक बहुत बड़ी जनसंख्या रेलगाड़ी में सफर करती है। एक दो दशक पहले तक हिंदुस्तान की ज्यादातर जनसंख्या रेलगाड़ी में ही सफर करती थी। सफर के दौरान कई तरह के लोगों से मुलाकात होती थी। एक दूसरे से बातचीत करते हुए सफर कटता था और अक्सर सफर सुखदायी ही रहता था। आज की तरह नहीं कि कोई घर से सफर पर जा रहा हो तो हिदायत दी जाती है कि किसी से घुल मिल कर बात करने की जरूरत नहीं, किसी का दिया खाना नहीं, ये नहीं करना वो नहीं करना..... दस तरह की हिदायतें दी जाती हैं। शायद आजकल के माहौल को देखकर चिन्ता करना और सावधानी बरतना जरूरी भी है। लेकिन हमेशा गलत लोग ही नहीं टकराते हैं। सफर में कभी कभी अनजाने लोग अचानक से ऐसी सहायता करके निकल जाते हैं कि आपको सोचना पड़ता है कि अगर उस व्यक्ति ने मेरी सहायता न की होती तो क्या होता। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही घटित हुआ था। जिसे याद करके आज भी कभी कभी रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

यह मई 2010 की घटना है जब मैं कार्यालय के कार्य से लखनऊ से गाजियाबाद गयी थी। वापसी में मैं गाजियाबाद स्टेशन पर अपने सहकर्मी के साथ बातें करते हुए फैजाबाद एक्सप्रेस का इंतजार कर रही थी। यहाँ बताना चाहूंगी कि उन दिनों गाजियाबाद स्टेशन पर रेलगाड़ी सिर्फ दो मिनट के लिए ही रुकती थी। जब रेलगाड़ी आयी तो कुछ अप और डाउन के नंबर की वजह से कुछ स्पष्ट ना हो पाया। सहकर्मी ने स्टेशन में एक चाय वाले से भी पूछा तो उसने भी कहा ये फैजाबाद एक्सप्रेस अभी आने वाली है। लेकिन कुछ सेकंड बाद जब टी.टी. से पूछा तो उसने कहा कि यही फैजाबाद एक्सप्रेस है। मेरे सहकर्मी तो दौड़कर रेलगाड़ी में चढ़ गये लेकिन मैं भीड़ के कारण चढ़ ना पायी और मेरे पहुंचने तक रेलगाड़ी ने थोड़ी स्पीड पकड़ ली थी। लेकिन उस समय मुझे कुछ समझ नहीं आया और मैंने दौड़ते हुए अपना सूटकेस एक कोच (रेलगाड़ी का डिब्बा) के गेट के अंदर की तरफ फेंका। लेकिन सूटकेस अंदर ना जाकर गाड़ी और प्लेटफॉर्म के बीच की जगह में गिर गया। संजोग से सूटकेस ट्रैक में गिरने से बच गया नहीं तो उसकी धज्जियां उड़ जाती। मगर मुझे सूटकेस का होश ना रहा और मैं चलती गाड़ी के साथ दौड़ पड़ी। थोड़ी ही देर में मैंने दायें हाथ से चलती गाड़ी में गेट का रॉड पकड़ा और गाड़ी में चढ़ गयी। लेकिन गाड़ी स्पीड पकड़ चुकी थी, जिसके कारण मुझे शरीर पर हवा का दबाव बाहर की ओर महसूस हुआ और मैं खुद को अंदर खींचने में असमर्थ थी। उस पल की

स्थिति यह थी कि मैंने दायें हाथ से गेट की रॉड पकड़ी थी, मेरे पैर तो गेट पर थे लेकिन बायाँ हाथ और शरीर बाहर की तरफ था, जिसे हवा के दबाव के कारण मैं अंदर खींचने में असमर्थ महसूस कर रही थी। एक युवक संजोग से वहाँ मौजूद था, उसने अपना हाथ बढ़ाकर मुझे अंदर खींच लिया। तब मुझे ध्यान आया कि सूटकेस तो नीचे ही गिर गया। तभी मैंने देखा एक लंबा युवक मेरा सूटकेस लेकर गाड़ी के साथ प्लेटफॉर्म में दौड़ रहा था और थोड़ी देर में उसने सूटकेस को गेट के अंदर फेंक दिया। सूटकेस में मेरे सामान के साथ कार्यालय के कागजात भी थे। लेकिन आज भी जब सोचती हूँ कि अगर उस युवक ने मुझे गाड़ी के अंदर ना खींचा होता तो क्या होता क्योंकि हवा दबाव से मुझे बाहर की ओर खींच रही थी। मैं सारी ताकत लगाकर भी गाड़ी के अंदर आने में असमर्थ थी।

आज भी उन दो अनजान युवकों के बारे में सोचती हूँ कि उस दिन अगर अचानक से उन दो युवकों ने मेरी सहायता न की होती तो क्या होता। क्षण भर की देरी होने पर क्या हो सकता था, सोचकर रोंगटे खड़े होते हैं। उन युवकों द्वारा ये त्वरित सहायता थी, जो अचानक से अनजाने में उन युवकों द्वारा की गयी थी। मैं एक युवक को सिर्फ थैंक्स ही कह पायी फिर वो भी अपने सीट की तरफ निकल गया और मैं भी अपनी सीट पर आ गयी। दूसरे युवक को तो सिर्फ मन से ही थैंक्स कह पायी। उस घटना का स्मरण होने पर उन अनजान युवकों के लिए अभी भी शुभकामनाएं निकलती हैं।

जो भी इस घटना के बारे में सुनता, उसका सुझाव यही होता कि गाड़ी छोड़ देनी चाहिए थी, दूसरे दिन आ जाते। हम भी दूसरे को यही सुझाव देते हैं। लेकिन उस समय कुछ समझ में नहीं आया और लगा कि बस गाड़ी नहीं छूटनी चाहिए।

यह सब लिखते हुए अचानक मुझे एक बहुत पुरानी घटना याद आ गयी। ये उन दिनों की बात है जब मैं इंटरमीडियट में पढ़ती थी। मेरे पापा उन दिनों 31 बटालियन पी.ए.सी., रुद्रपुर (आज का उधमसिंह नगर), उत्तराखंड में रेडियो स्टेशन अधिकारी के पद पर कार्यरत थे। उन दिनों पी.ए.सी. में ओपेन हाल में फिल्म दिखाई जाने की सुविधा थी। यह फिल्म मनोरंजन कक्ष के बाहर दिखाई जाती थी। जो फिल्म शहर के सिनेमाहाल में प्रदर्शित होती थी, उसकी रील लाकर प्रोजेक्टर से दिखाई जाती थी। लोगों के बैठने के लिए पूरे ग्राउंड में सीमेंट की बेंचे बनी थी तथा अधिकारी वर्ग के परिवार के लिए मनोरंजन कक्ष की छत पर कुर्सियों की व्यवस्था रहती थी (बालकनी का एहसास कराने के

लिए)। सब फिल्म देखने के लिए मौजूद थे। अभी फिल्म शुरू होने में देर थी। सब बच्चे उछल कूद करने में लगे थे। वहीं बगल में कुछ दूरी पर एक और छत थी और वहीं दो छतों के बीच में बिजली का एक पोल भी था। बच्चे एक छत से दूसरी छत में कूदने में लगे थे। अचानक एक बच्चा एक छत से दूसरी छत पर कूदने के खेल में थोड़ा चूक गया और बिजली के खंभे को सपोर्ट देने वाले तार को पकड़ कर लटक गया। चूंकि मैं थोड़ा किनारे बैठी थी, मेरा हाथ स्वयं ही उस बच्चे की तरफ बढ़ा और उसे ऊपर खींच लिया। अचानक चीख पुकार मच गयी थी। तभी मुझे लगा कि कुछ दुर्घटना होते होते बच गयी। मैं उस समय भी नहीं समझ पायी थी कि किस समय वो बच्चा गिरा और कैसे मेरा हाथ उस बच्चे की तरफ बढ़ा। वो उस समय की अनजानी त्वरित कार्यवाही थी।

अक्सर लोग कई तरह से एक दूसरे की सहायता करते हैं। उस समय हम चेतना में रहते हुए एक दूसरे की सहायता करते हैं और किस तरह से सहायता करनी है, हमें पता रहता है। आज पता नहीं क्यों अचानक ये बात मन में आयी कि शायद रेलगाड़ी के सफर में सहायता के लिए बढ़ा हाथ पुरानी घटना का ही प्रतिफल था। मैंने इस तरह से कभी नहीं सोचा था। लेकिन पता नहीं क्यों लगता है हर घटना किसी न किसी का प्रतिफल होती है।

सफर में इसी तरह कई बार अनजान लोग अनजाने में आपकी सहायता करके अपने सफर में आगे बढ़ जाते हैं। वो रेलगाड़ी का सफर हो या जिंदगी का सफर, कभी कोई हमारे काम आता है तो कभी हम किसी के काम आते हैं।

सफर चलता रहे, लोग मिलते रहें, कभी वो हमारे काम आयें कभी हम उनके काम आयें..... बस सफर जारी रहे....।

मेरा जीवन

जीवन की अपने कथा रही,
अब क्या बोलूँ, क्या व्यथा रही?

गिर गिरकर उठा
गिरा फिर से....

फिर उठा तो बिल्कुल झूम गया,
ज्यों पुरइन् पते पर झिलमिल सी बूंदें चूम गया।

वैसे ही रहा
मेरा जीवन.....

पल भर में खुशियाँ आती हैं,
माली ने सींची कोपलें, ऋतुएं बसंत ले आती हैं।
पुलकित तन-मन हो जाता है, वो भोर-किरण खिल जाती हैं।

जीवन की अपने ऐसी कथा रही,
अब क्या बोलूँ, क्या क्या व्यथा रही।



रमाकान्त शर्मा

पर्यवेक्षक
कार्या-प्रधान निदेशक,
ले.प.(के.), लखनऊ
शाखा-प्रयागराज

जीवन नहीं है आसान

राजेश कुमार-I

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्र.म.ले.(आ.एवं रा.ले.प.)
उ.प्र., लखनऊ



जीवन नहीं है आसान,
जन्म लिया रोते-रोते,
चलना सीखा लड़खड़ाते-लड़खड़ाते,
मैं गिरा, उठा और चल दिया।
जीवन नहीं है आसान।।

भ्रमित था पथ,
बिखरे हुए थे शूल,
मंजिल भी थी अज्ञात,
मैं चला और चलता ही गया,
विषम वेदनाएँ, सहन करता गया।
जीवन नहीं है आसान।।

कुहासे की एक किरण ने,
ज्ञानदीप प्रज्वलित कर दिया,
सहसा आत्मविश्वास, प्रबल हो गया,
और हासिल हो गई, मंजिल,
प्रण करलो अगर, कुछ कर दिखाने का,
तो जीवन भी हो जाता है आसान।
वरना, जीवन नहीं है आसान।।

छोटी-छोटी खुशियाँ

जीवन की छोटी-छोटी खुशियों में
ही तो खुशियाँ बड़ी-बड़ी है !
क्यों हम देखे बड़ी खुशी को
जब नन्ही खुशियाँ संग खड़ी है !!

धन वैभव भोग विलास तो
शायद तन को सुख देते है !
नन्ही खुशियाँ तो कस्तूरी है
जो सदा ही छुपकर रहती है !!

ख्वाहिशों का क्या वो तो
हर पल बदलती है।
पर नन्ही-नन्ही खुशियाँ ही तो
हर पल मन के भीतर रहती है !!



विनय कुमार दीक्षित

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्रधान निदेशक,
ले.प.(के.), लखनऊ

हिम्मत कभी न हारें तो
हर पल को हम जी सकते हैं !
जीवन की छोटी-छोटी खुशियों
में सदा सुखी हम हो सकते हैं !!



खुशामद कहे या राजभक्ति?



विमल नयन धूसिया

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्या-निदेशक, डाक व दूर. ले.प., लखनऊ

एक किवदन्ती के अनुसार किसी राज्य में एक राजा राज्य करता था। प्रजा जनों में उसकी अत्यन्त लोकप्रियता थी वह एक कुशल शासक होने के साथ-साथ अपनी स्वामिभक्ति के लिये भी अत्यन्त प्रिय शासक था, इसके अतिरिक्त वह धनुर्विद्या का शौकीन व कुशल निशानेबाज भी था। मनपसन्द आखेट करना, आखेट के लिये नित्य नये-नये योजनाये बनाना एवं उसे क्रियान्वित करना, उसकी दिनचर्या में थे। राजा के सैनिक सदैव ही राजा के आदेश का पालन करते थे, उसके हर काम में उसकी आज्ञा का पालन करते थे।

एक दिन योजनानुसार राजा अपने महल से आखेट के लिये जंगल की ओर निकला। उसके कारिन्दें उसके साथ थे एवं चारों ओर से उसकी मदद एवं सुरक्षा में तैनात थे, शिकार की तलाश करते-करते जंगल की ओर बढ़ते जा रहे थे कि जंगल में कुछ दूरी पर एक हिरन दिखाई दिया। कारिन्दों की घेरेबन्दी के बाद राजा ने हिरन पर अचूक निशाना साधते हुए हिरन को मार गिराया। फिर क्या था, राजा के कारिन्दों ने राजा की खूब प्रशंसा की। वाह! राजा साहब, वाह! क्या आपने मारा। अद्वितीय निशानेबाज है आप- यह कहते हुए कारिन्दों ने राजा की खूब जय-जयकार की, राजा भी प्रशंसा से फूले नहीं समा रहा था।

राजा अगले आखेट के लिये फिर से आगे बढ़ा। जंगल में थोड़ी दूर और आगे बढ़ने पर राजा को एक छोटा सा खरगोश दिखाई दिया। फिर क्या था, राजा ने खरगोश पर ठीक निशाना साधा और इसे भी मार गिराया। कारिन्दों ने इस बार भी राजा की खूब जय-जयकार की, खूब वाहवाही की। वाह! राजा साहब, वाह! क्या आपने मारा! आप तो निशानेबाजों के निशानेबाज है, धन्य है आप महाराज!

अब शाम होने को आ गई। राजा सैनिकों सहित जंगल से वापस अपने महल आ रहा था कि जंगल में अंगड़ाई लेते हुए एक शेर दिखाई दिया। राजा के इशारे पर सैनिकों ने उसकी घेराबन्दी की और राजा ने शेर पर अचूक निशाने मारे, परन्तु इस बार राजा का निशाना पूरी तरह चूक गया और शेर दहाड़ता हुआ बिना किसी क्षति के सुरक्षित भागने में सफल रहा। राजा के पसीने छूटने लगे, मुख पर घबराहट की साफ

लकीरे दिख रही थी फिर भी सैनिकों ने पूर्व की भाँति इस बार भी राजा की खूब वाह-वाही की। वाह! राजा साहब, वाह! क्या आपने उसे बचाया! आप तो बहुत ही कृपालु है, दयालु है, करुणा के सागर है, जीवों पर दया करने वाले है महाराज, इत्यादि शब्दों से राजा की प्रशंसा में खूब चार चाँद लगाये गये। पूरा माहौल खूब खुशनुमा था।

आदरणीय पाठकों, उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि राजा की जीत अथवा हार, सफलता या विफलता से उसके कारिन्दों/सैनिकों को कोई लेना देना नहीं था। लेना-देना था तो अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये मिथ्या प्रशंसा करना, ताकि कारिन्दों का अस्तित्व राजा की निगाहों में बना रहे। इसे ही कहते हैं विधा की भाषा में खुशामद या राजभक्ति। वैज्ञानिक दृष्टि डाले तो इन्हें पिटठूगिरी की परिधि में भी रखा जा सकता है। पिटठूगिरी वास्तव में वह एकटिविटी है जो यथार्थ को दफन करने का काम करती है, ज्ञानचक्षु को बन्द करती है एवं यथार्थ को ओझल करती है। हमारे देश में जब कभी अरबी, मुगल, डच और अंग्रेजों ने अपने अपने पॉव जमाये, तो इन राजभक्तों की कृपा का ही कमाल था। इन स्वामी भक्तों को आजकल किसी सत्ता की परिधि के चारों तरफ त्वरित एक्शन में देखा जा सकता है। इन्हें कई रूपों में पहचाना जा सकता है जैसे चमचा, दलाल, एजेन्ट, पिछलग्गू या हाँ जी, हाँ जी करने वाला, इत्यादि तथा परिस्थिति अनुसार अपने उज्ज्वल भविष्य के लिये इनसे सबक भी लिया जा सकता है।

- किसी ने अभी तक परमवीर चक्र नहीं लौटाया। महावीर चक्र नहीं लौटाया। शौर्य चक्र नहीं लौटाया। पता है क्यों?
क्योंकि ये चापलूसी से नहीं मिला करते।
- चापलूसी की कला में निपुण लोग, नदी पार होते ही नाविक को लात मारने की कला में भी निपुण होते हैं!



धीरेन्द्र किशोर

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-निदेशक, डाक व दूर. ले.प.,
लखनऊ

यादें

यादों की दोछत्ती से मैं
बचपन की संदूक उठा लाया।

उस बक्से में यह रखा है
कुछ स्वेटर, कुछ मोजे
कुछ फुँदने वाले टोपे
उसमें थोड़े से गुल्लक हैं
जिनमें छोटे से सपने हैं
कुछ सिक्के हैं कुछ चिट्ठे हैं
उन चिट्ठों में तकरीरें हैं

उन शब्दों के भोलेपन को मैं
निज अंतर्मन में ढो लाया
यादों की दोछत्ती से मैं
बचपन की संदूक उठा लाया

एक गुड़िया है एक पुड़िया है
जिसमें गुड़ की रसभरियाँ है
इमली के सूखे बीज भी है
कुछ पत्थर वाली गोटे है
एक लट्ठू है, एक पट्टी है
पट्टी में चित्र उकेरें हैं

इन चित्रों के रंगों का संगम
निज अन्तरघट में भर लाया।
यादों की दोछत्ती से मैं
बचपन की संदूक उठा लाया

एक बार फिर से जी लें

आओ हम
अपने बीच फैले रास्तों को
कुछ और समेट लें।

कुछ तहें लगा के
कुछ सिलवटों को मिटा के
दूरियां जो हममे-तुममे बर्ची हैं मिटा लें।

सर्द ठंडी हवाओं के थपेड़ों ने
जिन रिश्तों की गर्माहट को
बर्फ कर रखा है,
ओस की नमी ने
जिन्हें नम कर रखा है,
उन रिश्तों को
एक बार फिर से
गुनगुनी धूप में पका लें।

कुछ लम्हे चुरा कर
इन्हें सजा लें आओ हम
एक बार फिर से जी लें।

आगरा से पागलों को हवाई जहाज में बैठाकर दिल्ली लाया जा रहा था। पागल जहाज में हुड़दंग मचा रहे थे। उनमें से एक तो पायलट के केबिन में घुस गया और बोला, उठो जहाज मैं चलाऊँगा। पायलट ने हट्टे-कट्टे पागल से उलझना ठीक न समझा और उससे कहा, 'अगर तुम शोर मचा रहे इन लोगों को शान्त करा दो, तो मैं तुम्हें जहाज चलाने दूँगा।'

पागल केबिन से चला गया और तीन-चार मिनट बाद आकर बोला, 'लो शान्ति हो गई है अब मुझे जहाज चलाने दो।' पायलट ने देखा सचमुच कोई आवाज नहीं आ रही थी। उसने पागल से पूछा, 'यह तुमने कैसे किया?' पागल बोला, 'कुछ खास नहीं। जहाज उड़ रहा था मैंने उसका दरवाजा खोलकर उनसे कहा उतरो हवाई अड्डा आ गया और वे सब उतर गए।'



भिखारी (राहगीर से)- जनाब मैं कोई मामूली भिखारी नहीं हूँ। मैंने 'रुपए कमाने के सौ तरीके' नामक किताब लिखी है।

राहगीर (भिखारी से)- तो फिर तुम भीख क्यों माँगते हो?

भिखारी (राहगीर से)- क्योंकि यह उस किताब में बताया गया सबसे आसान तरीका है।



आखिर क्यूँ?

मनीषा किरण

आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक

कार्या-निदेशक, डाक व दूर. ले.प., लखनऊ

न होती खुशी, तो न आते गम कभी
न होता कोई अपना, तो न बनता पराया कभी
न बोलता कोई सच, तो न बनते कभी झूठ
जब न बनते रिश्ते, तो न जाते रिश्ते टूट।

तो आखिर क्यूँ तूने बनाया ये इंसान?
और क्यूँ बनाया तूने ये जालिम संसार?
जिसमें न कोई जज्बात न कोई एहसास,
जिसमें दिलों में है न कोई प्यार।

लोग कहते हैं, सिक्के के होते हैं पहलू दो,
नदी के किनारे दो, और इंसान के चेहरे भी दो,
पर हजार चेहरे होते हैं, आज तो इन्सान के,
कैसे पहचाने ये शैतान के हैं या भगवान के।

मालूम नहीं क्यूँ? क्यूँ तूने दी ये जिन्दगी?
दी भी तो क्यूँ? क्यूँ भर दी लोगों में दरिंदगी?
मालूम नहीं क्यों किया उसे पैदा,
जो करते हैं माँ-बाप से सौदा।
जो खुद से होकर लाचार,
करते हैं दूसरों पे अत्याचार।

नहीं चाहिए हमें ये जिन्दगी
नहीं चाहिए हमें ये संसार,
तो फिर मालूम नहीं क्यूँ?
आखिर क्यूँ तूने बनाया ये संसार?



एक पथिक

सुश्री अर्शिका वर्मा

सुपुत्री-श्रीमती रचना वर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कार्या-निदेशक, डाक व दूर. ले.प., लखनऊ

है कहाँ मंजिल, न सोचूँ,
किन्तु, चलती जा रही हूँ।

विघ्न-बाधायेँ मिलेंगी,
पूर्ण होंगी कामनाएँ।
सोच इतना भी न पायी,
कैसे कहते हैं व्यथायेँ।
दूर होती जा रही हूँ
या बढ़ती जा रही हूँ।

है कहाँ मंजिल....

हो आनंदित गीत गाना,
शोक में आंसू बहाना।
है निराशा क्या जगत में,
यह कभी मैंने न जाना।
ध्यान में निज मग्न,
पग आगे बढ़ाती जा रही हूँ।

है कहाँ मंजिल....

मोडना कर्तव्य - पथ से,
जगत का यह धर्म ही है।
रोकना, रुकना न,
जीवन का यही तो मर्म ही है।
ले हृदय विश्वास,
गिर-गिर संभलती जा रही हूँ।

है कहाँ मंजिल....

दानं भोगं नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य । यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥

भावार्थ: धन की संभव नियति तीन प्रकार की होती है। पहली है उसका दान, दूसरी उसका भोग, और तीसरी है उसका नाश। जो व्यक्ति उसे न किसी को देता है और न ही उसका स्वयं भोग करता है, उसके धन की तीसरी गति होती है, अर्थात् उसका नाश होना है।

दातव्यं भोक्तव्यं धनविषये सञ्चयो न कर्तव्यः । पश्येह मधुकरिणां सञ्चितमर्थं हरन्त्यन्ये ॥

भावार्थ: धन दूसरों को दिया जाना चाहिए, अथवा उसका स्वयं भोग करना चाहिए। किंतु उसका संचय नहीं करना चाहिए। ध्यान से देखो कि मधुमक्खियों के द्वारा संचित धन अर्थात् शहद दूसरे हर ले जाते हैं।

लखनऊ : शहर वही स्वरूप नया



अभिषेक कुमार

लेखापरीक्षक

कार्या-निदेशक, डाक व दूर. ले.प., लखनऊ

लखनऊ 'द सिटी ऑफ नवाब्स' वैसे तो इस शहर को किसी परिचय की जरूरत नहीं किन्तु अपने आप में विभिन्नताओं से भरे इस शहर की बात ही कुछ और है। प्राचीन काल में जहाँ यह शहर इमामबाड़ा, बेगम हजरत महल, शाही व्यंजनों (विशेष रूप से टुंडे कबाबी) एवं अपने आतिथ्य एवं नवाबी शौक के लिए जाना जाता रहा है, वही आज यह शहर अपने अति आधुनिक एवं नए प्रतिष्ठानों के लिए भी जाना जाने लगा है।

लखनऊ आगमन पर आपको शहर के दो स्वरूप दिखेंगे, एक नवाबों का लखनऊ जो आज भी अपनी प्राचीनता को आधुनिकता का आवरण पहनाये हुए खड़ा मिलेगा, वही दूसरी तरफ आधुनिकता की गोद में विकसित हो रहे नए लखनऊ से भी खूब होने का अवसर भी आपको मिलेगा। तो यूँ कहें कि अब अपना लखनऊ दो भागों में बटा दिखता है। प्राचीन लखनऊ से तो आप सभी परिचित हैं, आज बात नए लखनऊ की करते हैं।

नए लखनऊ में सब कुछ आधुनिक देखने को मिलता है, अब वो चाहे मकान हो, दुकान हो या कोई प्रतिष्ठान हो। अब अगर बात प्रतिष्ठानों की हो रही है तो आप सभी का परिचय लखनऊ के उन सभी आधुनिक प्रतिष्ठानों से कराना चाहूँगा जो आज नए लखनऊ की आधारशिला है। इनमें अभी तक मुख्य रूप से जनेश्वर मिश्रा पार्क, लोहिया पार्क, भीमराव अम्बेडकर पार्क, मरीन ड्राइव, लखनऊ मेट्रो का नाम आता है। किन्तु शहर के गौरव के रूप में उभर रहे अति महत्व के प्रतिष्ठानों में दो नाम और भी जुड़ गए हैं। पहला नाम है शहर को अपनी सेवा देने के लिए तैयार हो चुका मेदांता हॉस्पिटल एवं दूसरा नाम है भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित निर्माणाधीन इस्कॉन मंदिर। यह दोनों ही प्रतिष्ठान शहर के उस भाग में स्थित हैं जिसे हम आधुनिक लखनऊ का दिल बोल सकते हैं, नाम है सुशांत गोल्फ सिटी। शहर के इस भाग को स्मार्ट लखनऊ की उपाधि भी मिल चुकी है। इस क्षेत्र के मुख्य आकर्षण है हजारों एकड़ में एच.सी.एल. द्वारा निर्माणाधीन आई.टी. सिटी, उत्तर भारत का सबसे बड़ा मॉल- लुलू मॉल (अभी निर्माणाधीन), इकाना क्रिकेट स्टेडियम एवं सुव्यवस्थित आवासीय परिसरों से आच्छादित कॉलोनी।

ये लखनऊ की सरजमीं



राम जनम राय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्या-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

अदबो-आदाब व बागों का शहर, मैं लखनऊ की सरजमीं,
तहजीब ईमान है मेरा, तो नजाकत पहचान है मेरी।

यहाँ गुँजते हैं साथ में, नाम अल्लाह और श्री राम के,
छूटती है ट्रेन यहाँ, पहले आप और पहले आप पे।

मिलते हैं खूब दिल यहाँ, हर त्यौहार और तीज पे,
लगते लोग गले गली-गली, हर होली और ईद पे।

है नवाबी तो नवाब वाजिद अली की शानगी भी यहाँ,
भूल भुलैया, बरादरी और हजरतगंज की दीवानगी भी यहाँ।

रेसिडेंसी, बेगम हजरत महल और छत्तर मंजिल शान है मेरी,
उठे थे क्रांति के ज्वाले जहाँ से, स्वतन्त्रता संग्राम थी मेरी।

चिकन जरदोजी की कारीगरी, तो टुंडे कबाबी पहचान है मेरी,
रोज जवां होती है जिंदगी जहाँ, शामें अवध जान है मेरी।

बहती आई है गोमती जहाँ, घूम घूम हर गली-गली,
मिलेगा न ऐसा शहर कहीं, ये लखनऊ की सरजमीं।

ऐसा प्रदेश जिसने भारत को वर्तमान प्रधानमंत्री के अलावा पूर्व में भी अनेक प्रधानमंत्री दिये हो, उसकी राजधानी होने के कारण आपको इस शहर में राजनीतिक सरजमीं भी देखने को मिल जायेगी, जहाँ कुछ टटपूजिये नेता आपको लाल टोपी में दिखेंगे, तो कुछ नीली में, तो कोई भगवा, तो कोई सफेद।

इस शहर के सम्मान में अंततः बस इतना कहूँगा पधारों म्हारे लखनऊ।



पूतरेकु- आन्ध्र की एक स्वादिष्ट मिठाई



ई.ए.पी.एस. शास्त्री

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

चलिये आज हम आपका परिचय आन्ध्र प्रदेश के एक ऐसे व्यंजन से कराते हैं जो सामान्यतः उत्तर भारत में उपलब्ध नहीं है। वैसे तो यह व्यंजन एक मिठाई है जो पहले आन्ध्र प्रदेश के भी सिर्फ पूर्वी और पश्चिम गोदावरी जिलों में ही सुलभ थी पर अब यह प्रदेश के बड़े शहरों में भी उपलब्ध है। इसका नाम है पूतरेकु, जिसे पेपर स्वीट के नाम से भी जाना जाता है। यह नाम दो शब्दों से मिलकर बना है पूता अर्थात् लेप और रेकु अर्थात् चादर (sheet शीट)।

अब तक तो मैं अपने पैतृक जिले पश्चिम गोदावरी जिले को ही इसका मूलस्थान जानता था पर जब इस लेख के लिए जानकारी जुटाई गई, तो ज्ञानोदय हुआ कि असल में इसका मूल स्थान पूर्वी गोदावरी जिले के आन्नेयपुरम ग्राम में है। कहते हैं कि यह मिठाई निर्धन परिवारों की देन है जो कपड़े धोने का काम करते थे। इस कार्य के लिए मांड का प्रयोग होता था तथा इसी मांड के घड़े के टुकड़ों पर जमने से इस मिठाई में प्रयुक्त होने वाले चादर की उत्पत्ति हुयी।

इस मिठाई को बनाने की कला कुछ परिवारों तक ही सीमित है। इसको बनाने में सबसे अहम तथा कठिन कार्य चादर या शीट (sheet) बनाना ही है। सबसे पहले चावल- जया बिय्यम, (बिय्यम का अर्थ होता है चावल) को पीसकर घोल (batter) तैयार किया जाता है। घोल का गाढ़ापन पानी से बस थोड़ा ही ज्यादा होना चाहिए। फिर एक चिकने घड़े को उलट कर आग पर गरम किया जाता है। इस घड़े को भी पहले

एक प्रक्रिया के तहत गरम करके फिर तेल में भीगे कपड़े से लीपा जाता है। यह प्रक्रिया बार-बार कई दिनों तक दोहरायी जाती है तब पूता रेकु बनाने हेतु पर्याप्त चिकनाई वाला घड़ा तैयार होता है। जब घड़ा अच्छे से गरम हो जाता है तब एक सूती कपड़े को घोल में भिगों कर घड़े पर रखकर हटाया जाता है। कपड़े को घड़े पर इस तरह से सरकाया जाता है जिससे एक पारदर्शी सतह बन जाती है, यह प्रक्रिया अभ्यास से ही आती है यही रेकु या चादर है। इस तरह से कई चादर बना ली जाती है। अब दो-तीन ऐसे चादर एक साथ लेकर उन पर घी लगाया जाता है फिर पिसा गुड़ या चीनी डालकर इसको गोल या चपटे मनचाहे आकार में लपेटा जाता है। अब गुड़ के साथ काजू, बादाम जैसे मेवे को भी भरने का प्रचलन चल पड़ा है।

यद्यपि चीनी/गुड़ की जगह नमक का इस्तेमाल करके नमकीन पूतरेकु भी बनाया जाता है परंतु मीठे पूतरेकु ही ज्यादा प्रचलन में हैं।

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ, पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता।

-आचार्य विनोबा भावे

हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है।

-राहुल संस्कृत्यायन

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

-समिन्नानंदन पंत

हिंदी का प्रचार और विकास कोई रोक नहीं सकता।

-पंडित गोविंद बल्लभ पंत

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।

-कमलापति त्रिपाठी

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।

-महात्मा गाँधी

हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।

-महात्मा गाँधी

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।

-महात्मा गाँधी



आभा पांडे

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ
शाखा-प्रयागराज

कुकुर महिमा

यह बात मेरे बचपन की है जब हमारे पड़ोसी सरदार करतार सिंह जी की पत्नी ने एक बार हम बच्चों द्वारा एक कुत्ते के बच्चे को सताने पर एक कहानी सुनाई कि जब ईश्वर सृष्टि की रचना कर रहे थे तो पहले पेड़-पौधे एवं जीव-जंतुओं की रचना की और जब श्वान को बनाया तो श्वान ने प्रभु से प्रार्थना की कि मेरे भोजन की व्यवस्था करने वाले का भी निर्माण करे और इस हेतु ईश्वर ने मनुष्य की रचना की। यह किंवदंती मेरे मानस पटल पर अंकित हो गयी और उसके बाद किसी कुत्ते को परेशान करने का ख्याल नहीं आया।

लेकिन अब जो प्रकरण मैं बताने जा रही हूँ, उसके भुक्तभोगी मेरे एक रिश्तेदार ही हैं, नवधनाड्य लोगों के स्टेटस सिम्बल में कुकुर पालन और उसे सजा-धजा कर मोर्निंग वॉक पर ले जाना भी शामिल है और उन्होंने ने भी उसी के अनुरूप पत्नी और बच्चों की जिद पर एक कुत्ते को मात्र बीस हजार में खरीद लिया। बच्चों की जिद होती तो शायद तिवारी जी टाल देते, पर अमीरी का रुतबा पत्नी को ज्यादा था और उन्हें मना करने की हिम्मत वो जुटा नहीं पाए। और तो और माता जी को भी शनि-दशा का भय दिखाकर काले कुत्ते की सेवा के नाम पर राजी कर लिया गया।

अब पूरा घर उस नए मेहमान के स्वागत में लग गया था और तिवारी जी उतनी ही उपेक्षा के शिकार होते गये। “पता है, आज शेडो ने ठीक से खाना नहीं खाया” - घर पहुँचते ही शेडो पुराण शुरू हो जाता (पत्नी ने प्यार से उसे साया ही समझ कर ये नाम दिया)। और अब बच्चे भी मेरे आने पर कोई तवज्जो नहीं देते। मरता क्या न करता, दूसरे उच्च पड़ोसियों की तरह मुझे भी हाफ पेंट और टी-शर्ट में अपने साथ दुलारते पुचकारते हुए चिरपरिचित अंग्रेजी शब्दों को उच्चारित करते हुए शेडो जी को घुमाने ले जाना पड़ता।

एक अच्छे कुकुर पालक होने के नाते तिवारीजी ने अपने शेडो के लिए अच्छी और महंगी ड्रेसे भी खरीदी, कुत्ते की भी पहचान मानो उसके कपड़ों से होती है। और तो और अच्छी ग्रोथ के लिए कुत्ते के भोजन की ऑनलाइन भी खोज की (काश पत्नी जी मेरे विकास के लिए भी इतनी सजग होती)।

धीरे-धीरे शेडो जी मुख्यधारा में आ गये और तिवारी जी हाशिये

पर। हद तो तब हुई जब वो एक दिन मेरे घर आये और गिडगड़ाते हुए बोले कि दीदी आपका कोई परिचित कुत्ता रखना चाहता हो, तो प्लीज मेरे शेडो को जरूर याद रखे, हम उसे देना चाहते हैं।

हमने कहा, भैया आपने उसे बड़े नजाकत से पाला था, उसे यूँ ही किसी को देना चाहते हैं। फिर जो उनकी आँखों में दर्द छलका, सचमुच मुझे भी उनकी तकलीफ का अहसास हुआ। चाय के घूँट ऐसे पी रहे थे मानो खून के घूँट पी रहे हो। दुखी स्वर में बोले- दीदी खरीदा तो उसे बीस हजार में था पर मुझे नहीं पता था कि बड़ा होकर इतना खूँखार हो जायेगा, अब तक तेरह लोगों को काट चुका है लगभग एक लाख रूपया मुझे दूसरे लोगों को इलाज खर्च देना पड़ा है। और अब तो मेरे सामाजिक सम्बन्ध भी खतरे में पड़ गये हैं। हालत ये है कि मुझे खुद भी घर आने पर डर लगने लगा है। हद तो तब हो गयी जब मेरे कुत्ता प्रेमी बॉस के घर आने पर पहले ही आपकी भाभी को हिदायत दे दी थी कि शेडो को बाँध कर रखना और उन्होंने वैसा ही किया भी, पर वो कुछ ज्यादा ही उतावले स्वभाव के थे और बोले उसे क्यों बांध रखा है, खोल दीजिये। मैंने धीमे स्वर में कहा- सर वो खतरनाक है, तो बोले कि छोड़ो यार, मैंने बड़े-बड़े कुत्ते पाले हैं। मुझे पता है, उन्हें कैसे हैंडल किया जाता है। और मेरी तरफ देखकर मुस्कराए भी, पर जैसे ही श्रीमती जी ने उसे खोला, वह फिल्मी हीरो की तरह कूदते हुए उनके चेहरे को निशाना बना चुका था। मेरी तो आवाज ही बंद हो गयी। ‘शेडो स्टॉप’ ‘शेडो स्टॉप’ का उच्चारण इतना कठिन प्रतीत हो रहा था मानो मलयालम भाषा में गीत गाने को कह दिया गया हो। देखते ही देखते उनके चेहरे से खून की धारा फूट पड़ी, जो उनकी कुरूपता को और बढ़ा रही थी। बॉस के इलाज का तीस हजार भरने के बाद उनकी कृपा दृष्टि के रूप में मुझे नौकरी से वी आर एस ही लेना पड़ा। और मैं भी कम कष्ट नहीं उठा रहा हूँ, पत्नी जी अपने हाथों से उसे खाना खिलाती है वो न खाए तो उनका मूड खराब, जिसका खामियाजा मुझे ही भुगतना पड़ता है।

मुझ गरीब को भी भूख लगती है, ये ध्यान भी नहीं रहता। पूरे घर में शेडो के जुल्फे गिरती रहती। मजाल है कि सफाई पसंद पत्नी जी ने कभी भी उसका बुरा माना हो, और तो और शेडोजी बिंदास रूप से साधिकार बिस्तर पर अपना कब्जा जमाते और मुझ गरीब को सोफे पर ही रात बितानी पड़ती। ये सारी बातें, वो एक साँस में ही बता गये।

ये तो थी एक दुखी आत्मा की आपबीती। अब एक दूसरा पहलू भी जाने हमारे प्रिय चाचा जी के पुत्र को कुत्ते बेहद पसंद है। बचपन से ही गली के कुत्ते के बच्चों को रोटी और अपने हिस्से के दूध को भी उन्हें पिला देना, उनके रोजाना कामों में शामिल था। और तो और विवाह के बाद पत्नी भी कुत्ता प्रेमी निकली। अब उनके कुत्तों के भाग्य से किसी को भी ईर्ष्या हो सकती है। पूना में नौकरी के दौरान वरुण ने दो कुत्ते पाले थे पर अब उसे जॉब की वजह से कनाडा सपत्नी जाना था, समस्या ये थी कि दोनों कुत्तों का क्या किया जाये? पत्नी जी ने कह दिया कि वो उन के बिना नहीं जायेंगी। फिर क्या, उन दोनों को विशेष ट्रेनर द्वारा हवाई यात्रा की एक महीने की विशेष ट्रेनिंग दी गई (काश, इन्सानों के लिए भी ऐसी व्यवस्था होती) मात्र तेरह हजार के खर्च से उन्हें ट्रेड किया गया कि कैसे वो हवाई यात्रा करें और फिर वरुण जी सपरिवार कनाडा पहुँच गये। कहानी यहाँ खत्म नहीं हुई दोस्त, अब वो दम्पति उन्हें हर वीक-एंड में पिकनिक और झीलों के किनारों पर घुमाने ले जाते और बेहद शानदार ढंग से उन्हें सजा कर उनकी तस्वीरें फेसबुक पर अपलोड की जाती और उन दोनों ने खुद को दोनों कुत्तों का मम्मी पापा कहलवाना पसंद किया। वे दोनों उतना ही प्यार दुलार पा रहे थे जितना एक संतान हकदार होती। लेकिन मुसीबत बता कर नहीं आती है, कुत्तों के ज्यादा भौकने पर पड़ोसियों द्वारा शिकायत पर उन्हें घर खाली करने का नोटिस मिल गया। किसी तरह लिखित माफी और आश्वासन पर एक माह का टाइम दिया, जिसके लिए यह भी इंतजाम

किया गया कि एक बड़ी एलसीडी ढाई सौ डालर की खरीदी गई और तकनीकी ट्रेनिंग से फोन के माध्यम से उनसे बाजार जाने पर भी निर्देश दिए जा सके और वो आपनी माँ से खुद को दूर न माने और कम भौके। एक और जानकारी मिली कि कुत्तों के लिए एक विशेष प्रकार का पट्टा भी है, उसे पहन लेने पर ज्यादा तेज आवाज होने पर करंट लगता और आवाज खुद-ब-खुद धीमी हो जाती (कृपया ख्याली पुलाव न पकाए वह सिर्फ नेकलेस का ही काम करेगा)। धन्य है, तकनीक और उसे प्रयोग करने वाला मानव।

उपरोक्त दोनों प्रकरणों में, ऑडिट की नजर से मात्र व्यय की बात दीख रही थी पर व्यय के साथ-साथ भुगतान भी मिला है। मेरी एक परिचित अपनी बेटी से मिलने अमेरिका गयी हुई थी लेकिन एक दिन इवनिंग वाक पर एक कुत्ते ने उन्हें दौड़ा लिया, जिसकी वजह से वो गिर पड़ी और उनके हाथ की हड्डी टूट गई थी। उन्हें विदेशी उपचार, जो लगभग फाइव स्टार की सुविधाओं से परिपूर्ण था और उस इलाज पर खर्च हुई धनराशि भारतीय मुद्रा के अनुसार ढाई लाख थी और उसका भुगतान भी उसी कुत्ते के मालिक को करना पड़ा। और वह महिला इसी बात पर खुश थी कि वह मुफ्त में विदेश में अपना इलाज करा आयी। मुझे तो अकसर एक धुन याद आ जाती है कि-

**क्या क्या न सहे हमने सितम डोंग की खातिर,
ये जान भी जाएगी सनम, डोंग की खातिर।**

आज सब खुश हैं

सब खुश हैं। उनके घर आज खुशी का वातावरण है। उनके घर आज मेहमान आए हैं। मेहमान धरती पर प्रथम बार आए हैं। जी हाँ, उनके घर शिशु आए हैं। शिशुओं की माता अत्यंत कष्ट में अस्पताल लाई गई थीं। वह चाक-चौबन्द व्यवस्था में लाई गई थीं। वह एक छोटे शहर में निवास करती थीं। बड़े घर से हैं। अच्छे खानदान से हैं। रीढ़ उच्च कुल की है। कहीं कोई खोट नहीं है। घर पर नर्स-डॉक्टर सब बुलाये गए थे। यूँ कहिए कि घर पर एक टेम्पोरेरी अस्पताल की तरह एक कमरे को परिवर्तित कर दिया गया था। पर कष्ट अधिक था। शहर छोटा था। उनका रुतबा-रसूख बड़ा था, इसलिए कष्ट बड़ा होना गंवारा नहीं था। तमाशा है क्या! बड़े लोगों का कष्ट तो, कम से कम छोटा होना चाहिए। कुछ गरीबों को भी तो मिले। सो, यह तय पाया गया कि माता को बड़े शहर, माने कि लखनऊ ले जाया जाये। फटाफट बड़ी वाली यानि कि सरकारी एम्बेसेडर, टेकेदारों की सफारी, बड़े वकीलों की होंडा सिटी हाजिर हो गई। सरकारी एंबुलेंस भी काफिले में शामिल हो गई। दो डॉक्टर, तीन नर्स, एक ड्राइवर और चार वार्ड बॉय के साथ। सारे रास्ते के थानों को वायरलेस मोबाइल पर सूचित कर दिया गया। वी. आई.पी. माता के लिये रास्ता साफ। तेज रफ्तार से कष्टमयी माता को



सुनील कुमार पाण्डेय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्या-प्र.म.ले.(आ.एवं रा.ले.प.) उ.प्र., लखनऊ
(यू.आई.डी.ए.आई. विभाग में प्रतिनियुक्ति पर)

लखनऊ के बड़े निजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया। रात भर शहर के नामी-गिरामी लोग, आला अफसर, जिम्मेदार मातहत, दूरदृष्टा टेकेदार जागते रहे। भोर चार बजे डॉक्टर ने बाहर आकर सूचित किया कि जच्चा-बच्चा ठीक हैं। सब ने राहत की सांस ली। परिवार ने जानकारी प्राप्त कर सबको बताया कि उनकी परम प्यारी कुतिया ने सात शिशुओं को जन्म दिया है। मुबारकबाद के बाद, हाथों-हाथ प्रति शिशु एक-एक लाख दाम लग गए। जज साहब खुश हुये। सब खुश हुये।



साइबर सुरक्षा

नितनेम सिंह सोडी

पुत्र श्री जे.एस. सोडी
सहायक लेखा अधिकारी
कार्या-महालेखाकार(ले.एवं हक.) II
शाखा-लखनऊ



इन दिनों हमारा अधिकांश जीवन साइबर दुनिया पर आधारित है- कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल, जो कुछ भी इंटरनेट से जुड़ा है, सब साइबर दुनिया के भाग है। इस साइबर जगत में जो अपराध होते हैं, उन्हें हम साइबर क्राइम कहते हैं- जिसमें सबसे मुख्य अपराध है हैकिंग- मतलब चोरी; डेटा (जानकारी) की चोरी। यहाँ हम आपको 10 नियम बता रहे हैं जिनका पालन करके आप अधिकांश प्रकार के साइबर क्राइम/हैकिंग से सुरक्षित रह सकते हैं-

पहला नियम- सबसे महत्वपूर्ण - कंप्यूटर/लैपटॉप/मोबाइल पर काम करते समय कहीं पर भी किसी भी अज्ञात लिंक या बटन पर कभी भी क्लिक न करें। इससे आपके कंप्यूटर/लैपटॉप/मोबाइल की महत्वपूर्ण जानकारी और आपके निजी डेटा की हैकिंग संभव है। इसलिए सिर्फ उन्ही लिंक एवं बटन पर क्लिक करें, जिनके बारे में आपको जानकारी हो कि उन पर क्लिक करने से आगे क्या होने वाला है।

दूसरा नियम- सोशल मीडिया जैसे कि फेसबुक, वाट्सएप्प, इन्स्टाग्राम, इत्यादि पर, कभी भी अपनी निजी जानकारी, अपने निजी जीवन का विवरण, निजी फोटोज, आदि को कभी भी साझा न करें। आपकी निजी जानकारी/तस्वीरों को आपके खिलाफ इस्तेमाल किया जा सकता है। किसी अनजान व्यक्ति पर, कभी भी ऑनलाइन एवं कॉल पर भरोसा न करें एवं उसको अपने बारे में कोई भी जानकारी न दें।

तीसरा नियम- अपने सारे पासवर्ड को हर हफ्ते बदलते रहें। हर हफ्ते पासवर्ड्स बदलने से आप निश्चित हो सकते हैं कि आपके पासवर्ड सुरक्षित है। साथ ही अपने पासवर्ड को सरल न रखें- आपके पासवर्ड थोड़े मुश्किल होने चाहिए जिसका कोई भी आसानी से अनुमान न लगा सके। अगर आपको किसी कारण से अपना पासवर्ड किसी और को बताना पड़े, तो काम हो जाने के बाद अपना पासवर्ड जरूर बदल दें।

चौथा नियम- अपने कंप्यूटर/लैपटॉप/मोबाइल पर एन्टी-वाइरस एवं फायरवाल सॉफ्टवेयर जरूर रखें। अगर आप खुद इंस्टॉल न कर सके, तो किसी और जानकर व्यक्ति से इंस्टॉल करवा लें, लेकिन एंटीवायरस और फायरवाल सॉफ्टवेयर का कंप्यूटर/लैपटॉप/मोबाइल में होना अत्यंत आवश्यक है उसकी सुरक्षा के लिए।

पाँचवा नियम- अपने निजी कार्यों को अपने कार्यालय के कार्यों से कभी मिश्रित न करें। ऑफिस के कंप्यूटरों पर अपना निजी काम न करें, और अपने घर के कंप्यूटर/लैपटॉप एवं मोबाइल पर ऑफिस का काम न करें, जब तक आपके पास वरिष्ठ अधिकारी की अनुमति न हो। साइबर कैफे जैसे सार्वजनिक कंप्यूटरों पर कोई भी काम करने से बचें। अगर किसी कारणवश, किसी सार्वजनिक कंप्यूटर पर आपको कोई

लॉगिन करना पड़े, तो काम पूरा होने के बाद अवश्य ही लॉग-आउट कर दें।

छटवाँ नियम- अपने मोबाइल/कंप्यूटर/लैपटॉप पर कोई भी अनजान ऐप्प/सॉफ्टवेयर को कभी भी इनस्टॉल न करें। किसी दूसरे व्यक्ति के मोबाइल पर अपना कोई भी एकाउंट/ई-मेल को लॉगिन न करें। ऐप्स को सिर्फ गूगल प्ले-स्टोर से ही डाउनलोड करें।

सातवाँ नियम- अपने महत्वपूर्ण डेटा जैसे कि महत्वपूर्ण इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेज, इत्यादि का बैक-अप जरूर बना कर रखें। बैक-अप मतलब उन महत्वपूर्ण फाइलों की एक से ज्यादा प्रति बना कर ऑनलाइन ई-मेल या पेन ड्राइव में सेव रखें। ऐसा करने से अगर वह महत्वपूर्ण फाइल आकस्मिक रूप से डिलीट हो जाये तो आपका काम न रुके।

आठवाँ नियम- अगर आप नेट बैंकिंग, ऑनलाइन शॉपिंग या किसी भी प्रकार का पैसों का डिजिटल/ऑनलाइन लेन-देन करते हैं, तो ध्यान रखें कि आप अपनी क्रेडिट/डेबिट कार्ड या यू.पी.आई. संबंधित जानकारी, सी.वी.वी. नंबर, आदि जिस भी वेबसाइट या ऐप्प में डाल रहे हैं, वह वास्तविक हैं; वह वेबसाइट/ऐप्प फर्जी/नकली न हो। यह सारी जानकारी, आपसे कभी भी अगर फोन कॉल या मैसेज से पूछी जाए, तो कभी न बताएं।

नौवाँ नियम- किसी भी वेबसाइट पर अगर आप अपनी कोई भी निजी जानकारी या पासवर्ड डाल रहे हैं तो ये जरूर निश्चित कर लें कि स्क्रीन के सबसे ऊपरी भाग में जो यू.आर.एल. बार (Bar) है (जिसमें वेबसाइट का लिंक लिखा जाता है) उसमें वेबसाइट का लिंक एकदम सही हो और उसके बायीं तरफ एक छोटा-सा हरे रंग का ताला बना दिख रहा हो। अगर आपको वेबसाइट का लिंक दिखने में थोड़ा-सा भी गलत लगे या हरे रंग का ताला न दिखे तो उस वेबसाइट में अपनी कोई निजी जानकारी या पासवर्ड न डालें।

दसवाँ नियम- अगर आपको कभी भी, ऐसा एहसास हो कि आपके साथ हैकिंग या किसी भी प्रकार का साइबर क्राइम हो रहा है तो तुरंत किसी जानकार, वरिष्ठ अधिकारी या पुलिस की मदद लें। इन मामलों में देरी नहीं करनी चाहिए।

अगर आप उपरोक्त 10 नियमों का सावधानीपूर्वक पालन करेंगे तो आप अधिकांश साइबर क्राइम से सुरक्षित रह सकते हैं। याद रखिये, जो चीज आप वास्तविक जगत में नहीं करना चाहते हैं, तो उसे आप साइबर जगत में भी न करें। आपकी हर एक गतिविधि, जो आप साइबर जगत में करते हैं; फोन, लैपटॉप, कंप्यूटर, इंटरनेट पर की गयी हर एक गतिविधि, सब कुछ दर्ज होता रहता है।

आपके पत्र/आशीर्वाद/प्रतिक्रिया

धन्यवाद ज्ञापन

राजभाषा हिन्दी पत्रिका 'संधान' के प्रथम अंक के बारे में भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के बहुत से कार्यालयों से बेहद उत्साहजनक प्रतिक्रियाएं आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त हुईं। प्रतिक्रियाओं में 'संधान' के प्रथम अंक की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। न केवल संधान में प्रकाशित लेखों एवं रचनाओं को सराहा गया, बल्कि पत्रिका के रूप एवं कलेवर की भी प्रशंसा की गई। आपकी इतनी उत्साहजनक प्रतिक्रिया, हमें न केवल पत्रिका के सम्पादन में और उत्तरदायी बनाती है बल्कि पत्रिका को और बेहतर बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। सम्पादक मण्डल एवं समस्त संधान परिवार की ओर से, आप सभी का इस आशा के साथ कोटि-कोटि हार्दिक आभार कि आगामी अंकों के लिए भी हमें आपका आशीर्वाद इसी प्रकार मिलता रहेगा।

संपादक मण्डल 'संधान'

महोदय,

आपके पत्र सं.: अ.प्र. समन्वय/व. एवं से.क.प्र./प.सं. 17/2019 20/92 (संधान) जुलाई 2019 के साथ आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'संधान' के प्रथम अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। स्थानीय इमारतों से परिचय कराता पत्रिका का मुखपृष्ठ एवं पत्रिका में समाहित छायाचित्र पत्रिका को आकर्षक कलेवर प्रदान करते हैं। पत्रिका में सम्मिलित की गई सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक, रोचक व संग्रहणीय हैं। लेख "ऑडिट भवन लखनऊ तक का सफर", "अथातो भुलक्कड़ी परिभाषा", "कुम्भ मेला एक आस्था का प्रतीक", "आत्म प्रबंधन कौशल", "ई-गवर्नेंस" एवं कवितायें "आक्रमण", "सफलता" और "वक्त" विशेष रूप से सराहनीय हैं। पत्रिका के सफल सम्पादन तथा प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

मोनिका वर्मा, महालेखाकार

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) II, उ०प्र० प्रयागराज

प्रिय श्री कुमार जी

मुझे अपार हर्ष है कि कार्यालय प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा, (केन्द्रीय) लखनऊ ने अपनी गृह राजभाषा पत्रिका "संधान" को प्रकाशित किया है। कार्यालय ने इस राजभाषा हिन्दी की गृह पत्रिका को प्रकाशित करके राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के नीति निर्देशों के अनुपालन में उसका पूर्णरूपेण पालन किया है। यह एक अति विशिष्ट कार्य है। पत्रिका में मुद्रित अलंकृत लेख, कविता एवं अन्य रचनाएँ अत्यंत रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक हैं। मैं पत्रिका "संधान परिवार" के अभिन्न अंग और पत्रिका के मुख्य संरक्षक के रूप में इस असाधारण एवं अनन्य कार्य के लिए आपको भूरि-भूरि बधाई देता हूँ। शुभकामनाओं सहित

सोम नाथ चान्देल, अपर महानिदेशक एवं अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजभाषा विभाग, भारत सरकार

महोदय,

ऑडिट भवन, लखनऊ स्थित लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्यालयों की संयुक्त हिन्दी पत्रिका "संधान" प्रथम अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। समाविष्ट सभी रचनाएँ सुपाठ्य, उत्कृष्ट, एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी, (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, आर्थिक एवं सेवा मंत्रालय

ए.जी.सी.आर. भवन आई.पी.एस्टेट, नई दिल्ली-110002

महोदय,

हिन्दी पत्रिका 'संधान' के प्रथम अंक की प्राप्ति हुई है। अपार हर्ष के साथ पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। शैलेन्द्र कुमार द्वारा लिखित लेख "ऑडिट भवन लखनऊ तक का सफर" अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं सूचनाप्रद है। बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी द्वारा लिखित "आत्म प्रबंधन कौशल" एक महत्वपूर्ण एवं रोचक लेख है। लीना दरियाल द्वारा लिखित लेख "महिला सशक्तिकरण और शिक्षा" सर्वाधिक रोचक एवं प्रेरणादायी है। "हँसना सबसे अच्छी दवा है" श्री आदर्श कुमार कर्ण द्वारा लिखित लेख प्रेरणादायक एवं हास्य प्रद है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, मौलिक, ज्ञानवर्धक एवं पाठनीय हैं। पत्रिका का मुख्यपृष्ठ अत्यन्त लुभावना है। पत्रिका का प्रथम अंक विविध विषयों को प्रतिबिम्बित करती है। हिन्दी भाषा के सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है।

लेखापरीक्षा अधिकारी, अप्रत्यक्ष कर

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ

शाखा कार्यालय, राँची डोरण्डा, झारखंड-834002

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका 'संधान' का प्रथम अंक पत्र सं. अ.प्र. समन्वय/व.एवं से.क.प्र./प.सं. 17/2019-20/संधान 02 दिनांक: 17.07.2019 प्राप्त हुआ। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ अत्यंत सुपाठ्य, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। ये सभी रचनाएँ अत्यंत रुचिकर तथा प्रासंगिक भी हैं। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में से श्री शैलेंद्र कुमार शर्मा का आलेख 'ऑडिट भवन' लखनऊ तक का सफर, श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव द्वारा रचित "ईश्वर को धन्यवाद", श्री राम जनम राय की कविता आक्रमण (द सर्जिकल स्ट्राइक), श्री अर्जुन राम का लेख 'लखनऊ का बड़ा मंगल', श्री प्रभाकर दूबे की कविता अर्धांगिनी, सुश्री समृद्धि राय द्वारा रचित 'पंचकुएशन अर्थात् विराम चिह्न', श्री विनय प्रसाद का आलेख 'विचारधारा', श्री शशिकान्त सक्सेना द्वारा रचित 'बंधनमुक्त ऑफिसर्स ग्रुप', सुश्री आभा पाण्डेय की कविता 'अश्रु मेरे', श्री राजेश कुमार स्वयंभू का संस्मरण 'घर से छात्रावास - एक संस्मरण', श्री बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी द्वारा रचित 'आत्म-प्रबंधन कौशल', श्री राम जनम राय का आलेख 'ई-गवर्नेंस', आदि विशिष्ट रूप से सराहनीय हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

हिन्दी अधिकारी/राजभाषा

महानिदेशक, लेखापरीक्षा का कार्यालय, केन्द्रीय, कोलकाता

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "संधान" के प्रथम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनायें उच्च कोटि हैं, विशेषकर सुश्री आभा पांडेय द्वारा लिखित "अश्रु मेरे", श्री विनय प्रसाद द्वारा लिखित "विचारधारा" तथा श्री विजय शंकर वर्मा द्वारा लिखित "दानव हुआ त्रिदेव" अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय सराहनीय है, पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

लेखापरीक्षा अधिकारी, राजभाषा

महानिदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय, मुम्बई का कार्यालय,

सी-25, ऑडिट भवन, बांद्रा-कुर्ला संकुल, बांद्रा (पूर्व), मुंबई-400051

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "संधान" के प्रथम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। पत्रिका का सम्पादन एवं रचनाकारों की रचनात्मकता आपका राजभाषा के प्रति समर्पण भाव प्रदर्शित करती है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक एवं सारगर्भित हैं तथा रचनाओं के मध्य समाहित छायाचित्र विषयों की सजीवता को अभिव्यक्त करते हैं। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्री मनमीत कुमार (कुम्भ मेला एक आस्था का प्रतीक), राम जनम राय (आक्रमण द सर्जिकल स्ट्राइक), श्री विनय कुमार दीक्षित (नर हो, न निराश करो मन को), श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव (फिर आया मौसम चुनाव का), श्री राम औतार प्रसाद (सिहर जाता हूँ), श्री आदर्श कुमार कर्ण (हँसना सबसे अच्छी दवा है) एवं सुश्री मनीषा किरण (हौसलों की उड़ान) आदि की रचनाएं काफी रोचक एवं उल्लेखनीय हैं। पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु हार्दिक बधाइयाँ। कार्यालय परिवार पत्रिका की अविरल प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

लेखाधिकारी/हिन्दी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-I, उ.प्र., प्रयागराज

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "संधान" के प्रथम अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका की साज-सज्जा भी बहुत सुन्दर है। कविताएँ एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। श्री बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी द्वारा लिखित लेख "आत्म-प्रबंधन कौशल", श्री राम जनम राय द्वारा लिखित कविता 'आक्रमण (द सर्जिकल स्ट्राइक)', श्री शैलेंद्र कुमार शर्मा द्वारा लिखित कविता "चर्चा है शैतानों में", श्री विनय प्रसाद लिखित कविता "सफलता", श्रीमती पूर्णिमा टंडन द्वारा लिखित लेख "धन से नहीं, ईसानियत से प्यार करो" और सुश्री मनीषा किरण द्वारा लिखित कविता "हौसलों की उड़ान" सर्वाधिक रोचक एवं शिक्षाप्रद हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष

कार्यालय-प्रधान महालेखाकार(आ. एवं राज. क्षेत्र ले.प.) प. बंगाल, कोलकाता

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "संधान" के प्रथम अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। मुझे इस बात की अत्यंत खुशी है कि आपके कार्यालय द्वारा हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन किए जाने से राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में एक ओर कड़ी जुड़ गई है। और यह वास्तव में गौरव का विषय है कि प्रत्येक कार्यालय द्वारा हिन्दी के उत्थान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया जा रहा है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुद्रण उच्च कोटि का है एवं पत्रिका के भीतर के छायाचित्रों ने इसे ओर भी आकर्षक बना दिया है। पत्रिका

के कुशल संपादन व सहयोग हेतु सम्पादक मण्डल एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वीरेंद्र सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा अनुभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षेत्र लेखापरीक्षा) जयपुर, राजस्थान

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका “संधान” के प्रथम अंक की एक प्रति इस कार्यालय में प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका का शीर्षक बहुत ही आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। ‘इलाहाबाद और छायावाद’, ‘आंकड़ों पर टिके हुए हम डिजिटल’, ‘सफलता’, ‘आक्रमण’, नर हो, न निराश करो मन’ एवं ‘शख्सियत-पद्मश्री के.पी. सक्सेना’ उत्कृष्ट है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
‘लेखापरीक्षा भवन’, 361, अण्णा सालै, तेनामपेट, चेन्नै

महोदय,

‘ऑडिट भवन’ लखनऊ स्थित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्यालयों के संयुक्त प्रयासों से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका “संधान” के प्रथम अंक की प्रति प्राप्त हुई। ऑडिट भवन से सुसज्जित पत्रिका का मुखपृष्ठ अनूठा है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ जैसे कुम्भ मेला एक आस्था का प्रतीक, नर हो न निराश करो मन को, लखनऊ का मंगल, शख्सियत-पद्मश्री के.पी. सक्सेना, महिला सशक्तिकरण और शिक्षा तथा तकनीक के दुष्प्रभाव लेख एवं चर्चा है शैतानों में, सफलता, सिहर जाता हूँ, बादल से आशाएँ, अर्धांगिनी, हौसलों की उड़ान तथा महसूस कविताएँ अत्यंत रोचक व उत्कृष्ट हैं हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा)-III, महाराष्ट्र
प्रतिष्ठा भवन, तल मंजिल, 101, महर्षि कर्वे मार्ग, मुंबई-400020

महोदय

आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई हिंदी गृह पत्रिका ‘संधान’ के प्रथम अंक की एक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख व रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक हैं। श्री यश मालवीय, हिंदी के कई विधाओं के धनी, कई सम्मानों से विभूषित आप एक उच्च कोटि के हिंदी विद्वान हैं। आपमें मन की उन्मुक्त उड़ानों को शब्दों में बांधने की अद्भूत कला है। आपकी “इलाहाबाद और छायावाद” पाठक के लिए एक अलग सोपान है। इनके अतिरिक्त श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव का “फिर आया मौसम चुनाव का”, श्री अर्जुन राम का “लखनऊ का बड़ा मंगल”, श्री प्रभाकर दुबे की “अर्धांगिनी”, श्री राम औत्तर प्रसाद का “सिहर जाता हूँ”, श्रीमती नीलम श्रीवास्तव का “वक्त” और सुश्री मनीषा किरण की “हौसलों की उड़ान” भी विशेषकर सराहनीय हैं। हिंदी पत्रिका के बहुमुखी विकास एवं उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, दक्षिण रेलवे, चेन्नै

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका ‘संधान’ प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद, पत्रिका का सम्पादन सराहनीय है। पत्रिका में सभी लेख एवं रचनाएं प्रशंसनीय हैं। विशेष तौर पर सच्चे मोती, सुख, झूठी धार्मिकता, तकनीक के दुष्प्रभाव, अर्धांगिनी, बादल से आशाएँ रचनाएँ प्रेरणादायक और सराहनीय हैं। पत्रिका का प्रवाह इसी प्रकार निरंतर चलता रहे, ऐसी कामना है।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (आ. एवं रा. क्षेत्र लेखापरीक्षा) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, भोपाल-462011

विशेष सूचना

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के सभी कार्यालयों में कार्यरत सभी सदस्यों से अनुरोध है कि वे ‘संधान’ में प्रकाशन हेतु अपनी गद्य/पद्य लेख एवं रचना निम्नलिखित ईमेल अथवा पते पर भेजें। रचना/लेख के साथ अपना नाम, पदनाम, फोन नं., कार्यालय का नाम, अपनी विभागीय आई.डी. भी भेजें। रचना/लेख किसी राजनीतिक विचारधारा से प्रेरित न हो और न ही किसी समुदाय, धर्म विशेष, जाति एवं वर्ग को आहत करने वाली न हो। प्राप्त रचनाओं/लेख में से आगामी अंक में एक श्रेष्ठ गद्य रचना एवं एक श्रेष्ठ पद्य रचना को प्रकाशित किया जायेगा।

पता : वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन), कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ, तृतीय तल, ‘ऑडिट भवन’, टी.सी.-35-वी-1, विभूतिखण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ-226010 ई-मेल : sao-admn.luk.cca@cag.gov.in

“ऑडिट भवन” लखनऊ स्थित कार्यालयों के (जुलाई-दिसम्बर 2019) कार्यकलाप

पदभार ग्रहण

दिनांक 22 जुलाई 2019 को श्री जयंत सिन्हा, प्रधान महालेखाकार (आ. एवं राज. लेखापरीक्षा) उत्तर प्रदेश, लखनऊ ने कार्यभार ग्रहण किया।

विदाई

दिनांक 17 जुलाई 2019 को श्री सौरभ नारायण, महालेखाकार (आ. एवं राज. लेखापरीक्षा) उत्तर प्रदेश, लखनऊ को स्थानान्तरण के उपरान्त विदाई दी गई।

दिनांक 31 दिसम्बर 2019 को श्री इन्द्र कुमार, वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) कार्यालय महालेखाकार (आ. एवं राज. लेखापरीक्षा) उत्तर प्रदेश, लखनऊ को सेवानिवृत्ति उपरान्त विदाई दी गई।

हिन्दी पखवाड़ा

ऑडिट भवन स्थित सभी कार्यालयों द्वारा सितंबर 2019 के विभिन्न सप्ताहों में हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें सभी कर्मचारी/अधिकारीगणों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभागिता की।

पेंशन एवं भविष्य निधि अदालत 2019

महालेखाकार (ले. एवं हक.) II, प्रयागराज के शाखा कार्यालय लखनऊ द्वारा दिनांक 23 अगस्त 2019 को पेंशन एवं भविष्य निधि अदालत का आयोजन किया गया, जिसमें सुश्री फुलजैसिया खेसस, वरिष्ठ उपमहालेखाकार (पेंशन), श्री राजीव कुमार सक्सेना, वरिष्ठ लेखा अधिकारी एवं श्री जगजीत सिंह सोडी, सहायक लेखा अधिकारी ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में श्री राकेश कुमार त्रिपाठी, अपर निदेशक, कोषागार, लखनऊ, श्री अशोक कुमार सिंह, अपर निदेशक, पेंशन (पेंशन निदेशालय, लखनऊ), श्री इन्द्रजीत विश्वकर्मा, अपर निदेशक, कोषागार एवं पेंशन, लखनऊ मण्डल, लखनऊ एवं श्री संजय सिंह, मुख्य कोषाधिकारी, लखनऊ भी उपस्थित रहे। इस अदालत में विभिन्न विभागों के पेंशन एवं निधि से संबंधित शिकायतों का निवारण किया गया।

उपलब्धियाँ

नवम्बर-दिसम्बर, 2019 में इथोपिया एवं केन्या में प्रधान निदेशक श्री राजकुमार, द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ के अंतर्गत यूनेस्को के लेखों की लेखापरीक्षा का सफलतापूर्वक सम्पादन किया गया।

खेलकूद

खेलकूद के क्षेत्र में गत छमाही में ए.जी.यू.पी. की हॉकी टीम ने वर्ष 2019 की अखिल भारतीय (आई.ए. एण्ड ए.डी.) हॉकी प्रतियोगिता एवं उत्तर क्षेत्रीय (आई.ए. एण्ड ए.डी.) हॉकी प्रतियोगिता में विजयी होकर ट्रॉफी जीतीं।

1. श्री आशीष मिश्रा, वरिष्ठ संप्रेक्षक (कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) उ.प्र. लखनऊ), श्री अभिषेक सिंह, वरिष्ठ संप्रेक्षक (कार्यालय प्रधान महालेखाकार, आ. एवं राज. क्षेत्र ले.प., उ.प्र. लखनऊ) एवं श्री चन्दन कुमार, वरिष्ठ संप्रेक्षक (कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा केन्द्रीय शाखा-केन्द्रीय व्यय, प्रयागराज) ने हॉकी टीम के सदस्य के रूप में उत्तर क्षेत्रीय एवं अखिल भारतीय (आई.ए. एण्ड ए.डी.) हॉकी प्रतियोगिता में विजयी होने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
2. श्री वीरेंद्र कुमार श्रीवास्तव, वरिष्ठ लेखापरीक्षक (कार्यालय-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ, शाखा-प्रयागराज) ने ए.जी.यू.पी. की टेबल टेनिस टीम के सदस्य के रूप में उत्तर क्षेत्रीय (आई.ए. एण्ड ए.डी.) टेबल टेनिस प्रतियोगिता में विजयी होने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। साथ ही टेबल टेनिस (आई.ए. एण्ड ए.डी.) मास्टर्स (वेटेरन्स) प्रतियोगिता में उपविजेता होकर कार्यालय को गौरवान्वित किया।
3. श्रीमति आभा पाण्डेय, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, (कार्यालय-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ, शाखा-प्रयागराज) द्वारा टेबल टेनिस (आई.ए. एण्ड ए.डी.) मास्टर्स (वेटेरन्स) प्रतियोगिता में राज्य में प्रथम स्थान के साथ विजेता ट्रॉफी प्राप्त की।
4. श्री हर्षित जायसवाल, वरिष्ठ संप्रेक्षक (कार्यालय-प्रधान निदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ, शाखा-प्रयागराज) ने कार्यालय की टेबल टेनिस टीम के सदस्य के रूप में उत्तर क्षेत्रीय (आई.ए. एण्ड ए.डी.) टेबल टेनिस प्रतियोगिता में विजयी होने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

त्रुटि सुधार- संधान पत्रिका के प्रथम अंक पृष्ठ संख्या 46 पर पेंशन एवं भविष्य निधि अदालत 2018 शीर्षक के अन्तर्गत श्री राम नाइक, उपमहालेखाकार (निधि) के स्थान पर श्री दिनेश नाइक, उपमहालेखाकार (निधि) समझा जाये। त्रुटि के लिए क्षमा।

जुलाई 2019 से दिसम्बर 2019 की अवधि में निष्ठा के साथ, भारत सरकार में कर्तव्य निर्वहन करते हुये अधिवार्षिकी पर सेवानिवृत्त हुये सभी कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए 'संधान परिवार' स्वस्थ एवं मंगलमय दीर्घ जीवन की कामना करता है। साथ ही इस अवधि में पदोन्नति पाये सभी कर्मचारियों/अधिकारियों को हार्दिक शुभकामनायें।

पदोन्नतियाँ

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम	प्रभावी तिथि	क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम	प्रभावी तिथि
1	आर.सी. जोशी	व.ले.प.अ.	20.11.2019	4	सत्यशील	व.ले.प.अ.	20.11.2019
2	अर्जुन राम	व.ले.प.अ.	20.11.2019	5	उदय पाल सिंह	व.ले.प.अ.	20.11.2019
3	विनय कुमार सिंह	व.ले.प.अ.	20.11.2019				

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ, शाखा-केन्द्रीय व्यय, प्रयागराज

1	पंकज कुमार सिंह	व.ले.प.अ.	20.11.2019	3	सत्य प्रकाश	व.ले.प.अ.	20.11.2019
2	शिव लाल	व.ले.प.अ.	20.11.2019	4	राजपत	व.ले.प.अ.	20.11.2019

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ, शाखा-अप्रत्यक्ष कर, प्रयागराज

1	अरुण कुमार शर्मा	व.ले.प.अ.	20.11.2019	4	उमा शंकर अवरथी	व.ले.प.अ.	20.11.2019
2	प्रभा शंकर तिवारी	व.ले.प.अ.	20.11.2019	5	मो. आबिद अखतर	व.ले.प.अ.	20.11.2019
3	राजेश कुमार द्विवेदी	व.ले.प.अ.	20.11.2019	6	गिरधर गोपाल गुप्ता	व.ले.प.अ.	20.11.2019

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ, शाखा- राँची

1	हेमंत कुमार सरदार	व.ले.प.अ.	20.11.2019	5	कुमार शिवेंद्र	व.ले.प.अ.	20.11.2019
2	सुनील कुमार वर्मा	व.ले.प.अ.	20.11.2019	6	अंजनी कुमार	व.ले.प.अ.	20.11.2019
3	ललित विकास	व.ले.प.अ.	20.11.2019	7	श्याम बिहारी प्रसाद	व.ले.प.अ.	20.11.2019
4	सूर्य नारायण कुमार	व.ले.प.अ.	20.11.2019	8	उग्रेस नारायण सौरभ	स.ले.प.अ.	20.11.2019

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ, शाखा- पटना

1	दीपक कुमार रजक	व.ले.प.अ.	20.11.2019	3	मनोज कुमार-V	व.ले.प.अ.	20.11.2019
2	दिलीप कुमार अरोड़ा	व.ले.प.अ.	20.11.2019	4	सुजीत कुमार	व.ले.प.अ.	20.11.2019

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आ. एवं रा.ले.प.), लखनऊ

1	आशुतोष शुक्ला	व.ले.प.अ.	20.11.2019	5	प्रवीण कुमार कनौडिया	व.ले.प.अ.	20.11.2019
2	इस्तियाक अंसारी	व.ले.प.अ.	20.11.2019	6	विवेक यादव	स.ले.प.अ.	19.09.2019
3	राकेश कुमार उपाध्याय	व.ले.प.अ.	20.11.2019	7	अनुराग सिंह चंदेल	स.ले.प.अ.	22.11.2019
4	आशीष कुमार	व.ले.प.अ.	20.11.2019				

कार्यालय डाक एवं दूरसंचार लेखापरीक्षा, लखनऊ

1	ज्ञान शंकर दीक्षित	ले.प.अ.	25.07.2019	3	शैलेंद्र सागर वर्मा	ले.प.अ.	15.10.2019
2	अनिल कुमार गुप्ता	ले.प.अ.	25.07.2019	4	अभिषेक गुप्ता	स.ले.प.अ.	15.10.2019

सेवानिवृत्तियाँ

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम	प्रभावी तिथि	क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम	प्रभावी तिथि
1	भरत नारायण	व.ले.प.अ.	31.07.2019				

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ, शाखा-केन्द्रीय व्यय, प्रयागराज

1	पी.सी. शर्मा	ले.प.अ.	31.07.2019	2	रमाकांत शर्मा	पर्यवेक्षक	31.08.2019
---	--------------	---------	------------	---	---------------	------------	------------

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ, शाखा- पटना

1	रमेश प्रसाद सिन्हा	व.ले.प.अ.	31.08.2019	2	प्रवीण चन्द्र मिश्रा	व.ले.प.अ.	30.09.2019
---	--------------------	-----------	------------	---	----------------------	-----------	------------

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आ. एवं रा.ले.प.), लखनऊ

1	इंद्र कुमार	व.उपमहालेखाकार	31.12.2019	2	दया शंकर श्रीवास्तव	व.ले.प.अ.	30.09.2019
---	-------------	----------------	------------	---	---------------------	-----------	------------

कार्यालय प्रधान महालेखाकार लखनऊ, शाखा, प्रयागराज

1	संजय घोष	व.ले.प.अ.	30.11.2019				
---	----------	-----------	------------	--	--	--	--

कार्यालय वरिष्ठ लेखा अधिकारी, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) II, लखनऊ

1	मनोज कुमार गुप्ता	स.ले.प.अ.	31.10.2019				
---	-------------------	-----------	------------	--	--	--	--

कार्यालय डाक एवं दूरसंचार लेखापरीक्षा, लखनऊ

1	बी.सी. जोशी	व.ले.प.अ.	31.12.2019	3	बंशराज	लेखापरीक्षक	31.08.2019
2	किशोरी लाल	व.ले.प.	30.11.2019				

15 अगस्त, 2019 को उत्कृष्ट सेवा के लिए पुरस्कृत हुये अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सूची

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम	क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम
1	संजय सकसेना	व.ले.प.अ.	9	अंकित पटेल	व. लेखापरीक्षक
2	संजीव कुमार श्रीवास्तव	स.ले.प.अ.	10	श्रीमती प्रियंका	व. लेखापरीक्षक
3	विनय शाह	स.ले.प.अ.	11	पुष्पेंद्र कुमार	लेखापरीक्षक
4	हीरा लाल	स.ले.प.अ.	12	सौरभ प्रताप सिंह	लेखापरीक्षक
5	पंकज मिश्रा	स.ले.प.अ.	13	आशीष कुमार	लेखापरीक्षक
6	तरुण कुमार	स.ले.प.अ.	14	राम कृपाकर	लेखापरीक्षक
7	श्रीमती रंजना आनंद	व्यैक्तिक सहायक	15	बृजेश भारती	आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक
8	महेंद्र कुमार	व. लेखापरीक्षक	16	रवि सिंह	आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ, शाखा— केन्द्रीय व्यय, प्रयागराज

1	अजय कुमार श्रीवास्तव	व.ले.प.अ.	5	विनोद कुमार सरोज	स.ले.प.अ.
2	शिव लाल	ले.प.अ.	6	शुगर सिंह मीना	लेखापरीक्षक
3	अशोक कुमार	स.ले.प.अ.	7	अनंत त्यागी	आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक
4	राजेंद्र प्रसाद	स.ले.प.अ.	8.	राजू कुमार	अभिलेखपाल

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ, शाखा— अप्रत्यक्ष कर, प्रयागराज

1	संजय कुमार	व.ले.प.अ.	4	आनंद कुमार	स.ले.प.अ.
2	राजेंद्र कुमार प्रसाद	स.ले.प.अ.	5	रजनीश कुमार श्रीवास्तव	स.ले.प.अ.
3	रवि सहगल	स.ले.प.अ.	6	आदर्श पांडे	लेखापरीक्षक

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ, शाखा— राँची

1	संदीप कुमार	स.ले.प.अ.	3	राणा नरेंद्र सिंह	व. लेखापरीक्षक
2	शंभू कुमार भगत	स.ले.प.अ.	4.	शशिकांत मिश्रा	व. लेखापरीक्षक

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ, शाखा— पटना

1	प्रदीप कुमार सिन्हा	व.ले.प.अ.	3	राम औतार प्रसाद	व.ले.प.अ.
2	अस्विनी कुमार	व.ले.प.अ.			

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आ. एवं रा.ले.प.), लखनऊ

क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम	क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम	क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम
1	डी.सी. शर्मा	व.ले.प.अ.	13	अमित कुमार चौधरी	स.ले.प.अ.	25	श्रीमती पुष्पा	व.ले.प.
2	रवीन्द्र सिंह	व.ले.प.अ.	14	शैलेश कुमार श्रीवास्तव	स.ले.प.अ.	26	हरिओम	व.ले.प.
3	शैलेश शुक्ला	व.ले.प.अ.	15	अवधेश कुमार चौबे	स.ले.प.अ.	27	अनुराग सिंह चंदेल	व.ले.प.
4	सुनील कुमार अग्रवाल	व.ले.प.अ.	16	संदीप गुप्ता	स.ले.प.अ.	28	उमाशंकर	ले.प.
5	एस.ई. रिजवी	व.ले.प.अ.	17	अनिल कुमार गुप्ता	स.ले.प.अ.	29	वीरेंद्र सिंह मीना	ले.प.
6	आनंद त्रिपाठी	स.ले.प.अ.	18	विशाल माहेश्वरी	स.ले.प.अ.	30	अजीत प्रताप सिंह	ले.प.
7	नरसी लाल मीना	स.ले.प.अ.	19	मिथिलेश कुमार	स.ले.प.अ.	31	सर्वजीत सिंह	आ.प्र.प्र.
8	सौरभ कुमार शर्मा	स.ले.प.अ.	20	आशीष बेनर्जी	स.ले.प.अ.	32	शिवम श्रीवास्तव	आ.प्र.प्र.
9	सौरभ कुमार	स.ले.प.अ.	21	दीपेंद्र मिश्रा	स.ले.प.अ.	33	सुशील कुमार सैनी	आ.प्र.प्र.
10	अरविंद मिश्रा	स.ले.प.अ.	22	श्रीमती पूनम	व.ले.प.	34	अर्जुन मिश्रा	एम.टी.एस.
11	आशुतोष बाजपेई	स.ले.प.अ.	23	राजेश शर्मा	व.ले.प.	35	अभिषेक मीना	एम.टी.एस.
12	गौरव कृष्ण श्रीवास्तव	स.ले.प.अ.	24	मंजेश कुमार मिश्रा	व.ले.प.	36	बृजेश मीना	एम.टी.एस.

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आ. एवं रा.ले.प.), लखनऊ, शाखा— प्रयागराज

क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम	क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम	क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम
1	आर.के. अग्रवाल	व.ले.प.अ.	7	राम पलट	स.ले.प.अ.	13	प्रीति सिंह	व.ले.प.
2	डी.पी. सिंह	ले.प.अ.	8	लाल जी	स.ले.प.अ.	14	हेमंत शर्मा	आ.प्र.प्र.
3	सुधीर कुमार शुक्ला	ले.प.अ.	9	गोविंद लाल	स.ले.प.अ.	15	चौद मोहम्मद	एम.टी.एस.
4	रमेश चन्द्र	ले.प.अ.	10	संजय कुमार प्रजापति	व.ले.प.	16	प्रदीप कुमार	एम.टी.एस.
5	राज कुमार यादव	स.ले.प.अ.	11	अनूप कुमार	व.ले.प.			
6	राजेश कुमार	स.ले.प.अ.	12	ओ.पी. सेन	व.ले.प.			

हिन्दी पखवाड़े में आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के परिणाम

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

विजेता	सुलेख	चित्रकला	चित्रलेखन	अनुवाद	पत्रलेखन	वाद-विवाद	कथा वाचन	निबन्ध
प्रथम	श्री रूपेश, ले.प.	श्री विनय प्रसाद, ले.प.	श्री विनय प्रसाद, ले.प.	श्री पुष्प कुमार मौर्य, स.ले.प.अ.	श्री विनय प्रसाद, ले.प.	श्री पंकज कुमार सिंह, व.ले.प.	श्री मनोज कुमार, ले.प.	श्री रवि सिंह, आं.प्र.प्र.
द्वितीय	सुश्री स्वाति गुप्ता, व.ले.प.	श्री अरुण कुमार वर्मा, ले.प.	श्री संजीव वर्मा, ले.प.	श्री रवि सिंह, आं. प्र.प्र.	श्री रवि सिंह, आं.प्र.प्र.	श्री पंकज चौबे, ले.प.	श्री पंकज मौर्य, ले.प.	श्री पंकज मौर्य, ले.प.
तृतीय	श्री रमेशेश्वर कुमार, ले.प.	सुश्री प्रियन्का दत्ता, व.ले.प.	श्री आदर्श कुमार कर्ण, स.ले.प.अ.	श्री आदर्श कुमार कर्ण, स.ले.प.अ.	श्री संजीव वर्मा, ले.प.	श्री ओमपाल, ले.प.	श्री अरुण कुमार वर्मा, ले.प.	श्री विपिन कुमार यादव, व.ले.प.

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आ. एवं रा.ले.प.), लखनऊ

विजेता	सुलेख	टंकण	अनुवाद	पत्रलेखन	हिन्दी कविता एवं सुगम संगीत	निबन्ध
प्रथम	विवेक यादव, व.ले.प.	आशुतोष बाजपेई, स.ले.प.अ.	गोविंद, हिन्दी अनुवादक	आनिल कुमार कमल, स.ले.प.अ.	आनंद त्रिपाठी, स.ले.प.अ. अर्जुन मिश्रा, एम.टी. एस.	आशुतोष बाजपेई, स.ले.प.अ.
द्वितीय	अनिल कुमार कमल, स.ले.प.अ.	संतोष कुमार, आशुलिपिक	आशुतोष बाजपेई, स.ले.प.अ.	संजीव चटर्जी, स.ले.प.अ.	राजेश कुमार, व.ले.प.अ. संजीव कुमार मिश्रा, एम.टी.एस. शालिनी रानी सिंह, स.ले.प.अ.	अजय कुमार सिंह, ले.प.
तृतीय	सिद्धार्थ शुक्ला, व.ले.प.	विवेक यादव, व.ले.प.	संजीव कुमार मिश्रा, एम.टी.एस.	विवेक यादव, व.ले.प.	दिव्या प्रकाश, व.ले.प. अजय श्रीवास्तव, एम.टी.एस.	संजीव कुमार मिश्रा, एम.टी.एस.

कार्यालय डाक एवं दूरसंचार लेखापरीक्षा, लखनऊ

विजेता	आशुभाषण	श्रुतिलेखन	बूझो तो जाने	अनुवाद	पत्रलेखन	प्रश्नोत्तरी	निबन्ध
प्रथम	अभिषेक कुमार, ले.प.	अभिनव त्रिपाठी, स.ले.प.अ. कमलेश कुमार, एम.टी.एस.	आरती सिंह, स.ले.प.अ. अभिषेक कुमार, ले.प.	जितेंद्र कुमार गंगवार, ले.प.	दीपक कुमार तिवारी, व.ले.प.	बी.सी. जोशी, व.ले.प.अ. विजेंद्र पाल, व.ले.प.अ. बी.पी. भंजदेव, ले.प.अ. अभिनव त्रिपाठी, स.ले.प.अ. सुजीत साहनी, आं.प्र.प्र. अखिलेश कुमार, आं.प्र.प्र.	दीपक कुमार तिवारी, व.ले.प.
द्वितीय	आरती सिंह, स.ले.प.अ. राहुल कात्यान, आं.प्र.प्र.	मनीषा किरण, आं.प्र.प्र. सुनील कुमार, एम.टी.एस.	सुनील कुमार, एम.टी.एस. संजीव सिन्हा, लिपिक	अभिषेक कुमार, ले.प.	संतोष कुमार, ले.प.	विकास सिंह, स.ले.प.अ. कृष्ण कुमार, व.ले.प. चंद्र प्रकाश, व.ले.प. जितेंद्र कुमार गंगवार, ले.प. अल्पना, ले.प.	राहुल कुमार कात्यान, आं.प्र.प्र.
तृतीय	नीता गोसाईं, पर्यवेक्षक	सुशील कुमार, ले.प. सुजीत कुमार साहनी, आं.प्र.प्र.	—	चंद्र प्रकाश, व.ले.प.	मधुबाला जेटली, आशुलिपिक	धीरेन्द्र किशोर, स.ले.प.अ. प्रभाकर श्रीवास्तव, स.ले.प.अ. जी.सी. श्रीवास्तव, व.ले.प. हरीओम, व.ले.प. सुनील कुमार, एम.टी.एस.	अखिलेश कुमार, आं.प्र.प्र.

राजभाषा हिन्दी पत्रिका संधान के प्रवेशांक के विमोचन की झलकियाँ



दीप प्रज्जवलित करते प्रधान निदेशक श्री राजकुमार



दीप प्रज्जवलित करते महालेखाकार श्री सौरभ नारायण



दीप प्रज्जवलित करते श्री सोमनाथ चांदेल, अध्यक्ष नराकार



संधान विमोचन



राजभाषा हिन्दी पत्रिका संधान के प्रवेशांक के विमोचन की झलकियाँ



संधान सम्पादक मण्डल



संधान रचनाकार/लेखक मण्डल



‘ऑडिट भवन’ प्रांगण में स्वतंत्रता दिवस की कुछ झलकियाँ



ध्वजारोहण करते प्रधान महालेखाकार श्री जयन्त सिन्हा व प्रधान निदेशक श्री राजकुमार



कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ में हिन्दी पखवाड़ा मनाये जाने के कुछ दृश्य



प्रधान निदेशक श्री राजकुमार



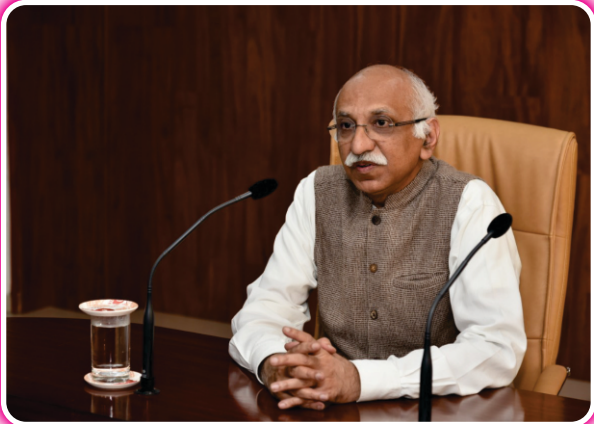
निदेशक श्री सुशील श्रीवास्तव



कार्यालय महालेखाकार (आ. एवं रा. ले. प.) लखनऊ में हिन्दी पखवाड़ा मनाये जाने के कुछ दृश्य



वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ



महालेखाकार श्री सौरभ नारायन की विदाई के कुछ दृश्य



कार्यालय डाक एवं दूरसंचार लेखापरीक्षा में हिन्दी पखवाड़ा के कुछ दृश्य



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) II, शाखा कार्यालय लखनऊ द्वारा आयोजित पेंशन एवं भविष्य निधि अदालत के कुछ दृश्य



ए.जी.यू.पी. हॉकी टीम की विभागीय खेलकूद के क्षेत्र में उपलब्धियाँ



अखिल भारतीय (आई.ए. & ए.डी.) हॉकी प्रतियोगिता ट्रॉफी के साथ



उत्तर क्षेत्रिय (आई.ए. & ए.डी.) हॉकी प्रतियोगिता ट्रॉफी के साथ



आशीष मिश्रा, व.ले.प. (गोलकीपर)



चंदन सिंह, व.ले.प. (डिफेंडर)



अभिषेक सिंह, व.ले.प. (डिफेंडर)



श्रीमति आभा पाण्डेय, स.ले.प.अ. (मास्टर टी.टी. वेटेरन्स ट्रॉफी के साथ)



हर्षित जायसवाल, व.ले.प. (टेबिल टेनिस)



वीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, व.ले.प. (टेबिल टेनिस)

श्रद्धा सुमन

एक दिन महात्मा बुद्ध अपने शिष्यों के साथ बैठे हुए थे। एक महिला विलाप करते हुए उनके पास पहुंची। उसकी गोद में उसके मृत पुत्र का शव था। उस महिला ने महात्मा बुद्ध से अनुरोध किया, महाराज, आप तो सर्वशक्तिमान हैं। साक्षात् भगवान हैं। मैं अपने एकमात्र पुत्र की मृत्यु के कारण अकेली हो गई हूँ। आप इसे जीवित कर दें, तो मेरा जीवन इसे पालने-पोसने में बीत जाएगा। बुद्ध ने महिला से कहा, तुम किसी ऐसे घर की एक मुट्ठी मिट्टी लेकर आओ, जिस घर का कोई व्यक्ति काल का शिकार न हुआ हो। उस मिट्टी के बल पर मैं तुम्हारे पुत्र को जीवित कर दूंगा।

महिला नगर की तरफ भागी। रास्ते में जो भी घर मिलता, वहाँ जाती और मृत्यु के बारे में पूछती। नगर का पूरा चक्कर लगाने के बाद भी उसे एक भी ऐसा घर नहीं मिला, जिसका कोई भी व्यक्ति कभी नहीं मरा हो। वह निराश होकर फिर महात्मा बुद्ध के पास पहुंची और बोली, महात्मन, मुझे तो एक भी घर ऐसा नहीं मिला, जिसका कोई व्यक्ति न मरा हो।

बुद्ध ने तब उसे उपदेश दिया, इस चराचर जगत में मृत्यु अनिवार्य है। इससे कोई नहीं बचा है। ये शब्द सुनते ही उस महिला को बोध हो गया और पुत्र की मृत्यु पर उसने संतोष कर लिया।

यद्यपि मृत्यु जीवन का अंतिम एवं अवश्यम्भावी सत्य है तथापि किसी का भी असमय जीवन-यात्रा छोड़कर चले जाना उनके परिजनों, सम्बन्धियों एवं मित्रों के लिए बड़ा ही कष्टप्रद होता है। कुछ इसी तरह हमारे संधान परिवार के दो सदस्य श्रीमती रंजना आनंद एवं श्री अजय कुमार श्रीवास्तव असमय ही इहलोक छोड़कर चले गये। संधान परिवार ईश्वर से प्रार्थना करता है कि ईश्वर ब्रह्मलीन आत्माओं को सर्वोत्तम गति प्रदान करे और उनके परिजनों को इस दुःख से उबरने में सम्बल प्रदान करे।

नाम	- श्रीमती रंजना आनन्द
पद	- स्टेनोग्राफर ग्रेड-I
कार्यालय	- प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ
जन्म तिथि	- 21 अगस्त 1971
मूल निवास	- लखनऊ
शिक्षा	- बी.एस.सी.
नियुक्ति की तिथि	- 18 दिसम्बर 1995
परलोक गमन तिथि	- 13 नवम्बर 2019
आयु	- 48 वर्ष
अवसान का कारण	- कैंसर के कारण



नाम	- श्री अजय कुमार श्रीवास्तव
पद	- एम.टी.एस.
कार्यालय	- प्रधान महालेखाकार(आ.एवं रा.ले.प.) लखनऊ
जन्म तिथि	- 15 मार्च 1968
मूल निवास	- करेली, प्रयागराज
शिक्षा	- इंटरमीडिएट
नियुक्ति की तिथि	- 17 दिसम्बर 2013
परलोक गमन तिथि	- 03 नवम्बर 2019
आयु	- 52 वर्ष
अवसान का कारण	- हृदयगति रुक जाने के कारण

आधुनिक लखनऊ



रामकृष्ण मठ, निशाला नगर, लखनऊ



गोमती रीवर फ्रंट, लखनऊ

अवधी लखनऊ



रेलवे स्टेशन चारबाग, लखनऊ



छोटा इमामबाड़ा, लखनऊ